ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला—हिन्दी-ग्रन्थाङ्क ५३

पचपन का फेर

श्रीमती विमला लूथरा एम० ए०

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

विषय-क्रम

पचपनका फेर

पचपनका फेर

[अण्डर सेक्रेटरी हरगोपाल अपने दफ्तरमें बैठे फाइलें देख रहे हैं। कमरा अन्य सरकारी दफ्तरोकी भाँति सीधेसादे ढंगसे सजा है। बड़ी-सी मेज पर फाइलोके ढेर, कलमदान, टेलीफोन, एशट्रे, पानीका गिलास इत्यादि रखे हैं। सामने दो-चार कुरसियाँ आनेजाने वालोके लिए पड़ी हैं। दीवार पर एक कैलेण्डर टँगा है जिस पर उनके मंत्रीजीकी तसवीर है। हरगोपाल बड़ी गम्भीरतासे किसी फाइलको पढनेमें व्यस्त हैं। एक क्लर्क हाथमें एक-दो फाइलें लिये आता है।]

हरगोपाल—और फाइलें ले आये? पहले ही क्या मेरे पास कम थी? इन्हे ही निबटानेमें पाँच छः दिन लग जायँगे। [मुसकरा कर] तुम्हारा जो नया अफसर आयगा उसके लिए भी तो कुछ काम बाकी रहने दो।

क्लर्क— साहब, यह फाइल तो बहुत आवश्यक है।

हरगोपाल—तो क्या हुआ? ऐसी भी क्या आवश्यक होगी—आठ दस दिन इधर-उधर होनेसे कोई पहाड थोडे ही टूट पडेगा!

क्लर्क— नही, साहब, यह मामला बहुत टेढा है। बिहार सरकार वाला झगडा और किसीकी समझमे नही आयगा। आप तो इसको कई सालसे देख रहे है, आपको तो फाइलका एक-एक शब्द याद है। किसी दूसरेके बसका रोग नही।

हरगोपाल—[चापलूसीसे प्रसन्न हो कर] अच्छा! तो यह रख जाओ, किन्तु इसके बाद और कोई फाइल मत ले आना। जरा सुपरिण्टेण्डेण्ट साहबको मेरे पास भेजना।

क्लर्क— [जाते हुए] बहुत अच्छा, साहब।

हरगोपाल--[स्वत.] फाइले भेजे चले जाते है। देखूँगा इतना काम और कौन सँभालता है! [टेलीफोन बजता है] हैलो हाँ, कमला भई, क्षमा करो, भूल गया अभी लो। [घंटी बजाता है। चपरासी आता है] देखो, तुम साइकिल ले कर जल्दी जाओ। बच्चूकी छुट्टी हो गई होगी, उसे स्कूलसे ले कर घर पहुँचा दो और फिर राशन लाना। और कोई काम हो तो बीबीजीसे पूछ लेना। [टेलीफोन पर] बस अभी पहुँच जायगा पॉच मिनिटमे मै क्या कर रहा हूँ? अरे, वही जो रोज करता हूँ हाँ, अरजी लिख दी है कि रिटायर हो जानेके बाद भी दो महीने तक सरकारी बँगलेमे रहनेकी आज्ञा दी जाय नियम यही है कि दो महीनेसे अधिक मकान नही रखा जा सकता हॉ, तीस साल काम तो किया है, पर सरकार कोई इसके लिए अपनेको आभारी थोडे ही समझती है .

[बालकराम आता है। उसे बैठनेके लिए सकेत करके फोन पर] तुम कह रही थी न कि दरियागजमे तुम्हारे किसी रिश्तेदारका बडा-सा घर है, उसका कुछ हिस्सा मिल जायगा—दरियागज अच्छी जगह है शोर? रहते-रहते आदत पड जायगी . कठिन ही दिखाई देता है खैर, घर पर आ कर बात करूँगा। [टेलीफोन रख देता है। बालकरामसे] कहो, मेरे कागज तैयार हुए कि नही अभी? लगवा लेते मेरा अँगूठा पेनशनके कागजो पर तो इस कामसे भी निश्चिन्त हो जाता।

बालकराम—साहब, उसी काममे लगा हूँ। आपकी पेनशनको कम्युट कराने के कागज तो टाइप हो गये है। प्रोवीडेण्ट फण्डका ड्राफ्ट भी तैयार हो रहा है। अब सर्विसका प्रमाणपत्र मिल जाय तो सारी फाइल आपके पास ले आऊँ।

हरगोपाल—तुम्हे क्या हो गया, बालकराम? तुम तो इतने सुस्त कभी नही थे।

बालकराम—मैं तो भरसक प्रयत्न कर रहा हूँ। अपनी ओरसे तो सब ठीक-ठाक करके भेजा था, पर अकाउण्टेण्ट जनरलके दफ्तरने तीन हफ्ते फाइल दबाये रखनेके बाद अब यह पूछा है कि आपने जो १६३८ मे पदरह दिनकी छुट्टी ली थी वह १४ सितबरकी दोपहरसे पहले शुरू हुई थी या बाद मे ?

हरगोपाल—यह अकाउण्टेण्ट जनरल तो बडी ही मुसीबत है ! अच्छा, जितनी जल्दी हो सके इस कामको पूरा करो।

बालकराम—साहब, आपके कामकी तो मुझे सबसे अधिक चिन्ता रहती है।

हरगोपाल—कहाँ रहती है ! मै यह फाइले देख रहा हूँ—बहुत कच्चा काम करके भेज रहे है दफ्तर वाले।

बालकराम—[**मुँह लटका कर**] क्या बताऊँ, साहब, जबसे आपके जानेका सुना है, काममें जरा भी मन नही लगता। और मुझे ही क्या, सारे दफ्तरमें ऐसी उदासी छा गई है कि क्या कहे ! जिसे देखो हाथ पर हाथ धरे बैठा है। आपने हमे जिस प्रेम और सहानुभूतिसे काम सिखाया है, क्या हम उसे कभी भूल सकते हैं ?

हरगोपाल—मैंने तो केवल अपना कर्त्तव्य पालन किया है। तुम लोगोको अपने बच्चोकी तरह सिखाया हे। प्यार भी किया, उत्साह भी बढाया, डॉटा भी।

बालकराम—इसी लिए तो आपके जानेका इतना खेद हो रहा है, साहब. आप जैसा अफसर हमे कहाँ मिलेगा ! हमारी सरकार भी कमाल करती है—जो योग्य अफसर हो उसे काम करनेका ज्यादा मौका देना चाहिए। लेकिन नही, सरकार कुछ समझती ही नही, अब देखिए न, आपके कामसे एक साल और लाभ उठा सकती थी, परन्तु माना ही नही।

हरगोपाल—क्या लेता एक साल और नौकरी कर के ? अच्छा है इस चुगली, चापलूसी, पक्षपातके वातावरणसे दूर हो जाऊँगा।

तीस साल सबेरेसे शाम तक फाइल ही फाइल—इनसान थक भी तो जाता है।

बालकराम—यह तो ठीक है,लेकिन सारा दिन कामके बिना भी तो आपका मन नही लगेगा।

हरगोपाल—नही, मै तो अब आराम करना चाहता हूँ। शहरसे दूर एक छोटी सी झोपडी डाल लेगे। कुछ जमीन, कुछ गाय-बकरी, कुछ धर्मचर्चा रहेगी।

बालकराम—इतना काम करनेके बाद आपको विश्राम करनेका पूरा हक है। लेकिन हमारा क्या होगा? हमे तो अपने लिए घबराहट हो रही है। न जाने आपकी जगह कौन आयगा, कैसा स्वभाव होगा?

[एक बाईस-तेईस वर्षका युवक, मुँहमें पाइप लगाये कमरेके अन्दर बेधडक चला आता है। फिर बालकरामको देखकर जरा रुक जाता है।]

हरगोपाल—आइए, आइए, कपूर साहब।

कपूर— नही, आप काममे व्यस्त मालूम पडते है। मै फिर किसी समय आ जाऊँगा।

हरगोपाल—नही, कोई ऐसा जरूरी काम नही। आप बैठिए तो। कहिए, कैसे आना हुआ?

[बालकराम आदर भावसे उठकर जरा पीछे हटकर खड़ा हो जाता है]

कपूर— ऐसे ही, सवेरेसे यह सड़ी हुई फाइले देखते-देखते थक गया। सोचा आपसे ही जरा गपशप रहे।

हरगोपाल—ओहो, यह बात है!

कपूर— बात तो यही है। दो साल हो गये अडर सेक्रेटरी बने हुए। बुरे फँसे है, दोस्त। न ठीक तरहसे खाना न पीना। किसी कामके लिए अवकाश ही नही मिलता। तुम कैसे खुशकिस्मत हो। रिटायर हो रहे हो, मजे करोगे। घर बैठे पेनशन पाओगे। और हम? काश, मै भी रिटायर हो सकता!

हरगोपाल—घबराओ नही, धीरे-धीरे काममे मन लगने लगेगा ।

कपूर— भगवान् करे कि ऐसा हो ! मै तो मर जाऊँगा फाइले देखते देखते ।

हरगोपाल—नही, ऐसा नही होता । शुरूमे थोडी घबराहट होती है, फिर तो ऐसा मन लगता है कि जैसे फाइलोके बिना गति ही न हो । दस दिनकी छुट्टी भी लो तो जीवन शून्य मालूम देता है ।

कपूर— नही, जी, हमसे यह न होगा । मै तो प्रयत्न कर रहा हूँ कि किसी राजदूतके साथ विदेश चला जाऊँ । वहाँ बडे मजे रहेगे । वहाँका काम ही मिलना-मिलाना, इकट्ठे बैठ कर खाना-पीना और ऐश करना है । आशीर्वाद दो कि मेरी इच्छा पूर्ण हो । [घड़ी देखकर] अरे, साढे चार हो गये ! मै चलता हूँ ।

हरगोपाल—ऐसी भी क्या जल्दी ! चले जाना ।

कपूर— नही, मैने क्लबमे किसीके साथ टेनिस खेलनेका वादा कर रखा है । कल मिलूँगा, अभी तो आप है न चार पाँच दिन ? [जाता है ।]

हरगोपाल—[बालकरामसे] देखा, बालकराम, इन नये अफसरोको ?

बालकराम—मै तो डर रहा हूँ कि ऐसे ही कोई साहब आपकी जगह आ गये तो हमारी क्या गति होगी ।

हरगोपाल—तुम्हारी तो जो गति होगी सो होगी ही, सरकारकी क्या होगी ? कलको यह लडका डिप्टी सेक्रेटरी बन जायगा । क्या तो यह नोट लिखेगा और क्या दफ्तर चलायगा !

बालकराम—साहब, पुराने अफसरोका काम करनेका तथा काम लेनेका ढग और था ।

हरगोपाल—मुझे याद है, हमने काम किस तरह किया और कैसे सीखा, वह जमाना और था । एक दिन दफ्तरसे जाने लगे । साढे छ बज चुके थे । साहबने बुला कर कहा । "मिस्टर हरगोपाल,

यह कुछ काम आ गया है। इसे तुम्ही निवटा सकते हो। कल सवेरे तक पूरा मिलना चाहिए।" साहव तो कह कर चले गये, लेकिन मैंने न खाना खाया, न सोया। रात भर अकेले दफ्तरमे वैठ कर, उसी कमरेमे जहाँ अव तुम वैठते हो, काम पूरा किया। सुवह नौ वजे साहवकी मेज पर पहुँचा दिया तो साँस ली।

वालकराम—क्या कहने, साहव, आप के!

हरगोपाल—मै तो अव भी यही कहूँगा कि नौकरीमे दो वाते वडी ज़रूरी है—स्वामिभक्ति और सच्चरित्रता। इनके विना काम आगे चल ही नही सकता। खैर, हमने तो अच्छा-वुरा जैसा हुआ निवटा दिया। अव तुम जानो और तुम्हारे नये साहव जानें।

वालकराम—नये साहव तो जव आएँगे देखा जायगा, पहले आपका काम तो करके ले आऊँ। अभी तो आप ठहरेंगे न थोडी देर?

हरगोपाल—[हँसते हुए] हाँ, मुझे कोई टेनिस या पोलो खेलने थोडे ही जाना हे।

[वालकराम जाता है। परदा गिरता है।]

[हरगोपालके घरका गोल कमरा। हरगोपाल कमरेमें वड़े अन्यमनस्क भावसे इधर-उधर चक्कर लगा रहे हैं। अलमारी खोल कर एक किताब निकालते हैं। उसके पन्ने इधर-उधर उलटते हैं, फिर उसको ठपसे वन्द कर देते हैं। दूसरी निकालते हैं, उसकी भी यही गति होती है। फिर अगीठी पर रखी तसवीरें उठा कर इधर-उधर रखते हैं। फूलदानमेंसे फूल निकाल कर खिड़कीके वाहर फेंकते हैं। उनके हरएक काममें वेचैनी झलकती है। वैठ कर अखवार पढ़नेकी कोशिश करते हैं। फिर अखवार भी जोरसे पटक देते हैं। खिसियाने होकर आवाज देते हैं।]

हरगोपाल—कमला! यह गध कैसी आ रही है?

कमला— [अन्दरसे] नही तो, गध तो कोई नही।

हरगोपाल—किसी चीजके जलनेकी बू है।

कमला— नारायणने अगीठी जलानेके लिए कागज डाला होगा, या दाल का पानी उबल रहा होगा ।

हरगोपाल—और वह रायसिह कहाँ है ? मेरे जूतो पर अभी तक पालिश नही हुई ।

कमला— उसे बाजार भेजा है । अभी लौट कर पालिश कर देगा । आपको कोई दफ्तर थोडे ही जाना है ।

हरगोपाल—[चिढ़कर] दफ्तर नही जाना है तो जूतो पर पालिश भी नही होगी, धोबी कपडे भी नही लायगा, कमीजोमे बटन भी नही लगेगे ? तो भगवे कपडे पहन कर फिरा करूँ ?

कमला— [कमरेमे प्रवेश करते हुए] क्या हो गया है आपको ? जरा जरा सी बात पर खीझने लगे है । तुम्ही बताओ नौकरको सुबह सब्जी लेने न भेजूँ तो खाना समय पर कैसे तैयार होगा ?

हरगोपाल—जैसे पहले होता था ।

कमला— पहले तो चपरासी सुबह आता था, साइकिल पर सब चीजे ला देता था । अब रायसिहको पैदल जाना पडता है, तो देर तो लगेगी ही ।

हरगोपाल—और सामान बाँधना तो अभी तक शुरू ही नही किया ।

कमला— आप कुछ तय भी तो करे, कहाँ जाना है, क्या करना है ?

हरगोपाल—जाना कहाँ है ! यह भी भली कही ! अभी तो दरियागज ही जायँगे, और कहाँ ?

कमला— इतने चिडचिडे क्यो हो गये है आप ?

हरगोपाल—तुम तो बात-बात मे ताने देती हो ।

कमला— ताने कौन देता है ? मैने तो सरल स्वभाव पूछा कि कहाँ जाना है । उसी हिसाबसे सामान बाँधू । आप कह रहे थे न कि देहरादूनके पास, पर्वतोकी छाया तले झोपडी बना कर रहेगे । वरना दरियागजके लिए सामान बाँधनेकी क्या जरूरत है ।

अभी चपरासी ठेला ले कर आता है तो बहुत-सी चीजे लदवा कर भेज देती हूँ। उसमे देर ही क्या लगेगी !

हरगोपाल—[झल्ला कर] चपरासी भी तो नही आया अभी तक।

कमला— इसमें मेरा तो कोई दोष नही।

[हरगोपाल अपने लडकेको आवाज देता है]

हरगोपाल—जीत ! ओ जीत ! जरा इधर आना। जल्दी ! [जीत आता है] पड़ोस वालोके यहाँसे जाकर जरा टेलीफोन कर के पूछो कि चपरासी दफ्तरसे चला कि नही अभी ?

जीत— अच्छा, पिताजी। [जाता है]

हरगोपाल—कैसे कृतघ्न है ये लोग ! मैंने ही इसे नौकर करवाया, फिर इसके ऊपर वालोको छोड कर इसे पक्का करवाया। कहता था कि जब तक जीऊँगा आपका दास बन कर रहूँगा।

कमला— पिछले छ सालोसे सारे दिन यही पडा रहता था। चाय, पानी, खाना, कपडा—अपना ही नही, अपने बच्चोका भी, आज बच्चा बीमार है तो कल लडकीका गौना। अब कहेगा साहब क्या बताऊँ, छुट्टी ही नही मिलती।

हरगोपाल—उस सुपरिण्टेण्डेण्टके बच्चेको तो देखो, कितनी चापलूसी करता था साहब, आपका गुलाम हूँ, जिस समय कहियेगा हाजिर हो जाऊँगा। देख लो, दो महीने हो गये, कभी सूरत दिखाई दी उसकी ?

[जीत आता है]

जीत— पिताजी, उनका टेलीफोन खराब है।

कमला— क्या मुसीबत है ! मुए टेलीफोन भी उठा कर ले गये। पेन्शन क्या मिली आफत आई। भला पूछो, यहाँ टेलीफोन लगा रहनेसे किसीको क्या तकलीफ थी ? अब मुँह उठा कर दरवाजे को घूर घूर कर देखो कि कब चपरासी आय और काम शुरू हो।

[हरगोपालके दो पुराने मित्र, दोनो पेन्शन पानेवाले, प्रवेश करते हैं । कमला नमस्कार करके चुपकेसे अन्दर चली जाती है ।]

हरगोपाल—आइए, आइए, चोपडा साहब, नन्दा साहब ।

नन्दा— घूमने निकले थे । सोचा अब तो तुम भी हमारी बिरादरीमे सम्मिलित हो गये, जरा देखते चले, क्या हो रहा है ।

चोपड़ा— कहो, क्या कर रहे हो ?

हरगोपाल— मक्खियाँ मार रहा हूँ—और क्या करना है !

नन्दा— हमने तो आपसे पहले ही कहा था कि अपना एक नियम बना लो, प्रात काल सैर करने चला करो—हमारी उमरके लोगो के लिए बहुत जरूरी है । प्रात कालके वायु सेवनसे एक तो पाचन-शक्ति ठीक रहती है, दूसरे आत्माको भी शान्ति मिलती है ।

हरगोपाल—कहते तो आप शायद ठीक ही होगे, परन्तु सैर भी कितनी देर करूँ—आठ वजे नही, नौ वजे घर आ जाऊँगा । फिर भी सारा दिन पड़ा है ।

चोपडा— किसी समाजके सदस्य बन जाओ । नहा धोकर गये, दो घटे वहाँ बिता आये । अपने कई साथी मिल जाते हैं । जरा गपशप चलती है । दिल वहला रहता है ।

नन्दा— मै तो पुस्तकालय चला जाता हूँ । कुछ पत्र-पत्रिकाएँ देखी, कुछ तसवीरे । जमानेकी नब्ज पर जैसे हाथ रखा हो—दुनिया किस चाल चलती है ।

हरगोपाल— जमानेकी चालका पता तो घर बैठे ही लग जाता है—निजी अनुभवसे । पेन्शन कम्यूट अभी तक नही हुई । दफ्तर वाले कागज अर्थ-विभागके पास वताते है, और वहाँ वाले दफ्तर के पास । बात वहीकी वही है ।

चोपड़ा— मेरी रायमे तो पेन्शन कम्यूट कराओ ही नही । मैंने क्या लिया पेन्शन कम्यूट कराके—तीस हजार मिला था, दस हज़ार

व्यापारमे लगाया, दस हजारके शेयर खरीद लिये । न इसमेंसे कुछ मिला, न उसमेंसे कुछ वसूल हुआ, बल्कि रुपया ही फँस गया । मै तो कहता हूँ वही सात हजार रुपये अच्छे रहे जो लड़कीकी शादीमे खर्च किये । कम्यूट न कराता तो पाँच सौ रुपये महीने तो आते ।

नन्दा— पेन्शन पाना भी जीवनमे नई उलझनें पैदा कर देता है । तुमको जबरदस्ती यह महसूस कराया जाता है कि अब तुम बूढे और बेकार हो गये, चाहे तुम कितने ही हृष्टपुष्ट क्यों न हो ।

चोपड़ा— मै तो समझता हूँ यह असूल ही गलत है कि मनुष्य पचपन साल की उमरमें रिटायर हो । हाई कोर्टके जजोंको देखो—साठ पैंसठ साल तक काम करते है ।

हरगोपाल—[मुसकराकर] और हमारे नेता तो इस उमर पर आ कर शादी करते हैं । साठ सत्तर सालके हो कर मन्त्री बनते है । रिटायर होते तो इनको न कभी किसीने देखा न सुना ।

नन्दा— ऐसे तो बहुतसे लोग है । डाक्टरोंको ही देख लो । जवानको कोई पूछता नही । कहते है, अनाड़ी है, अनुभव नहीं, चाहे वह कितना ही योग्य क्यों न हो ।

नन्दा— लेकिन उसमे एक बडी अडचन यह है कि एक आध सालके लिए ही नौकरी मिलती है। इतने कम समयमे इसान अपनी योग्यताका प्रमाण भी क्या दे!

हरगोपाल—पेन्शन पाना क्या इतना बुरा समझा जाता है? तब तो, भैया, मै नही करूँगा ऐसी नौकरी।

चोपड़ा— तो करोगे क्या?

हरगोपाल—देहरादूनके जगलोमे एक बहुत सुन्दर स्थान है। एक ओर नाला बहता है, दूसरी ओर बरफीले पानीका झरना है। एक बार उधर घूमने गये थे तो देखा था। तबसे मनमे यही विचार आता है कि वही एक झोपडी डाल लू ँ। कितनी शान्ति मिलती है प्रकृतिकी गोदमे! न किसीका लेना न देना।

चोपड़ा— कल्पना तो अच्छी है, लेकिन ऐसा होना कठिन है।

हरगोपाल—क्या कठिनाई है?

चोपड़ा— तुम्हारा खाना कौन बनायेगा?

हरगोपाल—मेरी पत्नी।

नन्दा— और झरनेको कब तक देखा करोगे? एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चौथे दिन चाहोगे उसमे डूब मरूँ।

[चोपड़ा और नन्दा हँसते है]

हरगोपाल—तुम लोग तो इसे मजाक समझ रहे हो।

चोपडा— मजाक ही तो है यह। अरे भाई, न अखबार मिलेगा, न डाकिया आयगा। कोई हनीमून मनाने तो जा नही रहे हो कि सारे दिन पत्नीकी सूरत देख कर काट दोगे।

नन्दा— स्वय तो मुसीबत उठाओगे ही—पत्नीको क्यो साथमे घसीटते हो?

चोपडा— दोनो बैठ कर सारे दिन लडाई झगडा करोगे। यह बहकी बहकी बाते छोड दो। कोई कामकी बात करो। शहरसे दूर ही रहना चाहते हो तो पाँच दस एकड जमीन खरीद लो।

खेती करो, हल चलाओ। स्वय भी सुख भोगोगे, देशको भी लाभ होगा। आजकल जितना पैसा जमीन पैदा कर रही है और किसी काममे नही मिलेगा। मै सच कहता हूँ कि यदि मैंने अपना पैसा इधर-उधर न फँसाया होता तो मै तो खेती ही करता।

नन्दा— यह वानप्रस्थ आश्रमकी बेकार जिन्दगीसे तो हजार दर्जे अच्छा रहेगा।

हरगोपाल—नही, भई, यह मुझसे न होगा। सारा दिन आकाशकी ओर देखते रहो कि कब वर्षा हो और कब खेतोमे बीज उगे। मैंने तो निश्चय कर लिया है कि एकान्तमे बैठ कर गीता, वेद तथा उपनिषदोका अध्ययन करूँगा।

चोपड़ा— [घडी देख कर व्यंग्यसे] अच्छा तो, सन्यासीजी, प्रणाम। अब हमे आज्ञा दीजिए।

हरगोपाल—बैठो न, जल्दी क्या है ?

चोपड़ा— भई, अभी स्नान आदि करना है, फिर समाज जाऊँगा।

नन्दा— आजके अखबारमे एक विज्ञापन है। मै तो उसके लिए अरजी भेजना चाहता हूँ। छोटे-छोटे बच्चे है, मै तो सन्यासका विचार भी नही कर सकता।

[दोनो उठकर चल देते है]

हरगोपाल—कमला ! कमला !

कमला— [अन्दर ही से] सामान बाँध रही हूँ।

हरगोपाल—थोडी देरके लिए छोड दो। जरा इधर आओ, जरूरी काम है।

[कमला आती है]

कमला— कहो, अब क्या सूझी ?

हरगोपाल—देखो, व्यग्य करना छोड दो। मेरी सलाह है कि तुम लोग तो चलो दरियागज और मै जाता हूँ देहरादून। वहाँ दस पदरह

दिन इधर-उधर देखभाल कर जगहका प्रबंध करके तुम लोगो को बुला लूँगा ।

कमला— तो उषाको होस्टलमें भेज दे ?

हरगोपाल—हाँ ।

कमला— और जीत ?

हरगोपाल—वह भी बोर्डिंगहाऊसमे ही रहेगा ।

कमला— देख लो, मुझे तो इसमे कोई आपत्ति नही । दोनोको होस्टलमे भेजनेसे दो ढाई सौ रुपये खर्च होगे । सौ दो सौ अपने लिए भी चाहिए । देख लो, जैसे उचित समझो ।

हरगोपाल—[**चौकन्ने होकर**] दो ढाई सौ ! दो ढाई सौ तो मुश्किलसे पेन्शन ही मिलेगी ।

कमला— तो जैसे आप कहिए ।

[**हरगोपाल गहरी सोचमें पड़ जाते हैं**]

हरगोपाल—कहूँ क्या ! कुछ समझमे नही आता ।

कमला— [**बाहर किसीके पैरोकी आवाज सुन कर**] डाकिया मालूम देता है, देखे क्या लाया है ?

[**बाहर जाती है और दो पत्र हाथ में लिये लौट आती है**]

हरगोपाल—किसके है ?

कमला— दोनो आप हीके नाम है । एक तो सरकारी मालूम देता है । [देती है ।]

हरगोपाल—[**सरकारी खत खोल कर पढ़ता है । फिर दाँत पीसता है**] कैसे उल्लू इकट्ठे हुए है इस दफ्तर मे ! काश, मै इस समय वहाँ होता, सबको सीधा करके रख देता ।

कमला— क्यो, अब क्या फरमाते है ?

हरगोपाल—कहते है अपना सिर ! पूछते है कि मैंने नौकरी किस दिन शुरू की थी ? अरे, काठके उल्लुओ, मेरी सर्विस-बुक देखो, अपना रिकार्ड देखो । कुछ नही तो पचास जगह लिखा होगा

परतु कौन मेज परसे उठ कर अलमारीमे ढूँढे ? घण्टी बजाई, टाईपिस्टको बुलाया और चिट्ठी लिखवा दी। उनका क्या बिगडता है, मुझे पेन्शन मिले न मिले।

कमला— आप किसी दिन स्वय ही जाकर यह काम करवाइए।

हरगोपाल—यह भी करके देखूँगा। [**दूसरा लिफाफा उठाता है। बड़े ध्यानसे उसे देखता है।**]

कमला— किसका है ?

हरगोपाल—इस लिखाईको तो मै नही पहचानता।

[**पत्र खोलता है। पढ़ने लगता है। चेहरे पर हलकी-सी मुसकराहट आती है, जो धीरे-धीरे खुशीका रूप धारण कर लेती है। उत्तेजित होकर कुरसी पर से उठ बैठता है।**]

कमला— क्या है ?

हरगोपाल—बस, छोड़ दो सब पैकिग वैकिग। तुम मेरे कपडे ठीक करो।

कमला— [**उत्तेजित होकर**] क्या खुशखबरी है ?

हरगोपाल—इससे बडी खुशखबरी और क्या हो सकती है ! यह देखो, यह नार्मल हाई स्कूल तथा कालिजकी मैनेजिंग कमेटीकी ओर से बुलावा आया है, कहते है "हमको एक मैनेजरकी जरूरत है। हमे पता चला है कि आप अभी अभी रिटायर हुए है। हमारे बडे सौभाग्यकी बात होगी यदि आप हमारे स्कूलके लिए काम करना स्वीकार कर सके। हमे खेद है कि हम आप को उतना वेतन न दे सकेंगे जितना आपकी उच्च स्थितिके आदमीको मिलना चाहिए। फिर भी हम आशा करते है कि आप बच्चोकी पढाईकी ओर ध्यान करते हुए इसे दानकर्म समझ कर ही ढाई सौ रुपये स्वीकार कर लेगे। यदि आपको यह स्वीकार हो तो आप दिसम्बरकी पहली. . " [**कमलासे**] सुना ! दिसम्बरकी पहली, अर्थात् कलसे काम शुरू कर दूँ।

कमला— [**खुशीसे**] यह तो बडी अच्छी बात है।

हरगोपाल—[उत्तेजित होकर] देखा! ऐसे देता है भगवान्। लो अब करो तैयारी। रायसिंह, ओ रायसिंह, जल्दी जूतो पर पालिश करो। जीत, इधर आओ।

जीत— [दूरसे] आया, पिताजी।

हरगोपाल—जल्दी आओ, अपनी साइकिल लेकर, जरूरी काम है। [कमला से] निकालो मेरी पैंट, धोबीके पास ले जाए इस्तिरीके लिए। नारायण, अरे नारायण, खानेमे कितनी देर है? [कमलासे] तुम जरा जाओ न, जल्दी तैयार करवा दो।

कमला— इतने उतावले क्यो हो रहे हो? कल तक सब ठीक हो जायगा।

हरगोपाल—देखो, अब बैठ कर बाते बनानेका समय नही है। [उसकी बॉह पकड कर उठा देता है] तुम जाओ, मेरे कपडे निकालो, अच्छी सी कमीज निकालना—वह नीली पापलेनकी। मुझे अभी जाना होगा।

[उसे दरवाजेके अन्दर धकेल देता है। चपरासी आता है]

चपरासी— साहब, ठेला लाया हूँ।

हरगोपाल—[घुडक कर] जहन्नुममे जाओ तुम और तुम्हारा ठेला सवेरेसे कहाँ था?

चपरासी— बात यह है कि

हरगोपाल—चुप रहो! सब जानता हूँ मै। तुम नमकहराम हो। जाओ भाग जाओ यहाँसे। कलसे हमारा नया चपरासी आयगा।

उषा— [शोर सुनकर आते हुए] पापा, मै पढनेकी कोशिश कर रही हूँ परसो मेरी परीक्षा है और आप .

हरगोपाल—परीक्षा तो परसो है। मुझे तो कल जाना है।

उषा— कहाँ जाना है कल?

हरगोपाल—यह बाते पीछे होती रहेगी। उषा, तुम जल्दीसे मेरा पेन और पैडका कागज लाओ। मुझे स्वीकृति लिख कर भेजनी है।

[उषा कोनेमें रखी मेज़ पर कागज़ कलम ढूँढती है]

हरगोपाल--जल्दी करो । इस घरमे कभी कोई चीज वक्त पर नही मिलती ।

[उषा कागज लाती है । हरगोपाल बैठ कर लिखना शुरू करता है । परदा गिरता है ।]

लाइन-क्लीअर

•

लाइन-क्लीअर

[रेलवे स्टेशनका दृश्य। यात्रियो, कुलियो तथा अपने इष्टमित्रोको बिदा करने आनेवाले अन्य लोगोके हावभावोसे पता लग रहा है कि गाड़ी छूटने ही वाली है। दाईं ओर पुलका एक भाग और सीढियाँ दिखाई दे रही है।

एक अधेड पुरुष, जो एक मैला-सा नीला कोट पहने है, जिसके पीतलके बटनोपर पालिश नहीं है, एक ओरसे आता है। उसके पीछे कुछ युवक है, जो उसके विद्यार्थी मालूम होते है। रगमचके बीचमें आकर वह रुक जाता है और सबको चुप करनेके लिए अपना हाथ ऊपर उठाता है।]

शिक्षक— रेलवे कानूनकी किताबमे जो कुछ लिखा होता है, उससे वास्तविकताका कोई सबध नही होता—रेलगाडियोको चलानेके लिए कुछ और ही अनुभवोकी आवश्यकता होती है। मैं आज जानबूझ कर तुम लोगोको यहाँ लाया हूँ, ताकि इस समय, जब कई गाडियाँ आती और छूटती है, तुम्हे कुछ मतलबकी बाते बता सकूँ। जब तुम लोग परीक्षा पास करनेके बाद टिकट चेकर, बुकिग क्लर्क और असिस्टेण्ट स्टेशन-मास्टर बनोगे, तव यह बाते तुम्हारे काम आयेँगी। अच्छा, अब आँखे खोल कर देखते जाओ कि क्या होता है।

[एक यात्री बेतहाशा भागता हुआ आता है। उसके पीछे कुली सामान उठाये हुए है। कुलीको इस बातकी कोई चिन्ता नहीं कि यात्रीको गाड़ी मिलती है या नहीं। देरसे आनेवाले यात्रियोकी तरह यह आदमी भी जगहकी तलाशमें एक डिब्बेसे दूसरे डिब्बेमें झाँकता हुआ चक्कर काटता

है। जब उसे अपनी जगह नही मिलती, तो वह रिजरवेशन क्लर्कके पास जाता है, जो एक सूचीको देख रहा था।]

यात्री— [बेदम होकर] क्या आप बता सकते है कि मेरी सीट किस डिब्बेमे है ? मेरा नाम एस० डी० मित्रा है। कानपुरके लिए दूसरे दर्जेमें मेरी सीट रिज़र्व है।

रिजरवेशन क्लर्क—मित्रा ? अभी देखता हूँ। हाँ, आपका नाम था तो, लेकिन क्योकि आप गाडी छूटनेके समयसे दस मिनट पहले नही आये, इसलिए आपकी सीट दूसरेको दे दी गई।

मित्रा— लेकिन मेरी सीट तो रिज़र्व थी।

रिजरवेशन क्लर्क—इसी लिए तो दस मिनिट पहले तक हमने उसे खाली रखा।

मित्रा— ओह ! लेकिन मुझे जरूरी जाना है। आप मुझे कोई दूसरी सीट नही दे सकते ?

रिजरवेशन क्लर्क—यह तो बहुत मुश्किल है, सब डिब्बे भरे हुए हैं। [अपनी हथेली किसी मतलबसे खुजाते हुए] फिर भी मै कोशिश कर सकता हूँ।

मित्रा— बडी मेहरबानी।

[मित्रा अपनी जेबमें हाथ डालकर कुछ निकालता है और रेलवेके प्रतिनिधिको चुपकेसे दे देता है—इस काररवाईका जिक्र न तो टाइमटेबिल में है, न रेलवे कानूनकी किताबमे।]

रिजरवेशन क्लर्क—अच्छा, मेरे साथ आइए।

[दोनो सामनेवाले डिब्बेके पास जाते है।]

रिजरवेशन क्लर्क—[दरवाज़ा खोलते हुए] आप अपना सामान अदर रखिए—नीचे वाली तीन नम्बरकी सीट है आपकी।

मित्रा— आपका बहुत बहुत शुक्रिया।

[क्लर्क चाबीसे रिजरवेशन लेबिलका खाना खोलकर एक नाम काट देता है , और उसकी जगह मित्राका नाम लिख देता है ।]

रिजरवेशन क्लर्क—अच्छा, जनाब, अब आप आरामसे बैठिए । [जाता है]

शिक्षक— गाडी प्लेटफार्म पर आनेसे पहले ही रिजरवेशन लेबिल पर कुछ नकली नाम लिख दिये जाते है, जैसे, मिस्टर और मिसेज राय, मिस्टर दत्त, मिस्टर सिंह । लेकिन कभी पूरा नाम नही लिखना चाहिए । नही तो कभी-न-कभी जरूर पकडे जाओगे । प्रसिद्ध व्यक्तियोके नाम भी नही लिखने चाहिए, जैसे, अगर कही ओकारनाथ ठाकुर, या मोरारजी देसाई या मैथिलीशरण गुप्तका नाम लिख दिया, तो मुसीबत मे पड जाओगे । समझे ?

[स्टेशनका घटा घनघना कर बजता है; इजन सीटी देता है; एक नवयुवक गार्ड बाईं ओरसे आता है और जनाने डिब्बेके सामने खड़े होकर हरी झंडी हिलाता है ।]

शिक्षक— कुछ देखा तुम लोगोने ?

एक विद्यार्थी—क्या ?

शिक्षक— गार्ड जनाने डिब्बेके सामने खडा है । युवक हमेशा यही करते है, लडके तो लडके ही रहेगे । जब ये लोग बुड्ढे हो जायँगे, तो अपने ही या बरफ वाले डिब्बेसे सीटी बजा दिया करेंगे और वहीसे झडी हिला देंगे ।

[इजन फिर सीटी बजाता है और गाडी धीरे-धीरे चलने लगती है । एक आदमी भागता हुआ आता है और गाड़ीकी दिशामें अपना हाथ तेजीसे हिलाता है ।]

यात्री— क्या गाडी छूट गई ?

शिक्षक— मालूम तो यही देता है । दूसरी गाडी छ पैंतीस पर जाती है ।

यात्री— दूसरी गाडीसे क्या मतलब—मै इसी गाडीसे उतरा था। उस गधे कुलीने मेरा ट्रक इसी गाडीमे ही छोड दिया। अब कैसे मिले ?

शिक्षक— गाडी ?

यात्री— नही, मेरा ट्रक।

शिक्षक— यह तो मेल गाडी थी—मुझे तो आशा नही अब आपको अपना ट्रक मिल सकेगा। क्या उसमे कोई कीमती चीज थी ?

यात्री— अरे, उसमे न जाने क्या क्या था।

शिक्षक— खैर, वह लास्ट प्रोपर्टी आफिसमे दाखिल हो जायगा—तब आप उसे वापस ले सकते है।

यात्री— मुझे इसकी आशा नही—क्योकि मुझे मालूम है रेलवे विभाग मे कैसी लूटखसोट मचती है।

शिक्षक— अगर ट्रकमे कुछ ज्यादा कीमती माल नही है, तो उसके लिए इतनी तकलीफ उठाना बेकार है।

यात्री— उसमे कुछ रुपये भी थे—सौ रुपये।

शिक्षक— अगर एक हजार रुपयेका मामला होता तो स्टेशन सुपरिण्टेण्डेण्टसे कह सुन कर रास्तेके किसी छोटे स्टेशन पर गाडीको रोका जा सकता था।

यात्री— [भिन्ना कर] बात यह है कि मुझे अब ठीकसे याद आ गया, उसमे करीब पाच छ सौ रुपये और कुछ जरूरी कागजात थे।

शिक्षक— [यात्रीको ठिकाने पर लाकर] आपके नुकसानका मुझे दु ख है। मैं आपकी सहायता करनेको तैयार हूँ, लेकिन [धीरेसे उसके कानमें] वह स्टेशन सुपरिटे डेण्ट बडा बेईमान है।

यात्री— बीस रुपयेमे काम हो जायगा ?

शिक्षक— [सिर हिलाते हुए] अजी, बीस रुपयेकी तरफ तो वह देखेगा भी नही।

यात्री— तीस चालीस पचास ?

शिक्षक— नही, जी। इतनेसे क्या होता है। अच्छा, मुझे क्षमा कीजिए, अब मुझे दूसरे प्लेटफार्म पर जाना है—ड्यूटी है मेरी। मै तो यही चाहता था कि आपके कुछ काम आ सकूँ—खैर। [जानेके लिए उद्यत होता है।]

यात्री— अच्छा, मै सौ रुपये दे सकता हूँ। [शिक्षक सिर हिलाता है।] अच्छा, तो बस डेढ सौ पर बात तय रही।

शिक्षक— अगर आप दो सौ दे सके, तो मै और ज्यादाके लिए नही कहूँगा। गाडी दूर निकली जा रही है।

यात्री— यह सरासर बेईमानी है—खैर, मै दो सौ देनेको तैयार हूँ। मुझे ट्रक कब मिलेगा ?

शिक्षक— आप रिफ्रेशमेण्ट रूममे बैठिए। मै जल्दी ही सब बात तय करके आता हूँ।

यात्री— अच्छी बात है।

[यात्री रिफ्रेशमेण्ट रूमकी तरफ जाता है और उस दिनको कोसता जाता है, जिस दिन इतनी रफ्तारसे चलने वाले इजनका आविष्कार हुआ था।]

शिक्षक— [अपने विद्यार्थियोसे] देखा, किस सफाईसे काम किया।

सब विद्यार्थी– क्या बात है ! लेकिन उस यात्रीको ट्रक वापस कैसे मिलेगा ?

शिक्षक— इस गाडीको अगले स्टेशन पर दूसरी गाडीको निकल जाने के लिए आधे घटे रुकना पडेगा। भगतराम, तुम ए एस. एम से जाकर कहो कि टेलीफोन करके अगले स्टेशनसे वह ट्रक ट्रौलीसे वापस मँगवा ले।

भगतराम— वह अपना हिस्सा नही माँगेगा ?

शिक्षक— तुम भी निरे बुद्धू हो ! वर्षो पहले ऐसी बातोका इन्तजाम हो चुका है। रेलवेमे हमेशासे ऐसा होता आया है। हाँ, तुम सबको चाय मिलेगी।

सब विद्यार्थी——सिर्फ चाय ही ?

शिक्षक—— अभी तुम लोग इन तरकीबोको सीख ही रहे हो—यह न भूलो। जब तुम खुद काम करने लगोगे, तो रेल कर्मचारियोकी सब सुविधाएँ तुम्हे स्वय मिल जायँगी।

[भगतराम जाता है।]

रामप्रताप—— जिस खोये हुए सामानका कोई दावा नही करता, उसका क्या होता है ?

शिक्षक—— हम लोग उसकी अच्छी तरह जाच-पडताल करते है। अगर उसमे कोई खानेपीनेकी चीज होती है, तो हम लोग उसका उचित उपयोग करते है। और अगर कोई कामकी चीज होती है, तो आगे कुछ करनेसे पहले दो या तीन बार अच्छी तरह सोचते-समझते है। [आँख मारकर वह अपना मतलब स्पष्ट करता है] उसमेंसे कुछ चीजे तो हम लास्ट प्रोपर्टी आफिसको भेज देते है—वह भी कभी-कभी। लेकिन एक बातका हम विशेष तौर पर ध्यान रखते है—किसी सामानका ताला नही टूटना चाहिए, जब तक कि वह ताले खराब ही न हो और ठीकसे वद न किये गये हो।

भीमसेन—— मेरे एक सबन्धी जो कुछ वर्ष पहले रेलवेकी नौकरीसे रिटायर हुए है, मुझसे कह रहे थे कि अगर टोकरीमेसे आम निकालने हो, तो वजन पूरा करनेके लिए उनकी जगह टोकरीमे पत्थर भर देने चाहिए।

शिक्षक—— यह पुराना तरीका अब वदल गया है। अबहम वजन पूरा नही करते, क्योकि लोगोकी शिकायत है कि पत्थरोसे बाकी बचे हुए आम भी ख़राव हो जाते हैं। जनताकी इच्छाका लिहाज तो करना ही चाहिए।

भीमसेन—— ठीक है।

दीनदयाल—— सीलवद कनस्तरोमेंसे घी कैसे निकाला जाता है ?

शिक्षक— सन् १९३९ तक तो यह तरीका था कि सील तोडकर घी निकाल लिया और फिर सील लगा दी। लेकिन महायुद्धके दिनोमे काम इतना बढ गया कि कोई जल्दीका तरीका खोजना पडा। आजकल जो तरीका चालू है, वह तो यह है कि एक खुदरे चाकूको कनस्तरके जोड पर मारकर जितना घी चाहो निकाल लो।

भीमसेन— कीलसे सूराख करके क्यो नही निकाला जाता ?

शिक्षक— क्योकि तब यह नही मालूम होगा कि कनस्तर गिर बडनेसे टूटा है। अच्छा, अब इस विषयको यही समाप्त कर देना चाहिए। १४ डाऊन गाडी अब आती ही होगी। अब मै तुम्हे दिखाऊँगा कि टिकट कैसे चेक किये जाते है। किसी और दिन मैं तुम्हे मालगोदाम ले जाकर दिखाऊँगा कि फरनीचर गाडी पर कैसे लादा जाता है, ताकि छोटे-छोटे सफरमें भी वह टूटफूट कर बराबर हो जाय। यह हाल उन लोगोंके फरनीचरका होता है, जो उसकी हिफाजतके लिए कुछ नही देते। मै तुम्हे रेलवेके गणितके बारेमे भी बताऊँगा।

[जोरसे घटी बजती है।]

गाडी पिछले स्टेशनसे छूट गई है। चलो, पुलकी सीढियोंके पास चल कर खडे हो।

[सब विद्यार्थी शिक्षकके पीछे-पीछे चलते है। इस प्लेटफार्म पर सुनसान हो जाता है, क्योकि गाडी दूसरे प्लेटफार्म पर आ रही है। पुल के नीचे एक कुली सामान ढोनेके ठेलेके ऊपर पडा सो रहा है। प्लेटफार्म पर उलटा-सीधा सामान पडा है। कुछ कुली बीडी पी रहे है और लापरवाही से सामानकी ओर देख लेते है; उनकी बलासे—सामान खो जाए। एक क़ुली सामान सिर पर उठा कर आता है और एक कीमती थरमस बोतल को ज़मीन पर गिरा देता है। दर्शक उसके टूटनेकी आवाज़से चौंक जाते है, लेकिन कुली बडे इतमीनानसे उसे उठा कर आगे चल देता है—जैसे

कुछ हुआ ही नही। दो बौखलाये हुए यात्री एक दूसरेको रोक कर पूछते हैं।]

पहला यात्री—बम्बई एक्सप्रेस कितनी लेट आ रही है ?

दूसरा यात्री—मुझे नही मालूम। आपको मालूम है कि भटिंडा मेल आ गई या नही ?

पहला यात्री—एक गाडी तो अभी छूटी है। कही वही तो भटिंडा मेल नही थी ?

[दोनो परेशान होकर चले जाते हैं।]

शिक्षक— तुम्हारी रेलवे कानूनकी किताबमे लिखा है कि सफर पूरा होने पर यात्रियोको अपने टिकट स्टेशन पर दे देने चाहिए। यह तुम्हारी खुशकिस्मती ही होगी अगर हर यात्री चुपचाप तुम्हे अपना-अपना टिकट देता हुआ चला जाय। भगतराम, अगर तुम इस ड्यूटी पर हो, तो क्या करोगे ?

भगतराम— मैं इस पुलकी सीढियो पर खडा होकर या हममेंसे दो खडे होकर यात्रियोसे टिकट लेते जायँगे।

शिक्षक— [अपना सिर हिलाते हुए] तुम तो बुद्धू हो। दूसरा टिकट चेकर बेकार तुम्हारे साथ फँसा रहेगा। फिर गाडीके दूसरी ओर उतरने वाले बगैर टिकटके यात्रियोको पकडनेके लिए भी उसकी जरूरत पडेगी। भीमसेन, तुम क्या करोगे ?

भीमसेन— मै सीढियोके ऊपरवाले सिरे पर खडा होकर एक दरवाज़ा बद कर लूँगा और दूसरे पर खुद मजबूतीसे जम जाऊँगा।

शिक्षक— ठीक है, इसके बाद ?

भीमसेन— तब मैं एक-एक करके लोगोको बाहर निकलने दूँगा और उनके टिकट होशियारीसे देखता रहूँगा।

शिक्षक— सब नये रगरूट यही गलती करते है। रेलवे और अन्य सरकारी दफ्तरोमे जो लोग अपना काम इतने ध्यानसे करते है, उनके बाल जल्दी ही सफेद हो जाते है और पेंशनके समयसे

वर्षो पहले ही वह मर जाते है। सफलताका भेद यह है कि ज्यादातर काम तो सरसरी तौर पर आगे बढाया और कभी-कभी वह सरगर्मी दिखाई कि पता लगे वाकईमे तुम बडी मेहनतसे काम करते हो।

दीनदयाल— लेकिन अगर किसी गलत आदमी पर हाथ पड जाय—तो ?

शिक्षक— मै वही बतानेवाला था। यह तजरबेसे ही आता है, जो तुम्हे कोई भी नही सिखा सकता। मै भी तुम्हे वही बाते बता सकता हूँ, जिनसे तुम्हे कुछ सहायता मिलेगी। जब यात्रियोकी भीड होती है, तो लोग कई तरहके टिकट तुम्हे देकर चले जाते है। पिछले कुम्भ मेलेमे हमे तकरीबन एक हजार वजन तौलनेकी मशीनके टिकट मिले, जिन पर लिखा होता है ' 'तुम्हारे मित्र अच्छे होगे', 'तुम्हारी यात्रा अच्छी रहेगी', 'अत भला तो सब भला' या 'ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है'। करीब तीन हजार तो पुराने प्लेटफार्म टिकट थे और सैकडो टिकट गाजियाबादसे दिल्ली या ओखलासे निजामुद्दीन या पूनासे बम्बईके थे। सात सौ विजिटिग कार्ड और करीब इतने ही सिगरेटके कूपन थे

[घटी जोरसे बजती है।]

लो अब गाड़ी आ ही गई। अब तक मैने जो कुछ कहा, उसका सबूत भी मिल जायगा। अब तुम यहाँ खडे होकर टिकट चेक करो, और जैसा भी टिकट तुम्हे दिया जाय ले लो। लेकिन जैसे ही मै इशारा करूँ, उस आदमीको पकड लेना।

[गाडी आनेकी आवाज सुन कर कुली और खोनचे वाले इधरउधरसे आकर प्लेटफार्म पर खडे हो जाते है।]

शिक्षक— भीमसेन और दीनदयाल, तुम दोनो वहाँ खडे हो जाओ— मै तुम्हारे पीछे खडा रहूँगा।

[गाड़ी आती है। पुलके ऊपर भीड़की धकापेल होने लगती है।]

दीनदयाल— [एक यात्री से] आपका टिकट कहाँ है ?

यात्री— यह लीजिए।

भीमसेन— [दूसरे यात्री से] टिकट दिखाइए, जनाब।

यात्री— यह लीजिए, जनाब।

शिक्षक— [दोनोके कानमें फुसफुसा कर] अरे, इतने लम्बे-लम्बे वाक्य बोलकर क्यो दम फुला रहे हो! सिर्फ 'टिकट ?' 'टिकट?' कहो।

दीनदयाल— अच्छी बात है। हम उस आदमीसे टिकट माँगते है—वह दुबलापतला और गरीब मालूम होता है; उसने जरूर टिकट नही खरीदा होगा।

शिक्षक— यह बात नही है। अगर वह बेईमान होता, तो मोटाताजा और अमीर होता। गरीब लोग हमेशा टिकट खरीद लेते और केवल मध्यवर्गीय और अमीर वर्गके लोग ही टिकट खरीदनेकी तकलीफ नही उठाते।

भीमसेन— [भीडमे एक आदमीकी ओर संकेत करते हुए] वह आदमी कुछ गड़बड़ मालूम होता है—मुझसे निगाह बचा रहा है। उसका टिकट जरूर देखना चाहिए।

शिक्षक— [मुसकराते हुए] तुम चाहो तो देख लो—लेकिन इसके पास टिकट है। तुमसे वह इसलिए निगाह नही मिला रहा है, क्योकि वह भेगा है [हँसी]। वह, उस आदमीको देखो, जो कुलियो पर बिगड रहा है और अपने ढेर सारे सामानकी ओर इशारा कर रहा है। मै इन धोखेबाजोको अच्छी तरह पहचानता हूँ। भीमसेन, जरा उसकी मिजाजपुरसी तो करना जाकर।

भीमसेन— [उसके पास जाकर] टिकट ?

यात्री— [अकड कर] क्या ? तुम हो कौन ?

भीमसेन— मैं कोई भी हूँ—आप टिकट दिखाइए ।

यात्री— क्या तुम टिकट चेकर हो यहाँ ?

भीमसेन— [साहसपूर्वक] हाँ ।

यात्री— तुमने अपनी वरदी क्यो नही पहन रखी है ? क्या नाम है तुम्हारा ?

[कुछ गडबड देखकर शिक्षक जल्दीसे उन दोनोके पास पहुँचता है ।]

शिक्षक— इसके नाम और वरदीसे आपको कोई मतलब नही । जब आपसे टिकट माँगा जा , तो आपको दे देना चाहिए ।

यात्री— यह भी खूब रहा ! पर, जनाव, आप कौन है ?

शिक्षक— मै एक रेलवे कर्मचारी हूँ ।

यात्री— आप भी अपनी पूरी वरदीमे नही है ! आपका नाम क्या है ?

शिक्षक— जनाब, मुझे धोखा देनेकी कोशिश मत कीजिए । टिकट दिखाइए, नही तो मै पुलिसको बुलाता हूँ ।

यात्री— पुलिसको बुलाना बेकार रहेगा ।

शिक्षक— [अपनी हथेली खुजाते हुए] अब आपने कायदेकी बात की है ।

यात्री— मेरे पास टिकट नही है । पर देखिए—इससे शायद आपका काम चल जाय [वह अपनी जेबसे पीतलका रेलवेके बड़े अफसरोका पास निकाल कर दिखाता है, जिसे देखकर शिक्षक और भीमसेन—दोनो चकरा जाते हैं ।] और आप, जो कुछ भी आपका नाम हो, कल सुवह साढे दस बजे मेरे दफ्तरमे हाज़िर हो जाइएगा ।

शिक्षक— [मरी सी आवाजमें] बहुत अच्छा, हुजूर ।

[रेलवेका वह अफसर शानके साथ वहाँसे चल देता है । शिक्षक गश खाकर वहीं ढेर हो जाता है । विद्यार्थी जल्दीसे उसे उठा कर ठेले पर डाल कर बाहर ले जाते है—तभी परदा गिरता है ।]

नीम हकीम

•

नीम हकीम

[अमरनाथके सोनेका कमरा—अच्छा बडा और विधिपूर्वक सुसज्जित—प्रातःकालके सूर्यका प्रकाश खिडकीके पर्दोमेंसे छनकर आ रहा है। कोई साढे आठ बजे होगे। अमरनाथ पलंग पर लेटा कुछ बेचैनीसे करवटें ले रहा है। पास रखी मेज पर 'रीडिंग-लैम्प', एक दो कितावें, सिगरेटका डिब्बा तथा चायके जूठे बर्तन पडे हैं। सुनीति, उसकी धर्मपत्नी आती है]

सुनीति— आप अभी तक लेटे हुए हैं—दफ्तर नही जाना है क्या ?

अमरनाथ— तबीयत कुछ सुस्त है—सोचता हूँ आज आराम ही किया जाय।

सुनीति— रात भर ताश खेलोगे तो तबीयत सुस्त होगी ही।

अमरनाथ— पिछले शनिवारका किस्सा तुम्हे अभी तक भूला नही—कई बार माफी भी माँग चुका हूँ।

सुनीति— मुझे आपके ब्रिज खेलनेमे तो कोई आपत्ति नही—यही, घण्टा—दो घण्टे किन्तु रात-रात भर जगना हो तो..

अमरनाथ— फिर वही कहानी—तुम तो समझती हो कि चालीस वर्षका क्या हुआ बूढा हो गया—नौ बजे सो जाना चाहिए, सवेरे उठकर सैर करने जाना चाहिए।

सुनीति— अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना कोई पाप है क्या ?

अमरनाथ— किन्तु कुछ खराबी भी तो हो—तुम तो ऐसे लेक्चर देती हो जैसे कई वर्षोका रोगी हूँ।

सुनीति— [पलंग पर बैठकर पुचकारती हुई] शुभ बोलो शुभ—[करुण स्वरमें]—मेरी बलासे—आजसे कुछ न कहूँगी . केवल जब छोटे-छोटे बच्चोको देखती हूँ तो [आँखोमें बडे-बड़े आँसू टपकनेकी राह देखते है।]

अमरनाथ— [प्रेमसे उसका हाथ थपक कर] तुम चिन्ता काहेको करती हो, मुझे स्वय इन चीजोका ध्यान रहता है—चाहूँ तो अब भी दफ्तर जा सकता हूँ, और शर्त लगाकर कहता हूँ कि आठ घण्टे काम कर लेनेके बाद भी कुछ न हो।

सुनीति— ईश्वर करे आप सदा आरोग्य रहे—आपकी तबीयत जरा भी सुस्त होती है तो मन घबराने लगता है—नही-नही, तुम दफ्तर नही जाओ. ..आराम करो. . .आज भी और कल भी

अमरनाथ— अरे, शाम तक ठीक हो जाऊँगा। जरा दो चार घण्टे चैन से सोना मिल जाय।

सुनीति— तो मै आपका नाश्ता यही लाती हूँ।

अमरनाथ— क्या कहने, नेकी और पूछ-पूछ।

सुनीति— और हजामतका पानी ?

अमरनाथ— नाश्तेके बाद।

सुनीति— बच्चे ढाई बजे तक स्कूलसे नही लौटते—तुम नाश्ता करके दो तीन घण्टे चुपचाप सो लो।

अमरनाथ— बहुत अच्छा .

[सुनीति जाती है, अमरनाथ सिगरेट सुलगाता है—किताब उठा कर पढ़ने लगता है—आधा मिनट भी न पढ़ पाया होगा कि माँ आती है।]

माँ— क्यो बेटा बुखार है क्या ?

अमरनाथ— नही तो, ऐसे ही जरा आराम करनेको मन चाहता है .

माँ— [माथे पर हाथ लगाती फिर गालो पर] कुछ गर्म मालूम होता है।

अमरनाथ— नही तो।

माँ— और तुम सिगरेट पिये जा रहे हो. . .न मालूम तुम लोगोको क्या हो गया है, अपने स्वास्थ्यका तनिक भी ध्यान नही करते।

अमरनाथ— माँ, आज सवेरेसे यह पहला सिगरेट है—दिन भरमे दो-तीन पी लेनेसे तो कोई हानि नही होती।

मॉ-- न होती हो—परन्तु कोई लाभ भी तो नही होता—यदि धुएँको बाहर ही निकालना है तो पहले अन्दर ही काहेको ले जाओ कुछ खाया भी है सुबहसे या सिगरेट पर ही जोर है ?

अमरनाथ— अभी लाती है सुनीति ।

मॉ— तुम मानोगे तो नही परन्तु तुम्हारी तकलीफकी जड तो यही है—दिन भर काम करना और खानेमे सुस्ती ।

अमरनाथ— अभी दूध पीऊँगा–मॉ ।

मॉ— एक प्याले दूधसे क्या होगा ? आधा तो उसमे पानी मिला होता है अरे बेटा, तुम्हारे जैसे काम करने वालोको तो खुराक अच्छी खानी चाहिए मेरा बस चले तो तुम्हे सुबह उठते ही पराठा, मक्खन और आधा सेर दही खिलाऊँ ।

अमरनाथ— कलसे ऐसा ही करूँगा

मॉ— किन्तु जब तक खाओगे नही दफ्तर कैसे जाओगे ? मैंने सुनीतिसे कहा है तुम्हे हलवा बनाकर देवे ।

अमरनाथ— उससे तो पेट खराब होगा

[घटी बजती है]

मॉ— जरा देखना तो कौन है ?

[मॉ आती है और अमरनाथके दोस्त द्वारकादासको साथ लिये आती है]

द्वारकादास— साइकलमे पञ्चर था मैंने सोचा आज तुम्हारी मोटरकी सैर करे .

मॉ— तुम लोगोको चलना तो जैसे भूल ही गया हो—तभी नित्य नई बीमारियाँ आती हैं—[अमरनाथसे] तुम्हारे पिताजी तो गर्मी-सर्दीमे दफ्तर पैदल ही जाते थे—आजकल भी प्रात उठकर पहला काम उनका घूमने जाना है. .भगवान् न करे . सुना कभी उनको बीमार, इस उम्रमे भी ।

अमरनाथ— मैं भी सोमवारसे रोज सबेरे घूमने जाऊँगा—माँ, सुनीति को कहो न हमारे दोनोंके लिए नाश्ता लावे ..

[माँ जाती है]

द्वारकादास— धन्यवाद ! मैं तो अभी-अभी नाश्ता करके निकला हूँ कबसे तकलीफ है ?

अमरनाथ— कुछ नही . शरीरमे थकावट-सी मालूम देती है एक आध दिन आराम करनेसे ठीक हो जाऊँगा ।

द्वारकादास— चाहे तुमको विश्वास नही फिर भी मेरी रायमे डाक्टरको दिखा लेना ही अच्छा है, क्या मालूम किस नामुराद बीमारी के लक्षण हो !

अमरनाथ— मैं इतनी जल्द घबरानेवाला नही हूँ—मेरी सेहत अच्छी-भली है और किसी ऐसी-वैसी बीमारीका कोई डर नही ।

द्वारकादास— यह तो तुम्हारा विचार है—सम्भव है X-Ray से किसी और गडबड का पता चले—

अमरनाथ— खैर, आज तो आराम करने दो, कल देखा जायगा .

द्वारकादास — नही भइया, क्या मालूम .कल तक बात का बतगड ही न बन जाय—कहाँ है तुम्हारा टेलीफोन ? डाक्टरको पूछूँ ?

अमरनाथ— नही-नही डाक्टर-वाक्टरको मत बुलाओ ।

द्वारकादास— वाह ! खूब कहा—तुम क्या समझते हो, तुम बीमार पडे हो और मैं डाक्टरको दिखाये बिना चला जाऊँ—यह अच्छी मित्रता है ! कहाँ है टेलीफोन ? डाक्टर लाल को कहता हूँ कि अभी आवे

अमरनाथ— अच्छा भई—तुम्हारी इच्छा, किन्तु उसे बुलाकर क्या करोगे ? टेलीफोन पर ही बात कर लो न

द्वारकादास— जब तक वह देखेगा नही बतायगा कैसे ?

[द्वारकादास जाता है--अमरनाथ लम्बी श्वास लेता है, छाती ठोकता है, नब्ज देखता है, जबान निकाल कर देखनेका यत्न करता है--कुछ चिढ़ सा जाता है ..सुनीति नाश्ता लिये आती है]

सुनीति-- [ट्रेको मेज पर रखते हुए] कैसी है तबीयत ?

अमरनाथ-- अभी तक तो एक मिनट भर चैन नही मिला

सुनीति-- यह खा लो--फिर चुपसे पड जाओ

अमरनाथ-- यही करूँगा

[फिर घण्टी बजती है]

[सुनीति जाती है और अपने मामा तथा मामीको साथ लिये आती है]

मामा-- [घबराये हुए] क्यो अमरनाथ--क्या तकलीफ है ?

अमरनाथ-- [नमस्कार करते हुए] नही--कुछ नही--जरा सी थकान है आप बैठिए न, मामीजी ?

मामी-- [अमरनाथके माथे पर हाथ रखकर] पसीना आ रहा है--और कुछ ठण्डा मालूम देता है--कम्बल ओढ लो बेटा .

अमरनाथ-- अभी लेता हूँ, [मामासे] आप तो अगले हफ्ते आनेवाले थे न ।

मामा-- क्या तुम्हे मेरा पत्र नही मिला--[अमरनाथ सिर हिलाता है] मैं भी कहूँ कि कुछ खास ही कारण होगा, जो तुम स्टेशन पर नही पहुँचे परन्तु मैंने डाकखानेमे अपने हाथसे डाला था लखनऊ बहुत तपने लगा था, हमने सोचा एक हफ्ता तुम्ही लोगोके पास और रह लेंगे--

अमरनाथ-- यह तो आपकी कृपा है ।

मामा-- [नाश्ते की ट्रेको सकेत कर] क्या तुम बुखारमे भी यह सब कुछ खाओगे ?

अमरनाथ-- एक प्याला दूध ही तो है ? और फिर मुझे बुखार तो नही ।

मामा-- मैंने अभी कल ही एक स्वास्थ्य-पत्रिकामे पढा है कि अब

डाक्टर लोग दूधको रोगीके लिए आवश्यक नही समझते; क्योंकि उससे पेटमे हवा पैदा होती है और अतडियोमे गाँठ बँध जानेका भय रहता है .

अमरनाथ—— सच ? मेरा तो विचार है कि सब डाक्टर दूधके बारेमे एकमत है कि इसके बराबर और कोई चीज नही—चाहे बीमारीमे हो चाहे सेहतमे ..

मामा—— वह पुरानी बाते है—यह पत्रिका मैने आते-आते लखनऊ स्टेशन पर ही खरीदी थी—अमरीकी पत्रिका है । झूठ नही कह सकते दिखाऊँ तुम्हे [मामीसे] जरा मेरे बैगमेसे निकलना

अमरनाथ—— अच्छा तो एक आध सन्तरा खा लेता हूँ——

मामी—— सन्तरा—नही कदापि नही—बहुत ठण्डा होता है—तुम्हे उबली हुई तरकारीके सिवाय और कुछ नही खाना चाहिए

मामा—— यदि मुझसे पूछो तो

अमरनाथ—— [चिढ कर] जी नही ।

मामा—— [अनसुनी करके] मेरी रायमे तो सब खाना बन्द कर देना चाहिए

अमरनाथ—— बिल्कुल बन्द ?

मामा—— हाँ, बिल्कुल—खानेसे बोझ होता है और शुद्ध रक्तके प्रवाह मे रुकावट होती है—खाली पेट सबसे अच्छा ।

[द्वारकादास अन्दर आता है——अमरनाथ उसका अपने मामा व मामीसे परिचय कराता है——नमस्कार होते हैं]

द्वारकादास——अभी आयगा डाक्टर—अच्छा गुणी आदमी है और मैंने दफ्तरसे छुट्टी ले ली है । तुम्हे अकेला छोड जाने को दिल नही मानता

अमरनाथ—— मेरे पास काफी लोग है—तुम काहेको अपना दिन बरबाद करोगे. .

द्वारकादास—— दफ्तरमे ऐसा कौन-सा जरूरी काम है जो कल तक नही रुक सकता—हम काम करते है अपनी खुशीके लिए न कि जान मारने को

अमरनाथ—— [हताश होकर] जैसी तुम्हारी इच्छा कोई जरूरी तो न था

द्वारकादास—— यदि तुम्हारी तबीयत अच्छी हुई तो दोपहरको ही चला जाऊँगा ।

मामा—— सुनीति, यह नाश्तेकी ट्रे उठवा दो—आज इन्हे कुछ न खाना चाहिए

अमरनाथ—— एकाध टीस्टसे क्या होता है ?

मामा—— न, न, कदापि नही

सुनीति—— मामाजी, यदि इनकी तबीयत चाहती है तो थोडा-सा खा लेनेमे क्या हर्ज हे ?

मामा—— मुझे तुम लोगोंके यह नये तरीके पसन्द नही कि रोगी जो चाहे खाने दो उसका तो जी चाहेगा "आइसक्रीम" खाऊँ—कवाव खाऊँ—तो क्या मै खाने दूँगा नही. जब तक मै इस घरमे हूँ, यह नही होने दूँगा, और जब तक अमर बिल्कुल स्वस्थ नही हो जाता, मै कही जानेका भी नही ।

अमरनाथ—— आप सफरके बाद थके हुए होगे—जरा स्नान इत्यादि कर लीजिए ।

सुनीति—— हाँ, आइए—आपका सामान कोनेवाले कमरेमे रखवा दिया है ।

मामा—— तुम मेरी चिन्ता न करो—अमरनाथकी सेहत मुझे अपने आरामसे बहुत बढकर है । [जेबमेंसे एक बोतल निकालता है] देखो जी, तुम यह तीन गोलियाँ तो अभी खा लो . सुनीति थोडा गर्म पानी लाओ तो और मै शर्त लगाकर कहता हूँ कि आधे घण्टेके अन्दर-अन्दर अच्छे हो जाओगे ।

अमरनाथ— कैसी गोलियाँ है ये ?

मामा— यह पीछे बताऊँगा पारेको एक विशेष प्रकारसे तैयार किया गया है । सुनीति लाना गर्म पानी

अमरनाथ— गर्म पानीकी जगह चाय जो पी लूँ तो ?

मामा— [कठोरतासे] नही सुनीति लाओ ?

[सुनीतिको विवश होकर जाना पडता है]

मामा— यह गोलियाँ सदा सफल ही हुई है

मामी— किन्तु देसराज विचारेके तो सारे शरीर पर दाने-दाने निकल आये थे न !

अमरनाथ— [घबरा कर] है—क्या कहा ?

मामा— नही—कुछ नही इससे तो बल्कि यह विश्वास हो जाता है कि दवाई असर कर गई—

[सुनीति पानीका गिलास लिये जाती है]

अमरनाथ— मामाजी, गोलियोके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद—परन्तु अभी डाक्टर जो आ रहा है

मामा— मुझे इन एलोपैथिक डाक्टरो पर तनिक भी विश्वास नही इनकी अग्रेजी दवाइयाँ हम हिन्दुस्तानियोको माफिक नही आती ।

अमरनाथ— मै भी उतना ही देशभक्त हूँ, जितने आप, शायद कुछ अधिक । परन्तु मेरा यह विश्वास है कि मानव शरीर, चाहे अफ्रीकाके हब्शीका हो चाहे रूसीका, चाहे चीनी व जापानी का, चाहे अग्रेज तथा हिन्दुस्तानीका, उन्ही पाच तत्वोका बना है और बीमारीके कीटे उत्तर दक्षिण तथा पूर्व पश्चिम नही देखते ।

मामा— यह तो तुम्हारा विचार है न—यदि तुमने इन साम्राज्य-वादी देशोका इतिहास ध्यानसे पढा है तो तुम्हें मालूम होना चाहिए कि ये एलोपैथिक दवाइयाँ बाहर भेजनेका अभिप्राय

यही था कि पिछडे हुए देशोका धन अपने पास इकट्ठा किया जाय—अब जब कि हिन्दुस्तान आजाद है

अमरनाथ— [व्यग्य-मुसकराहटसे] जय हिन्द ! जय भारत !

मामा— हा, तुम नौजवानोमे ऐसा ही उत्साह होना चाहिए। लो अब खा लो यह गोलियॉ।

[अमरनाथ हथेली पर गोलियॉ रखता है—आसपास खडे मित्र-सम्वन्धियोको सम्बोधित कर, बेधडक तरीकेसे गोलियाँ निगल लेता है—मानो कोई वीर राजपूत जानकी वाजी लगाकर रणमें कूद पडे]

अमरनाथ— आह !

मामा— कुछ फर्क मालूम हुआ ?

अमरनाथ— अभी तक तो नही।

मामा— अभी देखो दो-चार मिनटमे फर्क मालूम होने लगेगा—यह हमारे प्राचीन आयुर्वेदकी सबसे उत्तम दवा है—पारेको सखियेमे मिलाकर गोबरमे जलाया जाता है। [अमरनाथ कॉप उठता है] बहुत लाभदायक है। ठीक प्रकारसे बनाई गई हो तो हर तरहके रोगको नष्ट कर देती है—इसे बनाते समय केवल एक चीज़का विशेष ध्यान रखना चाहिए—सखिया चालीस दिन तक बकरीके दूधमे भीगा रहना चाहिए नही तो रोगीको जानका खतरा रहता है।

अमरनाथ— सच ! कैसी अद्भुत चीज है—यह गोलियाँ तो ठीक प्रकार से वनी है न ?

[सुनीतिका चेहरा पीला पड़ जाता है]

मामा— निस्सन्देह। तुम्हारे लिए तो मैंने नई बोतल खोली है

अमरनाथ— [माथेका पसीना पोछकर] यदि जीता रहा तो सारी उम्र आपका आभारी रहूँगा।

द्वारकादास— [कुछ भयभीत] डाक्टर साहव नही आये अब तक .. फिरसे देखूँ ?

मामा— [उसकी बात काट कर, अमरनाथसे] नही, मुझे धन्यवाद देनेकी आवश्यकता नही, मेरा कुछ स्वभाव ही ऐसा है, मैं किसीको रोगसे पीडित नही देख सकता । जी चाहता है उसका वही अन्त कर दूँ ।

अमरनाथ— किसको, रोगी को ?

मामा— नही—पीडाको ?

अमरनाथ— [ठण्डी साँस लेकर] धन्यवाद—क्या मैं अब कुछ खा सकता हूँ ? खाली पेट सखिया खाना कभी लाभदायक नही हो सकता

मामा— इन गोलियोके बाद तीन दिन तक कुछ नही खाना । फिर हर मगलवारको आधा सेर दूधमे आधा पाव घी मिलाकर पी जाओ यह तीन महीने तक करो ।

अमरनाथ— हे भगवान् ! डाक्टर आ जाय तो शायद कुछ आराम मिले—

[घण्टी बजती है]

द्वारकादास— डाक्टर लाल होगा अभी लाता हूँ उसे ।

[जाता है और डाक्टरको बडे गर्वके साथ लाता है]

डाक्टर— [सीधा रोगीके पलगके पास जाकर] कैसी तबीयत है ?

अमरनाथ— कोई ऐसी बुरी तो नही ।

डाक्टर— जरा जबान निकालिए [अमरनाथ निकालता है] हूँ ! [सुनीतिसे] एक चम्मच मँगवा दीजिए—गला देखना चाहता हूँ ।

[देखता है]

अमरनाथ— आ-आ-आ-आ

डाक्टर— गला काफी खराब है, मैंने पहले ही यही सोचा था—आजकल कुछ हवामे ही है ।

[स्टैस्थकोप लगा कर अमरनाथकी छाती देखता है–पेट दबाता है]

सुनीति— [भर्राई हुई आवाजमें] गला ही है डाक्टर साहब या कुछ ज्यादा।

डाक्टर— नही, घबरानेकी कोई बात नही—मामूली तकलीफ है एक इन्जेक्शन देता हूँ–शाम तक अच्छे हो जायँगे।

[जेबमेंसे सिरिज निकालता है]

द्वारकादास— देखा अमर—मै ठीक कहता था न दिखा लेना अच्छा होता है [डाक्टरको सम्बोधित कर] आपकी सहायता करूँ ?

डाक्टर— हाँ, धन्यवाद और मेरी रायमे आप लोग इनके पास बैठ कर बाते न करिए। इन्हे आरामकी जरूरत है।

मामा— हम लोग तो घर हीके है। आप समझ सकते है डाक्टर साहब हमारे दिल पर क्या बीत रही है इस वक्त। हम इसे इस हालतमे अकेला कैसे छोड सकते है ?

डाक्टर— परन्तु आपके यहाँ बैठे रहनेसे रोगीको कोई लाभ तो नही होता।

मामा— कैसे नही ? हम इधर-उधरकी बाते करके उसका मन बहलायँगे।

मामी— [मामासे] जैसे डाक्टर साहब कहते है वैसे ही कीजिए न। उनको मालूम है इन्हे कैसी तकलीफ है और उसके लिए कैसा इलाज होना चाहिए ?

[अमरनाथकी माँ अन्दर आती है—इतने लोगोको इकट्ठा हुए देख कुछ घबराकर, चुप खड़ी रहती है]

मामा— बस यही जानते है यह लोग, चाहे दाँतका दर्द हो, चाहे खुजली, चाहे पैरमे मोच यह तो पेन्सिलीन ही ठूँसेगे !

अमरनाथ— डाक्टर साहबके काममे बाधा न डालिए—इनका समय बहुत

कीमती है—इनकी यह भी बडी कृपा है कि इतनी जल्दी आ गये ।

[मामाको यह वाक्य चुभते है मानो अमरनाथने उनका अनादर किया है, परन्तु जब तक डाक्टर इन्जेक्शन लगाता है—जबान बन्द ही रखते है]

डाक्टर— [सुनीतिसे] मुझे शामको खबर भेजियेगा ।

सुनीति— जी अच्छा, और खानेके लिए ?

डाक्टर— जो चीज खाना चाहे, दीजिए ।

मामा— [विस्मयसे] सच ?

डाक्टर— हाँ, जो चाहे खायँ, केवल खटाई और मिर्चका ध्यान रखियेगा ।

[घण्टी होती है]

अमरनाथ— [व्यंग्यसे] सुनीति, देखो तो अब कौन है ? मैंने किसी पब्लिक मीटिंगका एलान तो नही किया था ।

[सुनीति जाती है]

मामी— [मौका मिलते ही] गलेके लिए तो हमारा देशी इलाज सबसे अच्छा है हल्दी और प्याजकी पुलटिस बाँधो—देखो कितनी जल्दी अच्छा होता है ।

मामा— हाँ, बात तो ठीक है और फिर कितना सस्ता—न हींग लगे न फिटकरी क्या विचार है डाक्टर आपका ।

डाक्टर— क्या कहूँ साहब, आप तो मजबूर करते है । प्याज भी तो दस आने सेरके हिसाब बिकते है ।

[मामाका तीव्र जवाब सुननेसे पहले ही दरवाजा खुलता है और सुनीति और बलदेवप्रसाद, अमरनाथके दूसरे दोस्त, अन्दर आते है]

बलदेव— हमे क्या मालूम तुम इतने बीमार हो ? खबर तो की होती यह तो द्वारकादासने छुट्टीके लिए टेलीफोन किया तो हमें चिन्ता हुई ।

अमरनाथ— [चिढकर] बीमार तो नही हूँ, परन्तु हैरान हूँ कि अब तक जिन्दा कैसे हूँ और होश भी ठिकाने ही मालूम देते हैं—अरे कोई कुर्सियाँ, कोई बेञ्च वगैरह लाओ, कोई दरियाँ बिछाओ, जनताके बैठनेके लिए जगह तो बनाओ ।

बलदेव— [कटाक्ष न समझकर] गला खराब मालूम होता है तुम्हारा, आवाज भारी है ।

अमरनाथ— सुबह तो अच्छा भला था—तबसे बोलना बहुत पड रहा है ।

बलदेव— कोई दवाई खाई क्या ?

अमरनाथ— हाँ, थोडा-सा सखिया, कुछ पारा, कुछ गोबर, कुछ पेन्सिलीन कुछ बकरीके दूधका सत प्याजकी बुकनी खानेको था ।

बलदेव— न, न, प्याज मत खाना—होम्योपैथिक दवाईमे लहसुन और प्याजकी मनाही है ।

अमरनाथ— तो क्या तुम भी अपनी दवाई खिलाओगे लाओ भइया, तुम्हे भी क्यो निराश करूँ ?

बलदेव— [बोतल निकालकर] छ गोलियाँ, तीन-तीन घण्टे बाद ।

अमरनाथ— चौबीस एकदम खाकर दिनभरके लिए छुट्टी न कर दूँ ।

बलदेव— हम होम्योपैथीमे छोटी-छोटी खुराक देते है ।

मामा— एलोपैथिक डाक्टरोसे तो बहुत अक्लमन्द हो ।

डाक्टर— [तन कर] क्या कहा आपने ?

बलदेव— मै डाक्टर तो नही हूँ, परन्तु मैने होम्योपैथीकी बहुत-सी किताबे पढ रखी है—कितना आकर्षण है होम्योपैथीमे—[डाक्टरसे] यूनानी, आयुर्वेदिक तथा आप लोगोकी दवाइयाँ बहुत-सी चीजोको मिलाकर उनका सत निकालनेसे बनती है । हमलोग सोचते है कि उसे जैसे-जैसे पानीमे घोलते जाओ, उसकी ताकत बढती जाती है । एक कण, एक सेरसे ज्यादा असर करता है ।

अमरनाथ— [व्यंग्यसे] और अणु, कणसे भी अधिक—हीरोशिमाकी तबाहीका कारण अणु-बम ही तो था ।

डाक्टर— [कटाक्षसे] तो अगली लडाई होम्योपैथिक लडाई ही होगी [खिलखिला कर हँसता है] हा हा हा

अमरनाथ— [प्रभावित रूपसे] आप लोग मेरी बीमारीमे इतनी दिलचस्पी ले रहे है, इसके लिए मै आपका आभारी हूँ—परन्तु मै सुबहसे बोल-बोल कर वहुत थक गया हूँ और आराम करना चाहता हूँ । आशा है आपको इसमे कोई आपत्ति न होगी ।

बलदेव— [अमरनाथकी बातका कोई ध्यान न करके] तुम डाक्टर लोग जो चाहे कहो परन्तु जो सत्य है उसको कौन छिपा सकता है—अच्छा बताओ तुम्हारे मरीजोमेसे कितने फीसदी मौतके मुंहमे जाते है ?

डाक्टर— [कुछ विस्मित] वाह यह भी क्या सवाल है ? कुछ बदकिस्मत लोग जो हमे समय पर नही बुलाते मृत्यु-लोकको जाते ही है—परन्तु इतने तो नही होते कि डायरी रखूँ ?

अमरनाथ— [उत्तेजित हो] जरा, मेरी भी तो सुनो !

बलदेव— [कुछ परवाह न कर] डाक्टर, आप डायरी रखे चाहे न रखे, ससारको कोई फर्क नही पडता—ब्राजीलके प्रोफेसर डानसनने इस विपय पर जो आँकडे इकट्ठे किये है वह सब को मालूम है । उनका कहना है कि जितने लोग मरते है—उनमेंसे ४० प्रतिशत एलोपैथिक डाक्टरोके हाथो, २० प्रतिशत आयुर्वेदके हाथो, २० प्रतिशत यूनानियोके, १० प्रतिशत होम्योपैथोके और १० तिशत अपनी मौत मरते है ।

अमरनाथ— [तडपकर] इस हिसावसे तो मेरी मौत ९० प्रतिशत निश्चित हो गई है । सवेरे जो दवाइयाँ खायी है उ से ५० प्रतिशत तो अव तक मर चुका हूँ—वाकी मौत भी धीरे-धीरे

आती मालूम दे रही है। सुनीति, मेरी इन्शोरेन्सके सब कागज मेरी मेजके सबसे नीचे वाले खानेमे बन्द पडे है—मेरे बच्चोका ध्यान रखना माँ ।

माँ— [उसके पास जाकर] क्या कह रहे हो अमर—होश करो . शुभ बोलो । डाक्टर साहब, मेरे बच्चेको देखिये ..!

सुनीति— [अन्य लोगोसे] चलिए आप लोग सब बैठकमे चलिये—इनको आराम करने दीजिए ।

डाक्टर— [उत्तेजित हो बलदेवसे] आपको यह भी मालूम है कि जब भी किसी होम्योपैथ, वैद्य, हकीमके घरमे बीमारी आती है तो मुझे ही बुलाते है इससे क्या साबित होता है ?

अमरनाथ— इससे यह साबित होता है कि अब मुझे उठकर कुछ करना चाहिए ।

[घण्टी बजती है]

अब यह कौन है ? भगवान्के लिए उनसे कहो कि इस शोकी सीटें सब बुक हो चुकी है—अब शामको साढे छ बजेके शोमे आवे ।

[घण्टी फिर बजती है—जोरसे दरवाजेको पीटनेका शोर होता है—दरवाजा धमाकेके साथ खुलता है और बच्चे चिल्लाते हुए आते है]

सुनीति— [घडी देखकर] आज यह लोग साढे ग्यारह बजे ही आ गये !

[एक लडका और एक छोटी लडकी दौंडते हुए अन्दर घुसे आते है]

लडका— छुट्टी ! छुट्टी !! छुट्टी हो गई [ताली बजती है] हुर्रे ! हुर्रे !!

अमरनाथ— [सिर पर हाथ रखकर] हे भगवान् !

सुनीति— [विकल होकर] उनको भी स्कूल आज ही क्यो बन्द करना था

लड़का— पापा, मेरे साथ क्रिकेट खेलोगे न ..

लडकी— [बापसे लिपट कर] नही हम चिडियाघर जायँगे... है न पापा ?

[इस समय कमरे में खूब शोर है—प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी डाक्टरी बघार रहा है—मामी अपनी पुलटिस पर जोर दे रही है—मामा अपनी गोलियो पर...अमरनाथ उठ कर अलमारीके पास जाता है और कपडे निकालता है]

सुनीति— आप क्या कर रहे है ?...

अमरनाथ— मुझे चैन और आरामकी बहुत ज़रूरत है और अभी.. । इस लिए मै आफिस जा रहा हूँ—आफिस ..समझी... कुछ चैन मिल सकता है तो वही ।

हीरोइन

•

हीरोइन

[ऐलोरा फिल्म कपनीके डायरेक्टर रूपेन्द्रस्वरूपका कमरा। कमरेमें वह सब सामग्री उपस्थित है जो इतने बडे कलाकारकी सुविधाके लिए आवश्यक है। एक बडी मेज, दो तीन टेलीफोन, कुछ सचित्र फिल्मी पत्रिकाएँ, कुख नायक नायिकाओके फोटो, एक दो सुन्दर सी ऐश ट्रे इत्यादि। सामने बैठे सेक्रेटरीको कुछ लिखा रहे है। टेलीफोन बजता है। सेक्रेटरी उठा कर कानसे लगाता है, फिर उसे रूपेन्द्रस्वरूप की ओर बढाता है।]

रूपेन्द्र— कौन है ?

सेक्रेटरी— किसी लडकीकी आवाज है।

रूपेन्द्र— [टेलीफोनमें] हैलो जी, हाँ, मै ही बोल रहा हूँ, आपका शुभ नाम क्या है ? जानकी ! जानकी कौन ? . अच्छा, मुरादनगरमे मिली थी हाँ, हाँ ठीक है। तो आप इस समय कहाँ है ? वह तो हमारे स्टूडियोसे पॉच मिनिट का रास्ता है। आप आ जाइए हाँ, सीधे यही आइए। फोन रख देता है, [दूसरा टेलीफोन, जो स्टूडियोके अदर ही काम करनेवालोके लिए है, उठाता है और नबर घुमाता है।]

रूपेन्द्र— [टेलीफोनमें] मुकुलेशसे कहना जरा मेरे पास आये। [टेलीफोन रखकर सेक्रेटरीसे] बस, तुम यह लेटर टाइप करके ले आओ।

[सेक्रेटरी जाता है। मुकुलेश आता है]

रूपेन्द्र— आइए, मुकुलेश साहब। आज एक नई मुसीबत आनेवाली है।

मुकुलेश-- क्यो; क्या हुआ ?

रूपेन्द्र-- वही गडबड जो एकआध बार पहले भी कर चुका हूँ। क्या बताऊँ, कुछ समझमे नही आता। मालूम नही नशेमे था या क्या बात थी

मुकुलेश-- आखिर हुआ क्या है ?

रूपेन्द्र-- भई, अभी अभी किसी जानकीका टेलीफोन आया था। मुरादनगरसे आई है। कहती है कि पिछले महीने जब मै कुछ नये चेहरोकी खोजमे वहाँ गया था तो उससे भी भेट हुई थी और मैने कहा था कि बबई आओ तो तुम्हे अपनी किसी पिक्चरमे पार्ट दूँगा। मुझे तो इस समय कुछ भी याद नही आ रहा है।

मुकुलेश-- अब चिन्ता करनेसे क्या लाभ ? आने दीजिए। जब मुसीबत मोल ले ही ली तो उससे निबट भी लेगे।

[जानकी आती है--युवा, सुन्दर, सुडौल, आकर्षक]

रूपेन्द्र-- [कुरसीसे उछलकर] ओ हो, आप है! बहुत प्रसन्नता हुई आपसे मिलकर। कब आई आप ?

जानकी-- मै कल दोपहरको आई थी। सोचा, सबसे पहले आप हीसे मिल लूँ।

रूपेन्द्र-- यह तो आपकी बडी कृपा है। कहिए, आपके पति महाशयने तो आज्ञा दे दी ? आप कहती थी न उन्हे सिनेमासे बहुत चिढ है।

जानकी-- नही, जी, वह इतनी आसानीसे माननेवाले नही है।

रूपेन्द्र-- तो आपके साथ आये है क्या ?

जानकी-- नही, मै उनसे लडकर आई हूँ।

रूपेन्द्र-- [मुसकरा कर] यह तो बहुत अच्छा किया आपने। अब आप बिना किसी बधन व सकोचके अपना फिल्मी जीवन आरम्भ कर सकती है, वैसे भी आप सिनेमामें काम करती

तो पतिको तो कभी न कभी त्याग ही देती। आपने पहलेसे ही फैसला कर लिया—अच्छा किया, बहुत अच्छा किया। हॉ, आप इनसे मिलिए। यह है मुकुलेशचन्द्र, हमारे असिस्टेण्ट डायरेक्टर। [**मुकुलेश और जानकी परस्पर हाथ जोड़कर नमस्कार करते है।**] तो, मुकुल साहब, आप अपना काम कीजिए। शूटिंग करवा रहे थे शायद ?

मुकुलेश— जी, हाँ।

रूपेन्द्र— तो आप चलिए, मै इन्हे भी अभी लाता हूँ—स्टूडियो दिखाने के लिए।

[**मुकुलेश उठ कर जाता है। जानकी कमरेके चारो ओर दृष्टि दौड़ाती है।**]

रूपेन्द्र— बबई पसन्द है आपको ?

जानकी— एक ही तो बढिया शहर है हिन्दुस्तानमे। पसन्द कैसे न हो ?

रूपेन्द्र— आपने यहॉके स्टडियो देखे है ?

जानकी— वही तो देखने आई हूँ।

रूपेन्द्र— आप तो फिल्म जगत्की सबसे बडी रत्न बनेगी। आपका भविष्य उज्ज्वल है। आपको सभी नायिकाओसे ऊँचा न बना दिया तो बात रही !

जानकी— आपके प्रोत्साहनहीने तो मुझे सिनेमामे आनेको उत्साहित किया है।

रूपेन्द्र— इसमे कोई शक नही। [रीझकर] आपका रूप लावण्य जनताको ऐसा मोह लेगा कि क्या कहूँ ! [**जानकी शरमा कर आँखें नीची कर लेती है।**] कैसी सुन्दर लग रही है आप इस समय ! और यह हलका फीरोजी रग कैसा खिल रहा है आप पर ! बस, थोडा सा परिश्रम करना पडेगा आपको, फिर देखिए आपका यश कहॉ-कहाँ तक फैलता है।

जानकी— यह तो आपकी कृपा है।

रूपेन्द्र— बस, आपका सहयोग चाहिए, सब काम ठीक हो जायगा। आप ठहरी कहाँ है ?

जानकी— यही पास ही एक होटलमे ।

रूपेन्द्र— आपको वहाँ कष्ट तो नही ? मेरे पास अच्छा बडा घर है। मैं आपको एक दो कमरे दे सकता हूँ—बिलकुल अलग से।

जानकी— धन्यवाद, अभी तो मुझे कोई कष्ट नही। आवश्यकता होने पर आपसे कह दूँगी।

रूपेन्द्र— हाँ, हाँ, जब भी आपको किसी प्रकारकी कोई कठिनाई हो आप निस्सकोच मेरे पास आइए। मै सब ठीक करवा दूँगा। अभी जरा मुझे एक मीटिंगमे जाना है। मै कोई आधे घटे तक लौटूँगा। तब तक मै अपने पबलिसिटी डायरेक्टरको आपके पास भेजता हूँ। आप उससे भी मिल लीजिए।

[जाता है। कुछ देरमें एक व्यक्ति सिगरेटका धुआँ उडाता हुआ अन्दर प्रवेश करता है। यही है पबलिसिटी डायरेक्टर—एक भडकीला नौजवान जिसके रोम रोममे स्फूर्तिका आभास है।]

पबलिसिटी डायरेक्टर—तो आप है श्रीमती जानकी ?

जानकी— जी।

प० डा०— क्षमा कीजिए इस धृष्टताके लिए, परतु यह नाम हमारे यहाँ नही चलेगा। हमे तो कोई सुन्दर सा, मधुर सा नाम चाहिए, जिसमें कुछ विलक्षणता हो, कुछ अनूठापन हो, जो लोगोको नवीन सा लगे। [सिर खुजलाता है] कचन कैसा रहेगा ? नही, कचनलता। नही, यह भी नही। तो फिर रजना ? ऊँ हूँ, अजना ? हाँ, अजना अच्छा नाम है। क्यो आपका क्या विचार है ? [जानकी चुप रहती है।] देखिए, आजसे आपका नाम अजना हो गया।

जानकी— तो मै अपने नामका क्या करूँ ?

प० डा०— माताजीको पत्र लिखते समय अपने ही नामसे हस्ताक्षर कर लीजिएगा। [जानकी कुछ घबरा सी जाती है, परन्तु पबलिसिटी डायरेक्टर उसे बहुत सोचनेका समय नही देता।] अच्छा देखिए, फिल्मी नाम तो आपका चुन लिया। मै फोटोग्राफरको भी बुलवा लेता हूँ। वह आपके सौदर्य, आकृति व आकर्षणके ऐसे ऐसे फोटो उतारेगा कि आपकी शोभा सौगुनी होकर चमकेगी। तब तक आप मुझे अपने बारेमे दो चार बाते बता दीजिए। आपको कौन सा रग सबसे प्रिय है ?

जानकी— लाल।

प० डा०— आपको कौनसा काम सबसे अधिक रुचिकर मालूम होता है ?

जानकी— कैसा काम ? समझी नही।

प० डा०— मै पूछ रहा था आपकी हाबी क्या है ?

जानकी— कशीदा काढना।

प० डा०— आप विवाहित है ?

जानकी— हाँ।

प० डा०— आपका घरेलू जीवन सुखमय है ?

जानकी— कभी था, अब नही है।

प० डा०— आपको कौन-सी मिठाई सबसे अधिक पसद है ?

जानकी— रसगुल्ले।

प० डा०— क्या आपने किसी सौन्दर्य-प्रतियोगितामे भाग लिया है ?

जानकी— नही। परन्तु इन सब प्रश्नोका मेरे अभिनयसे क्या सबन्ध है ?

प० डा०— आप देखेगी कि आपके बारेमे ऐसे ऐसे अपूर्व लेख लिखूँगा कि आपको विश्वविख्यात नायिका न बना दिया तो कहिएगा। बच्चे बच्चेकी जबान पर आपका नाम होगा। नवयुवकोके अनगिनत पत्र आपके नाम आयँगे। कोई पत्रिका ऐसी न होगी जिसमे आपका फोटो न हो। जिस रास्तेसे आप गुजरेगी

दर्शकोकी भीड खडी रहेगी । [जानकी उसकी ओर चकित नेत्रोसे देखती है । पवलिसिटी डायरेक्टर जरा आवाज नम्र कर के कहता है ।] परन्तु इसमे आपको सहयोग देना होगा । जैसे मैं कहूँ आप करती जाइए । [जानकी उस पर प्रश्नात्मक दृष्टि डालती है ।] हाँ, ठीक कह रहा हूँ । फिल्म तो चाहे डायरेक्टर ही बनाते होगे, परन्तु अभिनेत्रियाँ तो हम ही बनाते है ।

जानकी— [व्यग्यसे] समझी !

प० डा०— किसीको विगाडना या बनाना हमारे बाये हाथका खेल है । किन्तु आप चिन्ता न कीजिए । आपका सितारा ऐसा चमकेगा कि देखने वालोकी आँखे चौंधिया जायँगी ।

जानकी— इस सद्भावना और सहानुभूतिके लिए धन्यवाद ।

[पवलिसिटी डायरेक्टर घंटी बजाता है । चपरासी आता है ।]

प० डा०— [चपरासीसे] जरा फोटोग्राफर साहबको बुलाना ।

[चपरासी जाता है ।]

प० डा०— [रसिकतासे] आप कहाँ ठहरी है ?

जानकी— यही पास ही एक होटलमे हूँ ।

प० डा०— आपको कोई तकलीफ तो नही है वहाँ ? वैसे तो मै आजकल घरमे अकेला ही हूँ । और घर भी अच्छा बडा है, आप चाहे तो वहा आकर रह सकती है । अगर चाहे तो एक अलग कमरेमे रह सकती है । मेरी तरफसे तो सारे घरको ही अपना समझिए । मै तो अपना बहुत-सा समय घरके बाहर ही गुजारता हूँ ।

जानकी— अभी तक तो मै बडे आराममे हूँ ।

[दरवाजा खुलता है । फोटोग्राफर आता है ।]

प० डा०— आइए, सलीम साहब, इनसे मिलिए । हमारी भावी, होनहार नायिका मिस अजना । मै इनके बारेमे एक लेख

तैयार कर रहा हूँ। उसीके साथ दो चार फोटो भी प्रकाशित करना चाहता हूँ। तुम ऐसे फोटो उतारो कि देखने वाले दग रह जायँ।

फोटोग्राफर—[अब तक जानकीकी रूपरेखाको निर्निमेष नेत्रोंसे देख रहा था] आप मेरी ओरसे निश्चिन्त रहिए। ऐसा फोटो खींचूँगा कि दुनिया देखती रह जायगी।

प० डा०— अच्छा, तो मैं चलता हूँ। [जानकीसे] अभी आपकी एक छोटी सी जीवनी लिख कर लाता हूँ। आप पढेंगी तो देखेंगी कि मेरी कलममे क्या जादू है।

[जाता है।]

फोटोग्राफर—[आवाज़ देता है] चपरासी!

चपरासी— [वाहरसे आकर] हुजूर!

फोटोग्राफर—देखो, कैमरा, लैंप, पीछे रखनेके लिए परदे इत्यादि लाओ—जल्दी।

[चपरासी जाता है।]

फोटोग्राफर—[अजनासे] मैं जरा देखना चाहता हूँ कि किस एंगिलसे आपका फोटो अच्छा आयगा। जरा दायी ओर देखिए तो अब जरा वायी तरफ जरा गरदन ऊँची कीजिए जरा नीचे देखिए। [जानकी यह सब कुछ अप्रसन्नतापूर्वक करती है।] क्षमा कीजिए, आपको कष्ट हो रहा है, परन्तु विवश हूँ। देखना चाहता हूँ कि किस एंगिलसे फोटो लिया जाय तो सबसे अच्छा दिखाई देगा। हाँ, तो जरा वायाँ कधा टेटा करके देखिए। यह अच्छा है। इधर कमरके पाससे साडी जरा ठीक कर लीजिए ताकि चोलीकी काट अच्छी दिखाई दे। एक वात और—अगले फोटोके लिए चोली ऐसी पहनिएगा जिसके गलेकी काट कुछ नीची हो, इसकी जरा ज्यादा ही ऊँची है। क्षमा कीजिए, आपको वहुत

परेशान कर रहा हूँ। अच्छा, जरा अपना पाँव तो आगे बढाइए नही, ऐसे नही, जरा टेढा करके—ऐडी भी दिखाई दे और हाँ, ऐसे। [भावुकतासे] क्या कहूँ, मिस अजना, आप जैसी सूरत कभी पहले नही देखी, कैसा साफ रग है, कैसी मदभरी आँखे, मुखकी आकृति कैसी सुन्दर है। आपमे वे सब गुण है जो एक सफल और प्रसिद्ध नायिकाके लिए आवश्यक है। जरा मुसकराइए तो। हाँ, जरा सा और। ऐसा फोटो आयगा कि सुरैया और नरगिसके घरमे हाहाकार मच जायगा।

जानकी—आप तो हवासे महल बना रहे है।

फोटोग्राफर—नही, मै हवाई घोडे नही दौडा रहा हूँ। यहाँ खेल ही सारा फोटोग्राफीका है। डायरेक्टर क्या कर सकता है और पबलिसिटी वाला भी क्या कर सकता है जब तक कि लोगोके दिलमे उसकी साक्षात् मूर्त्ति न समा जाय। यह फोटोग्राफी का ही कमाल है। ऐसे ऐसे एगिलसे फोटो उतारूँगा कि मालूम हो कोई अप्सरा स्वर्गसे उतर आई है। [जरा धीमेसे] परन्तु इसके लिए आपको सहयोग देना होगा। [जानकीके माथे पर भृकुटी देख कर] अब तक तो किसीने कैमरामैनसे बिगाड कर कुछ लिया नही। पार्वती जरा शान दिखाने लगी थी। मैने उसके फिल्मको ऐसा बिगाडा कि कही भी दो दिनसे अधिक नही चला।

जानकी—सच? उस बेचारीको कितनी ठेस पहुँची होगी! मेरी तो हिम्मत नही होती काम करने की।

फोटोग्राफर—आपके साथ कोई ऐसे थोडे ही करूँगा। घबराइए नही। इधर आइए, जरा लाइटके सामने बैठिए। ये फोटो शाम तक तैयार हो जायँगे। कहिए, आपके पास कहाँ भिजवाऊँ या स्वय लेता आऊँ?

जानकी— मैं यहाँ निकट ही एक होटलमे ठहरी हूँ ।

फोटोग्राफर—होटलमे ? वहाँ आपको क्या आराम मिलेगा !

जानकी— अभी तक तो कोई कष्ट नही हुआ ।

फोटोग्राफर—यदि तनिक भी कठिनाई हो तो मेरे यहाँ आ जाइए । मेरे पास एक अच्छा वडा सा फ्लैट है जूहूमे । वरामदेमे वैठो तो सामने समुद्रका ऐसा अच्छा दृश्य दिखाई देता है कि घटो वैठे देखा करो, कभी जी नही ऊवता ।

जानकी— [व्यग्यमय मुसकराहटसे] मालूम होता है यहाँ मकानोकी तगी नही है । हम तो सुनते थे कि ववईमे एक कमरा भी मिलना असम्भव है । यहाँ तो मानो सव वडे-वडे वगले खाली पडे हैं ।

फोटोग्राफर—[वात टालनेके लिए] फोटो तो खिच चुके ।

जानकी— धन्यवाद ।

फोटोग्राफर—[चपरासीको वुलाकर] ये सव चीजे उठा ले जाओ ।

जानकी— [तनिक उत्सुकतासे] आपने कहा शाम तक तैयार हो जायँगे ?

फोटोग्राफर—मैं अभी डार्करूममे जाकर इन्हे तैयार करता हूँ । वहुत रुचिकर होता है फोटो वनानेका ढग । आपने देखा कभी ?

जानकी— जी, नहीं ।

फोटोग्राफर—तो चलिए मेरे साथ । अभी सव समझा देता हूँ ।

जानकी— नही, इस समय नही, फिर कभी सही ।

फोटोग्राफर—जैसी आपकी इच्छा ।

[जाता है । जानकी कमरेमें कुछ क्षणके लिए अकेली रह जाती है । कुरसीसे उठ कर दीवारपर टंगी तसवीरोको समीपसे देखती है । साथ ही कुछ गुनगुनाने लगती है । एक व्यक्ति कमरेमें आकर चुपकेसे खडा हो जाता है और उसका गाना सुनने लगता है । यह साउण्ड इंजीनियर है ।]

साउड इंजीनियर—[कुछ देर बाद] वाह, वाह ! क्या आवाज दी है भगवान् ने आपको !

जानकी— [आश्चर्यसे पीछे मुडकर] आप कौन साहब है ?

सा० इं०— मै यहॉ साउण्ड इजीनियर हूँ फिल्ममे जो बातचीत व गाने होते है, उनको रिकार्ड करना मेरा काम है ।

जानकी— हूँ, समझी ! अब आप शायद यह पूछना चाहेगे कि मै कहाँ ठहरी हूँ ? वहॉ कोई कष्ट तो नही ?

सा० इ०— [विस्मयसे] मै आपका मतलब नही समझा ।

जानकी— किसी ख़ास मतलबसे तो नही कहा । यहॉके लोग इतने नेक है कि क्या बताऊँ ! सभीने मुझसे यही प्रश्न पूछा । प्रश्न ही नही पूछा, अपने घर तक मे रहनेके लिए भी निमन्त्रण दिया ।

सा० इं०— मै आपको जानता तो नही, परन्तु इतना अवश्य पहचानता हूँ कि आप फिल्म ससारमे अभी नई नई आई है । आप क्या करती है या क्या करने आई है, उससे तो मेरा कोई वास्ता नही । केवल इतना सावधान कर देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि यहाँके लोगोसे बचकर रहना ।

जानकी— धन्यवाद । मै अपनी रक्षा स्वय कर सकती हूँ ।

सा० इं०— जब नई नई आती है तो सभी यही समझती है । और फिर आप तो भोलीभाली दिखती है । ध्यान रखना कही इनकी चिकनी-चुपडी बातोमे न आ जाना ।

जानकी— आपकी नेक सलाहके लिए आभारी हूँ । आशा है ऐसी स्थिति उत्पन्न न होगी ।

सा० इ०— मुझे कुछ और नही कहना है सिवा इसके कि कोई आवश्यकता हो तो मुझे अपना मित्र तथा हितैषी समझना, वैसे भी मै आपको आपके काममे सहायता दूँगा । सिनेमामे आवाज़ बहुत बडी चीज है । देखा जाय तो इसीका तो सारा खेल

है। माइक्रोफोनकी कुजी अपने हाथमे है। चाहूँ तो आप की आवाजम बुलबुलकी सी मिठास भर दूँ, और चाहूँ तो आवाजको ऐसा कर दूँ कि मालूम हो जैसे कोई मेढक टर्रा रहा हो।

[रूपेन्द्रस्वरूप वापस आता है। साउड इजीनियरकी ओर घूम कर देखता है मानो उसने उसकी बातचीतका अन्तिम भाग सुन लिया हो।]

रूपेन्द्र— [साउड इजीनियर से] आपने इनकी आवाज़ रिकार्ड करके देखी ?

सा० इ०— जी, अभी करने जा रहा था।

[फोटोग्राफर एक हाथमें गीले नैगेटिव पकडे अन्दर आता है]

फोटोग्राफर—वाह ! वाह ! क्या तसवीरे उतरी है ! देखिए, डायरेक्टर साहब।

रूपेन्द्र— अभी देखता हूँ।

[पबलिसिटी डायरेक्टर दो चार कागजोको झटकाता हुआ आता है।]

प० डा०— देखिए, मिस अजना, कैसी बढिया चीज लिखी है। पढने वाले फडक न उठें तो कहना।

रूपेन्द्र— श्रीमती जानकी

प० डा०— [बात काटकर] जानकी नही, अजना कहिए।

रूपेन्द्र— अच्छा नाम है। परन्तु नाम कुछ भी हो, अच्छा ही होता है। हाँ, तो आइए, मिस अजना, आपसे दो चार बाते बिजनेसकी कर ले। देखिए मै आपको पहले फिल्मके लिए बीस हजार देनेको तैयार हूँ। इतनी बडी रकम शुरूमे शायद ही किसी और अभिनेत्रीको मिली हो। कमसे कम मैने तो अब तक किसीको नही दी—चाहे तो नियमपत्र पर हस्ताक्षर कर दे।

प० डा०— हाँ, मिस अजना, डायरेक्टर साहब जो कह रहे है, वह सच है। ऐसा अवसर बहुत खुशकिस्मत लोगोको मिलता है।

जानकी— बहुत कुछ धन्यवाद! आप लोग कितने नेक है! बबई शहर भी बहुत अच्छा है। रहनेके लिए जगह भी बहुत है। आप ही लोगोकी कृपासे मैने इस पिछले आध पौन घटेमे बहुत कुछ सीख लिया है। सोचती हूँ मै अपने छोटेसे नगर ही मे अधिक सुखी रहूँगी। नमस्कार! [उठकर दरवाजे की ओर बढती है।]

रूपेन्द्र— सुनिए तो, एक मिनिट ठहरिए। कुछ मालूम भी तो हो, मिस अजना

जानकी— [दरवाजे पर क्षण भर रुक कर] मिस अजना नही, श्रीमती जानकी कहो। नमस्कार!

[जाती है। सब लोग एक दूसरेकी ओर हक्के-बक्के देखते रह जाते है।]

रूपेन्द्र— दिमाग खराब है इसका। ऐसा अच्छा अवसर खो दिया। और कभी कोई इतना करनेको तैयार न होगा। अब तो आकर मेरे दरवाजे पर नाक भी रगडे तो अन्दर पॉव न रखने दूँ।

[कहानी लेखक आता है—बहुत उत्तेजित]

कहानी लेखक—एक कहानी लिखकर लाया हूँ—मिस अजनाके लिए। [चारो ओर देख कर] कहाँ गई वह ?

रूपेन्द्र— बस तुम पॉच मिनिट लेट पहुँचे, चिडिया उड गई हाथसे।

प० डा०— जो बेचते थे दवाए दर्दे दिल, वह दुकान अपनी बढा गये! क्यो, साहब, कैसी कही! [रूपेन्द्रकी ओर हाथ बढा कर] लाइए हाथ!

[सब एक दूसरेकी ओर खिलखिला कर हँसते है। हाथ मिलाते है। परदा गिरता है।]

महिला-मण्डल

•

महिला-मण्डल

[दैनिक "समाचार"के सम्पादकीय ग्राफिसका एक छोटा सा कमरा--मेजें पुस्तको, पत्रिकाओ तथा अन्य प्रकारके अखबारोंसे लदी है : रद्दीकी टोकरियाँ भरी पडी है। दीवारो पर सुन्दर स्त्रियोंके चित्र टँगे है जिनमें वे भिन्न-भिन्न प्रकारकी क्रीमो, पाउडर तथा लिपस्टिकोका प्रयोग करती हुई दिखाई गई है। खिडकीमेंसे बाहर देखने पर दूर तक ऊँची-ऊँची इमारतें दृष्टिगोचर होती है।

इस समय कमरा प्राय' खाली है---केवल एक पचास वर्षका व्यक्ति बीचवाली मेज पर बैठा बडी तेजीसे टाइपराइटर चला रहा है---उसके दॉयी ओर टेलीफोन रखी है। सम्पादक साहब, आधुनिक ढगके दुबले-पतले शोख तबीयतके पत्रकार, प्रवेश करते है]

सम्पादक--- सब ठीकठाक चल रहा है, मदनगोपाल ?

मदनगोपाल---ओह ! आप---नमस्कार ! जी हॉ, चल ही रहा है---चार बजे तक यह पृष्ठ तैयार हो जाना चाहिए

सम्पादक--- चार बजे ! कुछ ज्यादा ही देर हो जायगी। प्रेस वाले हर हफ्ते चिल्लाते है---मुझे मैनेजर साहब अभी-अभी कह कर गये है कि यदि चार बजेसे पॉच मिनट भी इधर-उधर हुए तो वे रविवारको साप्ताहिक नही निकाल सकेगे।

मदनगोपाल---अपनी ओरसे तो भरसक प्रयत्न कर रहा हूँ---किन्तु साहब बडी मुसीबतका काम है यह---

सम्पादक--- [खाली कुर्सियो की ओर सकेत करके] और यह लडके कहाँ है ?

मदनगोपाल---सातवलेकर तो कल रात बहुत देर तक काम करता रहा---इसलिए आनेमे कुछ देर हो गई होगी। प्रकाश अभिनेत्री 'सुन्दर लता' से भेट करने गये है।

सम्पादक— [नाक चढाकर] उँह ! सुन्दरलता !!

मदनगोपाल—हमने अपने पाठकोको हर रविवारके दिन एक अभिनेत्रीके बारेमे बातचीत करनेका वचन दे रखा है। जो अधिक लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध है उनसे भेट कर चुके है।

सम्पादक— अच्छा—जैसे जी मे आये करो, परन्तु उसकी फोटो मत छापना।

मदनगोपाल—हमारे पास उसकी पन्द्रह साल पहलेकी एक फोटो रखी है—वह ऐसी बुरी नही—और उसने उस पर हस्ताक्षर भी कर रखे है ..

सम्पादक— हस्ताक्षर ! तुम्हारा मतलब उसके अगूठेकी छापसे है ?

मदनगोपाल—नही जी—बराबर हस्ताक्षर है और साथमे यह भी लिखा है "मेरे सहस्रो फिल्मी मित्रोके नाम जिन्हे मुझसे अनुराग है—"

सम्पादक— इस सप्ताहका लेख क्या है ?

मदनगोपाल—[घृणित भावसे] "गर्भवती स्त्रीके लिए उपयोगी वस्त्र।" देखिए, सम्पादक साहब आपके "महिलामण्डल" की "लीला दीदी" बने मुझे आज तीन साल हो गये है—अब मुझे कोई और काम दीजिए जो पुरुषोके योग्य हो—इससे तो थक गया हूँ—अजीब अजीब पत्र आते है—कोमल करुणार्द्र—यह सुनिए ! 'प्रिय दीदी, तुम्हारा लेख "सुखी कुटुम्ब" बहुत ही अच्छा लगा। अब मैने फैसला कर लिया है कि एक बच्चा होना ही चाहिए; किन्तु मेरे स्वामी 'नेवी' मे काम करते है अह !'

सम्पादक— थोडी देर और हिम्मत बाँध कर चलाये चलो मै किसी योग्य स्त्रीकी खोजमे हूँ जिसको आपका काम सौप सकूँ—देखो अगले महीने तक तो मिल ही जानी चाहिए

मदनगोपाल——हाँ, यह भार उसे सौप देनेमे मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी—आप चाहे तो मुझे बच्चोका "श्याम चाचा" बना दे परन्तु "महिला-मण्डल" की "सर्वप्रिय दीदी" के बन्धनसे मुक्त करे।

सम्पादक—— ओह! याद आ गया—देखो जी "रेशम फेस पाउडर"का नाम कही न कही जरूर लिखना—अभी कुछ ही दिन हुए उन्होने कई डव्वे नमूनेकी तोर पर भेजे थे—और विज्ञापन भी देते ही रहते है—इसलिए जरा खुश ही रखना चाहिए उन्हे

मदनगोपाल—कह दूँगा कि मैने स्वय प्रयोग किया है और इतना उत्तम पाया कि लोग अब मुझे पहचान तक नही सकते!!

सम्पादक—— [हँसते हुए] अच्छा आपके काममे और बाधा नही डालूँगा—भगवान् तुम्हारा भला करे—और देखो, जैसे भी बन पड तीन बजे तक तैयार कर दो।

मदनगोपाल——जी अच्छा।

[सम्पादकके जाते ही फिर टाइप करने लगता है——टेलीफोन बजता है]

मदनगोपाल——**[सिगरेट सुलगाकर टेलीफोन उठाता है]** जी हाँ यह दैनिक "समाचार"का ही दफ्तर है—ओह! आप 'लीला दीदी' से बात करना चाहती है क्षमा कीजिए, इस समय तो वह बाहिर गई हुई है कह नही सकता सम्भव है "ड्राई क्लीनर" (Dry cleaner) के पास गई हो आप कुछ सदेशा देना चाहती है क्या? जी हाँ मै लिख लेता हूँ [सदेशा दुहराता तथा लिखता है]. श्रीमती जल मार्तुंगवालाने टेलीफोन करके पूछा है कि उनका नाम उन लोगोकी सूचीमे क्यो नही प्रकाशित किया गया, जो वाटलीवालाकी पिछले बुधको जुहू पर चाँदनी रातकी पार्टी

मे उपस्थित थे जी हाँ—मैंने लिख लिया मुझे विश्वास है कि दीदीको इस भूलके लिए स्वय बहुत खेद होगा. हाँ, कुछ गलती ही हुई जी, अवश्य आते ही कह दूँगा नमस्कार. .

[टेलीफोन रखता है प्रकाश आता है]

प्रकाश—— [परेशानीसे कुर्सीमें गिरते हुए] हूँ—कैसा जीवन कैसी स्त्री !

मदनगोपाल——क्यो, क्या हुआ ?

प्रकाश—— 'महिलामण्डल'के लिए रूपरगकी सनी 'सुन्दरलता' से पृथक् भेट करके आ रहा हूँ ।

मदनगोपाल——जब तुम पहुँचे तो क्या कर रही थी ?

प्रकाश—— बाल रग रही थी अपनी वर्षगाठके शुभागमनमे ।

मदनगोपाल——यह काम ही ऐसा है इसमे यह सब कुछ करना ही पडता है अच्छा तुम जल्दीसे लेख लिखकर दो मुझे तीन बजेसे पहले देना है !

प्रकाश—— अभी तो बहुत समय है ।

मदनगोपाल——सम्पादक महाशय और मैनेजर तो कबसे चिल्ला रहे है !

प्रकाश—— [अपने टाइपराइटरमे कागज डालते हुए] मैंने उससे कहा कि हमारे पाठकोको उसके विवाह-सम्बन्धी विचारोको जाननेकी बहुत उत्सुकता है——कहने लगी मुझे शादीसे कोई विरोध नही——लडकियोको शादी करनी ही चाहिए——जब मै जवान थी तो म भी काफी शादी किया करती थी——अब अपना सारा समय अपनी कलाको अर्पित करती हूँ ।

मदनगोपाल——और अपनी नातीको——

प्रकाश—— मैने उसके "नशाबन्दी", "हिन्दुस्तानी क्रिकेट टीम", "रेलवे बजट" तथा "राशनकी कीमते बढाने"के बारेमे विचारोका भी पता लगाया है——

मदनगोपाल--[उसके लम्बे लैक्चरको काटकर] अरे, दोस्त, तुम तो शादी-शुदा आदमी हो—जरा बताना तो—गर्भवती स्त्रीके लिए कितने दस्ताने चाहिए ?

प्रकाश-- कौन है गर्भवती ?

मदनगोपाल--कोई भी हो—"गर्भवती स्त्रीके लिए उपयोगी कपडे" मेरे लेखका शीर्षक है—

प्रकाश-- किन्तु दस्ताने क्यो ?

मदनगोपाल--चुन्ने मुन्नेको उठानेके लिए

प्रकाश-- बकवास बन्द करो—उनसे केवल यही कहो कि खूब खाओ और खूब काम करो—फर्श साफ करो, चक्की पीसो, कपडे धोओ और नखरे कम करो—

मदनगोपाल--कैसी भोली बाते करते हो—'लीला दीदी' अपने पाठकोको कभी इस तरह निराश कर सकती है इस प्रकार साफ-साफ लिखने लगूँ तो यह पत्रिका ही बन्द हो जाय [पास रखी पत्रिकाओको थपककर] मैं समझता हूँ अब इन पत्रिकाओको ही देखना पडेगा तभी कुछ नये विचार आयँगे और देखो जी यदि एक योग्य पत्रकार बनना है तो तुमको बहुत कुछ सीखना पडेगा। स्त्रियोकी वर्तमान समस्याओको समझना पडेगा !

प्रकाश-- मैं तो राजनीतिक विषयो पर विशेषता प्राप्त करना चाहता हूँ ताकि इन 'लीडरो' से टक्कर ले सकूँ

मदनगोपाल--यह व्यर्थकी बाते बन्द करो और मुझे काम करने दो।

[दोनो कुछ देर तक काम करते हैं—सातवलेकर आता है]

सातवलेकर--नमस्कार, बहिनो और भाइयो ! इस सप्ताह स्त्री-ससारमें क्या विप्लव आया है

मदनगोपाल--सम्पादक साहब चक्कर लगा गये है और कह गये हैं कि 'महिलामण्डल'का पृष्ठ तीन बजे तक उनके पास पहुँच जाना

चाहिए—समय बहुत कम है—तुम कृपा करके बैठो और काम करो—पाठकोके प्रश्नोके उत्तर लिखकर मेरे हवाले करो ।

सातवलेकर—मेरा काम तैयार है केवल टाइप करना रहता है । सच, यहाँ एक पढी, लिखी, चतुर, सुन्दर, युवतीका होना आवश्यक है जो हम लोगोके साथ काम करे । कई प्रश्न ऐसे आत्मीय होते है कि उत्तर देनेमे सकोच होता है यह देखो [**दोनोको एक सवाल दिखाता है, दोनो खिलखिला कर हँसते है**] सच दिमाग थक जाता है, दिनो दिन बच्चोकी लगोटियाँ, गोरा रग करनेकी क्रीमो, लिपस्टिको तथा दुबले होनेके साधनो के विषयमे लिखते-लिखते क्यो, क्या कहते हो तुम ?

मदनगोपाल—एक उल्टा दो सीधे, एक आगे धागा करके सीधा जोडा—दो पीछे सिलाई करके नीचे उतारी

[सब हँसते है]

सातवलेकर—जरा सोचो—अपने जीवनके तीन अमूल्य वर्ष मैने अमरीका मे 'जर्नलिज्म' सीखनेमे व्यय किये मै पूछता हूँ क्या इसीलिए ? [**प्रश्नका उत्तर नही मिलता—टाइपराइटर तेजीसे चलते है—टेलीफोनकी घण्टी होती है ।**]

मदनगोपाल—हेलो हम सब काममे व्यस्त है समय पर समाप्त हो जायगा...आप चिन्ता न कीजिए ।

[टेलीफोन रख देता है]

प्रकाश— सम्पादक महाशय ?

मदनगोपाल—हाँ,

सातवलेकर—[एक पत्र उठा कर] यह सुनो, यह एक नये किस्मका धब्बा आया है—यह महिला पूछती है कि 'बीयर'के धब्बे मेजपोश पर से कैसे निकाले जायँ ?

प्रकाश—— धब्बे ! धब्बे !! इस देशमे धब्बे डालनेके सिवाय और कुछ काम है भी इन स्त्रियोको——

मदनगोपाल——नीबूका रस और नमक कैसा रहेगा ?

सातवलेकर——यह उपाय तो स्याहीके धब्बे मिटानेको बताया था——और पिछले रविवारको ही ।

मदनगोपाल——तो अब सिरका और चीनी लिख दो ।

सातवलेकर——तो सिरकेके दाग कौन मिटायगा ?

प्रकाश—— ह्विस्की और चीज (Cheese) ।

सातवलेकर——मजाक नही करो

मदनगोपाल——'हाइड्रोजन पेरोक्साइड' (Hydıogen Peıoxıde) और 'ग्लैसरीन' (Glyceııne) ।

सातवलेकर——यह अच्छा जँचता है——और फिर वहुतसे घरोमे यह चीजे मौजूद होगी——मेरा विचार है थोडा-सा 'अमोनिया' (Ammonıa) भी मिला दूँ [टाइप करता है] ग्लैसरीन एक हिस्सा, हाइड्रोजन पेरोक्साइड तीन हिस्से और अमोनिया छ हिस्से——मिलाकर अच्छी तरह रगडो जब तक दाग न मिट जायँ——[साथियोसे] क्यो, क्या ख्याल है ?

मदनगोपाल——बहुत अच्छा ।

प्रकाश—— कही तीनो चीजे मिलानेसे आग लगनेकी सम्भावना तो नही !

[टेलीफोन फिर बजता है]

मदनगोपाल——प्रकाश जरा सुनना मै जरा इस आकाक्षित माँका किस्सा समाप्त कर लूँ——

प्रकाश—— अच्छा [टेलीफोन उठाता है] हूँ लीला दीदी ! जी अवश्य यही है मै उन्हे फोन देता हूँ [मदनगोपाल जोर-जोरसे हाथ हिलाकर समझाता है कि न कर दो] जरा ठहरिए वह अभी आ रही है

सातवलेकर—केवल एक मिनट लूँगा—यह देखिए पूनासे एक युवती लिखती है कि वह बडी दुविधामे है—उसे समझ नही आ रही शादी किससे करे—एक खूबसूरत परन्तु निर्धन युवकसे जिसे वह प्रेम करती है, या एक सीधे सादे अधेड पुरुषसे जिसके पास पैसा भी है—घर भी ! कहती है उत्तर तुरन्त ही "महिलामण्डल"मे छाप दीजिए

मदनगोपाल—अमीर आदमी ही से करनी चाहिए।

सातवलेकर—यह तो कोई भी पत्रिका जिसे तरुणियोका तनिक भी अनुभव है कभी नही कहेगी कहना यह चाहिए कि अपने हृदयको टटोलो, यदि वास्तविक प्रेम है तो उसी पर अटल रहो। प्रेम अमूल्य वस्तु है उसकी तुलना रुपयेसे नही की जा सकती

प्रकाश— कुछ भी लिख दो—आखिर शादी होती तो 'लौटरी' ही है—कितना भी सोच-विचार करो।

[सम्पादकका प्रवेश]

सम्पादक— यह क्या गजब कर डाला तुम लोगोने [हाथमें पकड़े हुए कुछ पत्र उनकी ओर हिला कर]—यह सात पत्र आये है और "अखरोटोके लड्डू बनानेकी विधि पर—क्या लिखा था तुमने पिछले रविवारको ?

सातवलेकर—मैंने बताया था कि प्राचीन युगोमे लड्डू बनाते थे "अखरोट की गिरी, केलेका छिलका, आमकी गुठली और बबूलकी छालको पीस कर "

सम्पादक— [बात काट कर] इन पत्रोसे तो यह ज्ञात होता है कि छ. कुटुम्ब पडे पीडासे कराह रहे है और मुझे डर है कि वकीलो से सलाह ले रहे होगे।

सातवलेकर— यह तो बुरी बात है . मुझे विश्वास है उन्होने कुछ गलत सलत चीजे मिला दी होगी

सम्पादक— परन्तु तुमने यह विधि कहाँसे पाई ? क्या तुम्हारी घरवाली की विशेषता है ?

[गुस्सा तेज है]

सातवलेकर— [क्षमा याचनाके भावसे] नही, मैने स्वय बनाई थी— सोचा, नई चीज है अच्छी, दिलचस्प रहेगी और फिर आपने देखा होगा कि इसमे राशनकी कोई चीज नही, लोगोको कुछ तो पीडा सहनी ही पडेगी अपनी मातृ-भूमिके लिए

सम्पादक— [मुसकराहट रोकने पर भी नही रुकती] यदि लोगोकी बलि ही देना चाहते हो तो सीधी तरहसे कहो

सातवलेकर—यह पहली बार है कि मेरी बताई गई विधि गलत हुई— आपको याद होगा कि "बैंगनकी आईस-क्रीम" कितनी पसन्द आई थी बहनो को

सम्पादक— प्रेसकी स्वतन्त्रताका यह मतलब तो नही कि जो जी मे आया छाप दिया—ध्यान रखो ऐसी शिकायत फिर न आये

[जाता है]

सातवलेकर—[माथा ठोक कर] यह फल मिलता है परिश्रम और मौलिकताके लिए [कोई उत्तर नहीं देता—टाइपराइटर निरन्तर चलते हैं कुछ देर]

मदनगोपाल—[कागज़ टाइपराइटरमेसे निकालते हुए] शुक्र है भगवान् का—समाप्त तो हुआ [अपना कागज निकाल कर] और यह लो "सुन्दरलता" से भेट !

मदनगोपाल—शाबाश ! तुम्हारा क्या हाल है सातवलेकर ?

सातवलेकर— [स्पीड तेज करते हुए] बस एक आध मिनट और [एक चञ्चल युवती आती है—"महिलामण्डल" के पुरुष उसको देखते हैं फिर एक दूसरेको. . कुछ अनुत्साहपूर्वक]

युवती— नमस्कार ! मै "लीला दीदी" से मिलना चाहती हूँ ।

[सातवलेकर मदनगोपालकी ओर सकेत करता है]

मदनगोपाल—मुझे खेद है कि वह इस समय आफिसमे नही है .

युवती— अच्छा, तो मैं यही उनकी प्रतीक्षा करती हूँ आपको कोई बाधा तो न होगी

मदनगोपाल—कदापि नही परन्तु 'दीदी' तो जल्दी लोटनेकी नही, वे अभी-अभी अस्पताल गई हैं ।

युवती— बीमार है क्या ? [मदनगोपाल सिर हिलाता है] ओह यह तो बुरी बात हुई—मुझे बहुत बुरा मालूम हो रहा है यह जानकर क्या कुछ खास बात है ?

सातवलेकर—नही, कोई घबराहटकी बात नही वह जचगीके लिए गई है।

युवती— [खुशीसे] सच ! यह तो बडी खुशीकी बात है क्या पहला 'बेबी' है ?

प्रकाश— पन्द्रहवाँ !

युवती— [घबरा कर] भगवान्‌के लिए—क्या आप सच कह रहे हैं?

सातवलेकर—घबराइए नही—सम्भव है चौदहवाँ ही हो—ठीक नही कह सकता [युवतीके पाँव शिथिल पड जाते है और लड-खडाने-सी लगती है—सातवलेकर उठकर उसे सहारा देकर गिरनेसे बचाता है]

[सम्पादक आता है]

सम्पादक— यह क्या हो रहा है ? क्या यह भी अखरोटोके लड्डूका फल है ? मैनेजर मेरी जान खा रहा है और तुम यहाँ 'भारत नाट्यम्' कर रहे हो

युवती— पानी पानी

मदनगोपाल—[कुछ कागज सम्पादकको देकर] यह रहा "महिला-मण्डल" शामको आकर 'प्रूफ' देख लूँगा ।

सम्पादक— हाँ—ठीक किन्तु इसका क्या होगा ?

मदनगोपाल—यह 'दीदी'से मिलने आई थी .

कलाकार और नारी

•

कलाकार और नारी

[परदा उठने पर मीनाक्षी और साधना दोनो बैठी बातें करती दिखाई देती हैं। घर अच्छा बड़ा और सुसज्जित है। एक दो प्राकृतिक दृश्योके चित्र, एक दो सुन्दर तथा कलापूर्ण ढगसे उतारे हुए फोटो, रेडियोग्राम, पेपरमाशीका टेबिल लैम्प, तिब्बती फूलदान।]

मीनाक्षी— नई खबर सुनी ?

साधना— कौन-सी ?

मीनाक्षी— सुना है राधा और मनोहरमे फिर झगडा हुआ। कुछ लोगो का विचार है कि अब वे अलग हो जायँगे। उनका वैवाहिक जीवन तो समाप्त ही समझो।

साधना— यह तो होना ही था।

मीनाक्षी— इसे तुम अनिवार्य क्यो समझती हो ?

साधना— मीना, जरा सोचो, उन दोनोमे अन्तर कितना है! उमरमे देखो तो भी और रूपरग देखो तो भी। माना कि मनोहर के पास पैसा है, पर उससे क्या ? उसका सारा दृष्टिकोण इतना सकीर्ण है कि राधा जैसी उदार विचारोवाली लडकीके लिए निभाना बहुत कठिन है। कहते है बेचारीने कोशिश तो बहुत की परन्तु सफल नही हुई। वह तो बात-बातमें सदेह करने लगता है।

मीनाक्षी— जब तक पति-पत्नीके विचारोमे समानता न हो जीवन दूभर हो जाता है।

साधना— पुरुष होते बडे शक्की हैं। पत्नी ज़रा किसीकी ओर देखकर मुसकराई नही कि उनकी छाती पर साँप लोटने लगता है।

मीनाक्षी— बिलकुल ठीक कहती हो । पुरुषोका सारा रोमास और प्रेम शादी हो जाने पर न जाने कहाँ लोप हो जाता है । फिर तो दफ्तर या रोटी कमानेका धधा . [**टेलीफोनकी घटी बजती है । उठाते हुए**] गलत नबर होगा हैलो ! हाँ, बात कर रही हूँ...प्रदर्शनी . कौन सी . समझी मुझसे मिलना चाहते है ? ...क्या काम है? हॉ, यदि जरूरी है तो आइए ..मै घर ही पर हूँ हॉ चले आइए अभी । [**टेलीफोन रखती है ।**]

साधना— किसे बुलावा दे रही हो ?

मीनाक्षी— [**हॅसते हुए**] मुझे स्वय ही नही मालूम ।

साधना— बनो मत ।

मीनाक्षी— नही, सच कहती हूँ । कल राकेश और मै शामको घूमने निकले तो पार्क स्ट्रीटमे जो चित्रकला प्रदर्शनी हो रही है, वहॉ जा पहुँचे । वहीका कोई चित्रकार है जो मुझसे मिलना चाहता है ।

साधना— तो मै चलूँ, अपनी शौपिग कर आऊँ । जिस कामसे निकली थी वह तो रह ही गया । ऐसे ही गप्पे लगाने लगी तुमसे । [**उठती है**]—एक बात कहूँ ? ये कलाकार लोग बहुत रसिक होते है । [**मुसकरा कर**] जरा सचेत रहना ।

मीनाक्षी— तुम चिन्ता न करो । मै इतनी आसानीसे किसीकी बातोमे आनेवाली नही । तुम न्यू मार्केट जा रही हो तो जरा सा मेरा भी काम करती आना । मैने दो साडियॉ ड्राईक्लीन करनेको दी थी । उन्हे जरा लेती आना । आज शामको चाहिए ।

साधना— लाओ रसीद ।

मीनाक्षी— लो, देती हूँ ।

[मेजके खानेमें से रसीद निकाल कर देती है। साधना कागजके टुकड़ेको बटुएमें डालकर चलती है। मीनाक्षी उसे दरवाजे तक पहुँचाती है। फिर अपनी साडीको सामनेसे ठीक तरह सजा कर कंधे पर सँवार लेती है। हैंडबेगमेंसे काम्पैक्ट निकाल कर अपनी नाक पर पाउडर लगाती है, लिपस्टिकको ठीक करती है।

इतनेमें दरवाजे पर खटका होता है और आगन्तुक उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही अन्दर चला आता है। उसके बाल लम्बे-लम्बे हैं और कपड़ोमें, चालढालमें तथा मुसकराहटमें एक बेपरवाही सी है, जो भली मालूम देती है। हाथमें सिगरेट तथा बगलमें एक बस्ता है।]

मीनाक्षी— आइए, बैठिए। आप हीने टेलीफोन किया था?

चित्रकार— जी। [बैठता है। फिर सिगरेटका एक लम्बा कश लगाकर उसे पास ही ज़मीन पर फेंक देता है और पैरोसे मसल देता है] कल आप हमारी प्रदर्शनीमे आई थी। इस असीम कृपाके लिए मैं स्वय आपको धन्यवाद देने आया हूँ। जिस रुचिसे आप तसवीरें देख रही थी उससे प्रत्यक्ष है कि आपको कलासे प्रेम है, आप कलापारखी है

मीनाक्षी— [बात काट कर] मुझे तो चित्रकलाका क ख ग भी नही आता।

चित्रकार— जिस तन्मयतासे आप मेरा बनाया हुआ प्राकृतिक दृश्य देख रही थी, वह क्या भूलनेकी बात है? सतरई रगकी साडी, हरे रगका पतला फूलदार किनारा, उसीसे मैच करती हुई चोली, पैरोमे भी वैसे ही रगकी चप्पल, घने काले बालोमे बेलेके फूलोकी बेनी बाँधे मानो आप उस प्राकृतिक दृश्यके अधूरेपनको सपूर्ण कर रही थी।

मीनाक्षी— [कुछ विस्मयसे] सच? आपको तो मेरी साडीका रग तक याद है!

चित्रकार— इसमे अचम्भेकी तो कोई बात नही। जितनी स्त्रियाँ वहाँ उपस्थित थी, उन सबमेंसे आप हीकी छबि अनुपम थी।

मीनाक्षी— [अविश्वाससे] आप मुझे बनानेकी चेष्टा तो नही कर रहे है ?

चित्रकार— नही, कदापि नही, मै एक कलाकार हूँ, और कलाकारका मन व आँखे सदा सौन्दर्यको ढूँढते रहते है। वही उसकी प्रेरणा है, उसीसे उसे उत्साह मिलता है। आपके गलेमे छोटे-छोटे मोतियोकी नाजुक-सी माला कैसी शोभा दे रही थी ! यह क्या शब्दोमे बखान करनेकी बात है ? मै चाहता हूँ कि आप मुझे अपना चित्र बनानेकी अनुमति दे।

मीनाक्षी— [हँसती है] आप तो ऐसे बाते करते है मानो आपको कोई मोना लिजा मिल गई हो। आश्चर्य तो यह है कि आप गले की माला व पैरोके जूतो जैसी छोटी-छोटी चीज़ो पर भी ध्यान देते है। मेरा तो विचार था कि पुरुषोंको इन बातोमे रुचि ही नही होती—कमसे कम उन पुरुषोको जिन्हे मैं जानती हूँ। मेरे पति तो . . .

चित्रकार— अरे, इन पतियोका ज़िक्र न कीजिए। मुझे तो इस कौमसे चिढ है।

मीनाक्षी— आप शायद अविवाहित है। घरमे पत्नी आने दीजिए, आपके विचार बदल जायँगे।

चित्रकार— विवाह ? भगवान् बचाये। यह पति-पत्नीका झझट . . .

मीनाक्षी— मेरे विचारमे तो आप बहुत नेक पति बनेगे।

चित्रकार— नेक पतियोसे तो मै कोसो दूर भागता हूँ। मेरे दिलमे तो केवल उन्ही पतियोके लिए श्रद्धा है जो मजेमे पीते है, खाते है, घर पहुँचकर पत्नीको पीट भी लेते है, और फिर उसे बडे प्रेमसे मनाते है, छोटी-बडी चीज़े भेट करते है, अपने अपराधो के लिए क्षमा माँगते है। इससे घरमे कुछ चहलपहल रहती

है, वरना आम घरोमे तो पति-पत्नी यो रहते है जैसे कोई मुसीबतका मारे कैदकी सजा भुगत रहे हो ।

[मीनाक्षीको कुछ गुदगुदी-सी होने लगती है ।]

चित्रकार— क्षमा कीजिए, मै बहुत निस्सकोच होकर बाते कर रहा हूँ । किन्तु आप तो स्वय कलाकार है । कलाकारके हृदयकी धडकनको समझती है । हॉ, कुछ सिगरेट होगे आपके पास ?

मीनाक्षी— मेरे पति तो पीते नही, परन्तु मेहमानोके लिए है । [उठकर सिगरेट लेने जाती है ।]

चित्रकार— तब तो काफी पुराने और बासी होगे । अच्छा, लाइए तो ।

[मीनाक्षी टिन लाकर उसके पास रख देती है, चित्रकार एक सिगरेट निकाल कर सुलगाता है और दीयासलाईकी तीलीको फूँक कर लापरवाहीसे मेज पर फेंक देता है । मीनाक्षी उसके हावभाव देख मुसकराती है ।]

चित्रकार— बहुधा लोग कहते है कि कलाकार पागल होते है । उलटी-सीधी बाते करते है, हवाई किले बनाते है । परन्तु मै उनमेंसे नही हूँ । इसीलिए मै आपसे साफ-साफ बात करना चाहता हूँ ।

मीनाक्षी— कहिए ।

चित्रकार— मै आपके रूप और सौन्दर्यसे इतना प्रभावित हुआ हूँ कि जब तक मै आपका चित्र न बना लूँगा मुझे चैन नही मिलेगा । इस छविको मै कैनवस पर उतार कर अमर बना देना चाहता हूँ । ऐसा चित्र बनेगा कि दुनिया याद करेगी । इसीलिए मैंने आज यहॉ आनेका साहस किया है ।

मीनाक्षी— [हैरानीसे] आप मेरा चित्र बनाना चाहते है ?

चित्रकार— हॉ, आपका । वही मेरा सबसे उत्तम चित्र होगा । क्या आपको अभी तक किसीने यह नही बताया कि आपमे कितना आकर्षण है !

मीनाक्षी— [विनीत भावसे] आपको मुझसे अधिक सुन्दर कई और युवतियाँ मिली होगी । उनका चित्र बनाइए ।

चित्रकार— आप नही जानती, जब किसी कलाकारको मनचाही प्रतिमा मिल जाती है तो उस पर क्या बीतती है ! वह उसे छोड नही सकता, उसके लिए भटकता फिरता है ।

मीनाक्षी— चित्रकारोके मौडल तो कम उमरकी तरुणावस्थाकी लडकियाँ होती है, न कि मेरी जैसी अधेड ।

चित्रकार— अधेड ? आप अपने आपको अधेड कहती है ? मै कहता हूँ कि जो मधुरता, जो आकर्षण बाईस तेईस वर्षकी युवतीमे होता है वह किसी तरुणीमे नही हो सकता । कवि लोग भले ही उसकी यशगाथा गाते रहे—तरुणियोमें न तो वह चतुराई होती है, न वह जाग्रति जो एक बाईस-तेईस वर्षकी युवतीमे । पचीस वर्षसे ऊपर भी वह सौन्दर्य नही रहता । वे कुछ ज्यादा ही बुद्धिमान तथा कठोर हो जाती है । आप ही की उमर सर्वसपूर्ण है, अन्यून हे । वताइए, आप मेरे स्टूडियोमे कब आ सकेगी ?

मीनाक्षी— मै वादा नही कर सकती । पहले तो मुझे अपने पतिसे पूछना होगा कि आप मेरा चित्र बना भी सकते है या नही । यदि वह मान भी जायँ तो भी मेरा स्टूडियो जाना तो असम्भव है। आप हीको यहाँ आना पडेगा ।

चित्रकार— यहाँ चित्र कैसे बन सकता है ? कोई फोटो तो नही उतारना जो पाँच मिनिटमे काम हो जायगा । घरमे कई प्रकारकी बाधाएँ होगी, आपके मिलनेमिलानेवाले आते रहेगे। सम्भव है आपकी सास ही आ टपके और मुझे बैठा देख आपसे घूँघट निकालनेको कहे । [मुसकराता है ।]

मीनाक्षी— [टालते हुए] आप फिर किसी समय आएँ तो इस विषय पर ब्योरेवार बातचीत करेगे ।

चित्रकार— किन्तु आप अपना चित्र तो बनाने देंगी न ?

मीनाक्षी— कोई ऐसी आपत्ति तो नही होनी चाहिए ।

चित्रकार— [उल्लसित] बहुत कृपा है आपकी । अब मै चलूँ, जाकर बढियासे बढिया रग और कैनवस खरीदूँ । आज ही ले लूँगा—अभी । कल रविवार है । परसो तक कौन प्रतीक्षा करेगा ! [जेबमें हाथ डालता है] अरे, मेरा बटुआ कहाँ है ? ट्राममे तो नही निकाल लिया किसी ने ? क्या आप कुछ रुपये दे सकेंगी ? कितना बुरा मालूम होता है इस तरह माँगना । न मालूम आप क्या समझेंगी । मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ ।

मीनाक्षी— कितने रुपये चाहिए आपको ?

चित्रकार— यही कोई तीस पैंतीस ।

मीनाक्षी— [हैंडबैग खोलकर उसमेंसे निकालते हुए] इतने तो इस समय नही है मेरे पास । यह ले लीजिए । [दस दसके दो नोट देती है ।]

चित्रकार— यही बहुत है काम शुरू करनेके लिए । अच्छा, तो फिर आप से शीघ्र ही भेट होगी । [जाता है]

[चित्रकारसे अपने रूपरगकी प्रशसा सुन मीनाक्षी पुलकित भावसे हैंडबैग खोलती है, और शीशा निकाल कर बाल सँवारती है, सामने रखे फूलदानमेंसे एक गुलाबका फूल तोड कर बालोमें लगाती है । इतनेमें राकेश आता है ।]

राकेश— [फाइलें मेज़ पर रख कर, कोट उतार कुरसीके पीछे टाँगता है] हैलो !

मीनाक्षी— जानते हो आज क्या हुआ ?

राकेश— [उत्सुक होकर] क्या ?

मीनाक्षी— अच्छा, वह पीछे बताऊँगी, पहले तुम यह बताओ कि तुम्हे आज नई चीज क्या दिखाई दे रही है ?

राकेश— हूँ हूँ तुम्हारी साड़ी नई है ।

मीनाक्षी— नही, यह तो छ साल पुरानी है ।

राकेश— और तो मुझे विशेष कोई चीज नही दिखाई दी ।

मीनाक्षी— [निराश सी, बालोमें लगे हुए फूलकी ओर सकेत कर] यह देखो ।

राकेश— क्षमा करना, मैने उस ओर ध्यान ही नही दिया ।

मीनाक्षी— ठीक है, आपको कहाँ फुरसत है मेरी ओर देखने की ! आप की तो अपनी ही दुनिया है ।

राकेश— नही, नही, यह बात नही । अच्छा, बताओ तुम आज दोपहर को सोई कि नही ?

मीनाक्षी— राकेश, कल हम चित्रकला प्रदर्शनी देखने गये थे न, वहाँका एक चित्रकार अभी अभी मुझसे मिलने आया था । वह मेरा चित्र बनाना चाहता है ।

राकेश— क्या नाम है उसका ?

मीनाक्षी— नाम तो मैने पूछा नही । वह इतना उत्सुक था चित्र बनानेको कि क्या कहूँ ! उसे मेरी साडीका रग, किनारीका डिजाइन, यहाँ तक कि मेरी चप्पलके दो स्ट्रैप थे या तीन, सब कुछ याद था । और एक आप है कि कभी इतना तक नही कहा कि वह साडी पहन लो, तुम पर अच्छी लगती है । आपको तो यह भी नही मालूम कि मेरे पास क्या है क्या नही ।

राकेश— सम्भव है और लोगोको इन बातोमे अधिक दिलचस्पी होती होगी । मैने भी कभी तुम्हे किसी बातसे रोका नही । तुम्हारा जो जी चाहे खरीदो, जो मनमे आये बनाओ, पहनो ।

मीनाक्षी— ठीक है । परन्तु यही तो सब कुछ नही, पत्नीके प्रति ऐसी उदासीनता

राकेश— [बात बदलनेकी चेष्टा करते हुए] एक प्याला चाय दे दो । सीधा दफ्तरसे चला आ रहा हूँ ।

मीनाक्षी— बस, मुझसे तो आपका इतना ही सवन्ध है ! चाय दे दो . नाश्ता बना दो. खाना तैयार कर दो. बटन लगा दो .

राकेश— तुम तो यो ही नाराज हो रही हो। न मालूम यह चित्रकार क्या क्या कहकर तुम्हे बहका गया है। मुझे तो इन लोगो पर रत्ती भर भी विश्वास नही। झूठे होते है, मक्कार— सारेके सारे। तुम्हारी इच्छा हो तो अपना चित्र बनवा लो, परन्तु उसकी बातोमे मत आना।

मीनाक्षी— फिर वही बात ! मै कहती हूँ आपको हो क्या गया है ? किसीसे जरा-सी बात की नही कि आपको ईर्ष्या होने लगती है। आखिर मै भी तो इन्सान हूँ, मेरा भी जी चाहता है मिलनेमिलानेको। किन्तु आप है कि बस चाहते है सारे दिन घरमे बैठी चक्की पीसा करूँ। घर न हुआ एक कैदखाना हो गया। आपकी समझमे क्यो नही आता कि स्त्रियोके भी दिल होता है, उनकी भी कुछ कलात्मक प्रवृत्तियाँ होती है, उनका भी मन चाहता है कि कभी-कभी रोज-रोजकी दिन-चर्यासे कुछ देरके लिए छुटकारा पायँ।

राकेश— [मुसकरा कर] यह चित्रकार तो काफी प्रभावशाली मालूम होता है। इतनी जल्दी असर हो गया !

मीनाक्षी— [व्यग्यसे] मेरा अपना तो न दिल है न दिमाग—लोगोके बहकानेका ही असर है।

राकेश— देखो, मीनाक्षी, मै इन लोगोको तुमसे ज्यादा पहचानता हूँ। मुझे दुनियामे काफी धक्के खाने पडे है, तरह-तरहके लोगोसे टक्कर लेनी पडी है, इसलिए तुम्हे सचेत करना चाहता हूँ। यह ठीक है कि कलाकार भावुक होते है, प्रकृति और प्रेमके बहुत बढिया चित्र बनाते है, इन चीजोको महत्त्व भी अधिक देते है। परन्तु वास्तवमे इनके लिए भी रोजी कमानेका प्रश्न उतना ही गभीर है जितना औरोके लिए। ये भी उतने ही

स्वार्थी है जितने अन्य लोग। इसलिए तुम्हे सावधान करना चाहता हूँ। कुछ रुपये तो नही ले गया तुमसे ?

मीनाक्षी— रुपये तो ले गया है, पर उनसे क्या !

राकेश— कितने ?

मीनाक्षी— बीस।

राकेश— अब वह जायेगा किसी होटलमे, शराब पियेगा, सिगरेट फूँकेगा और फिर आ जायगा खाली हाथ।

मीनाक्षी— आप तो हरएक पर सदेह करते है। किसीको कभी सच्चा भी कहा है आपने ! आपके पैसे है। मैने आपसे पूछे बिना उसे दे दिये, इसीलिए आप ऐसा कह रहे है !

राकेश— [अधीरतासे] मुझे बीस रुपयोकी चिन्ता नही। तुम जितना चाहो, जैसे चाहो खर्च कर लो। परन्तु यो कोई झांसा देकर ले जाय तो बुरा मालूम होना ही है। खैर, जो हो गया सो हो गया। छोडो उस बातको। मै जरा मुँह हाथ धो लूँ। [जाता है]

[निराशा, खीझ और गुस्सेमें भरी हुई मीनाक्षी उठ कर जाती है और बालोंमेंसे फूल निकाल कर रद्दी कागजोंकी टोकरीमें फेंकने लगती है कि साधना हाथोंमें एक बड़ा-सा लिफाफा लिये आती है।]

मीनाक्षी— अच्छा आदमी है। खूब दिलचस्प बाते करता है। इतनी प्रशसा की मेरी कि और कोई होता तो सोचती मुझे बना रहा है। साधना, किसी कलाकारसे यो बाते करनेका आज पहला अवसर था। मुझे तो अच्छा लगा। कुछ लगी-लिपटी नही, दुनियाकी परवा नही। समाजके जिन बधनोमे हम जकडे हुए है, उनसे उसको कोई वास्ता नही। उससे मिलकर ऐसा मालूम हुआ जैसे बद कमरेमे स्वच्छ और ठढी हवाका झोका आया हो।

साधना— [**भावुकतासे**] तुम ठीक कहती हो, मीनाक्षी। मै जानती हूँ कलाकार कितने विचित्र होते है। कवि, चित्रकार, गाने वाले—कितना आनन्द आता है इनकी बाते सुननेमे! किसी भी सभामे पहुँच जायँ, रौनक आ जाती है। [**गभीरतासे**] मै भी एक कलाकारको जानती थी बबईमे। काफी मित्रता भी थी हमारी। सभव है शादी भी हो गई होती।

मीनाक्षी— सच? फिर क्या हुआ? कहाँ है वह आजकल?

साधना— नही जानती। [**आह भरकर**] जाने दो इस किस्सेको, दु ख होता है।

[**चित्रकार दरवाजा खटखटाता है और अन्दर चला आता है। वह पिये हुए है। नशेमें ज़रा कुछ झूम-सा रहा है।**]

चित्रकार— [**साधनाको देखकर**] तुम? यहाँ?

साधना— [**सहर्ष, दो कदम आगे बढकर**] और तुम? तुम कब आये बबईसे?

चित्रकार— कोई दो तीन महीनेसे यहाँ हूँ।

साधना— क्यो, बबई छोड दिया क्या?

चित्रकार— छोडा तो नही, परन्तु अब बबईमे मन नही लगता। साधना, तुम्हारे चले आनेके बाद मेरे लिए बम्बईमे क्या रखा था!

साधना— और क्या कर सकती थी मै ! जब यह मालूम हुआ कि तुम्हारी पत्नी भी है और दो बच्चे भी

[**मीनाक्षी चित्रवत् खडी इन दोनोकी बातें सुनती है ।**]

चित्रकार— मैं जानता हूँ । परन्तु यदि मैं और लोगोकी तरह पत्नी और बच्चोकी चिन्ता करने लगूँ तो मेरी कलाका क्या हो ? कला ही तो मेरा जीवन है । वही मेरी ज़िन्दगीका आधार है ।

मीनाक्षी— आप लोग बैठिए न ।

चित्रकार— क्षमा करना, आज इतने दिनोके बाद साधनासे मिला हूँ कि और सब कुछ भूल ही गया । [**बैठता है, किन्तु बातें साधना ही से किये जाता है**] अच्छा बताओ, तुम क्या करती रहती हो सारा दिन ?

साधना— यह जानकर तुम क्या करोगे ? तुम अपनी सुनाओ, तुम्हारे सब मित्र कहाँ है ? गिरधर, ओम और रतन ? क्या रतनने सीतासे शादी कर ली ?

चित्रकार— तुम तो जानती हो कि कलाकारको व्याहशादीमे कोई रुचि नही होती । वह तो प्रेरणा चाहता है, प्रेरणा ! जहाँ उसे वह मिल जाय, वही दीवाना हो जाता है ।

[**मीनाक्षीको कुछ उपेक्षाका भान होता है । वह उन दोनोका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहती है ।**]

मीनाक्षी— आप रग और कैनवस खरीद लाये क्या ? चित्र बनाना कब शुरू करेंगे ?

चित्रकार— आप चिन्ता न करे, अपना वचन पूरा करूँगा । आपका चित्र अवश्य बनाऊँगा । जैसे ही फुरसत होगी, रग और कैनवस ले आऊँगा ।

मीनाक्षी— [**जैसे आँखोंसे परदा हट गया हो**] जी ?

चित्रकार— [**मीनाक्षीकी बातो पर ध्यान न देकर, साधनासे**] क्या तुम यहाँ कुछ देर ठहरोगी ?

साधना— नही। मै तो इनकी साडियाँ देने आई थी। [लिफाफा आगे बढाकर] यह लो, मीनाक्षी।

चित्रकार— तो चलो कही चलकर बैठेगे। दो चार बाते करेगे। कितनी खुशी हुई तुमसे यो अकस्मात् मिलकर।

[साधना अर्थपूर्ण दृष्टिसे मीनाक्षीकी ओर देखती है।]

साधना— क्षमा करना, मीनाक्षी। मै कल फिर आऊँगी।

[साधना और चित्रकार दोनो उठकर दरवाजेकी ओर जाते है। चित्रकार साधनाके लिए दरवाजा खोल, उसकी कमरपर हाथ रखकर उसे आगेको बढाता है। राकेश कमरेमें प्रवेश करता है और सारी स्थिति भाँप जाता है। चित्रकार और साधना मुड़ कर नमस्कार करते है और चले जाते है। राकेश मीनाक्षीके पास आकर प्रेमसे उसके कधे पर हाथ रख देता है और फिर मुसकराते हुए फूलदानमेंसे एक फूल निकालकर मीनाक्षीके बालो में लगाता है।]

मीनाक्षी— [उसका हाथ पकड कर] रहने भी दो! आपको तो सदा मजाक ही सूझता है।

[दोनो प्रेमसे एक दूसरेकी ओर देखकर मुसकराते है।]

•

प्रीतके गीत

•

प्रीतके गीत

[बम्बईके एक प्रसिद्ध फिल्म-स्टूडियोमें निर्माताका दफ्तर—दीवारों पर सुन्दर अभिनेत्रियोके चित्र टँगे है । कोनेमे पियानो रखा है—सामने एक बढिया सोफा है । मेजके बायी ओर लाल रगका टेलीफोन रखा है । दाहिनी ओर की दीवारमें एक बहुत बड़ी शीशेकी खिडकी है जिसमेंसे स्टूडियोकी सब काररवाई राकेश साहबको अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे दिखाई देती रहती है ।

राकेश इन्हीं खिडकियोमेंसे स्टूडियोमे उपस्थित नायक-नायिकाओको देखता है । फिर लाउड स्पीकरका स्विच खोलता है, एक स्त्री और एक पुरुषके वादानुवाद करनेकी आवाज आती है । बीच-बीचमें सितार तथा तानपूरेके स्वर ठीक करनेकी आवाज भी है । राकेशचन्द्र क्रोधित हो घण्टी बजाता है । चपरासी आता है ।]

राकेश— [तीखे स्वरमें] म्यूजिक डायरेक्टरको बुलाओ ।

[चपरासी जाता है—डायरेक्टर आता है] माथुर साहब, यह क्या सुबहसे ठुन-ठुन हो रही है ? इसी तरह वक्त जाया होता रहा तो सीन कब तैयार होगा ?

माथुर— सब कुछ तैयार है, केवल एक शब्द जरा खटकता है—तालमे ठीक नही बैठता ।

राकेश— कुछ ही लगा दो, क्या फर्क पडता है ।

माथुर— ऐसे कैसे हो सकता है—गीतका सारा समतोल ही बिगड जायगा ।

राकेश— तो ला – ला – ला . ही लगा दो ।

माथुर— यदि ला–ला–ला लगानेसे काम चल सकता तो मै अब तक काहेको अपना सिर खपाता ।

राकेश— आप व्यर्थ ही समय नष्ट कर रहे है—मै अभी 'बादिल तेलगानी' को टेलीफोन करता हूँ। वह आते ही ठीक शब्द जुटा देगा [टेलीफोन उठाता है—माथुरसे] तुम जाओ, दूसरे गीतोकी रिहर्सल करवाओ।

[माथुर जाता है—राकेश टेलीफोनके नम्बर घुमाता है] उस्ताद साहब है ?

. मै राकेशचन्द्र बोल रहा हूँ कहाँ रहते है आप, इधर कई दिन से देखा ही नही आइए न जरा हाँ, कुछ थोडा-सा काम भी है—एक गीतमे एक शब्द कुछ ठिकानेसे नही बैठता मोटर अवश्य जिस समय कहिए हाजिर है—किस समय भेजूँ अच्छा पहुँच जायगी अवश्य ।

[टेलीफोन रख देता है—कोई दस सेकण्ड तक स्टूडियोसे पूर्ण शान्ति रहती है। हालॉकि किसी भी फिल्म-स्टूडियोके लिए यह विचित्र घटना है। फिर धमाकेके साथ दरवाजा खुलता है और एक युवती, जिसे निर्माता साहब कुछ ही दिन हुए अपनी नई फिल्मके लिए ढूँढ कर लाये हैं, अन्दर आती है और रोना शुरू कर देती है]

राकेश— [उठ कर उसके समीप जाते हुए] क्यो, किरण, क्या हुआ ?

किरण— आप मुझे ही गानेको क्यो विवश करते है, जब आपके पास अच्छे अच्छे निपुण 'प्ले-बैक" (Play back) गाने वाले है ।

राकेश— [सहानुभूति तथा उत्साह प्रकट करते हुए] कौन-सा ऐसा गानेवाला है जिसकी आवाज तुम्हारी जैसी सुरीली हो ? तुम इतना अच्छा गाती हो, आवाज इतनी मधुर है कि कोयल हो—सिर्फ जरा सी कसर है—वह भी ठीक हो जायगी—फिर देखना, तुम सब नायिकाओसे बढ़कर नम्बर एक न हो जाओ तो मेरा नाम राकेश नही ।

किरण— [आँसू पोछकर] परन्तु जिस तरीकेसे आपके कपूर साहब सिखाते है उस तरह से तो मैं कभी न सीख सकूँगी तोबा !

जान खा गये एक स्वरके लिए—कहते है तालमे नही है। हजारो वार गवाया, अव भी लय ठीक नही है। नही ठीक होती तो मै क्या करूँ? लिखनेवालेकी भी तो गलती हो मकती हे।

राकेश— हाँ, हाँ—क्यो नही। इस प्रकार व्यर्थ ही सतानेका कोई मतलव नही, ठहरिये मै अभी वुलाता हूँ कपूरको।

[वुलानेसे पहले कपूर स्वय ही चले आते है]

राकेश— [कपूरको कहनेका कुछ अवसर दिये विना ही] क्यो जी, क्या शिकायत है आपको इनके गानेसे ?

कपूर— अभ्यासकी वहुत आवश्यकता है, स्वर और तालका ज्ञान अभी ठीक नही है—और अभ्यासके मामलेमे आप वहुत सुस्त हैं।

किरणलता— सुवह सात वजेसे निरन्तर गाती चली जा रही हूँ, और मालूम नही अभ्यास किसे कहते है—कोई मशीन तो नही हूँ—मेरा तो गला भी खुश्क हो गया है

कपूर— करीव-करीव ठीक हो ही गया है अव तो, केवल दूसरी लाइनमे सम नही ठीक आ रहा—तीसरीमे सुर तीव्र पर नही पहुँचता।

राकेश— गीत किरणकी आवाजके लिए होना चाहिए, किरण गीतके लिए नही। यदि तीसरी लाइन ठीक नही वैठती तो सारी लाइन ही निकाल दो।

कपूर— इसमे तो गीतका सारा मतलव ही जाता रहेगा।

राकेश— मतलवको कौन पूछता है,—श्रोता तो 'ट्यून' पर जाते है—'ट्यून' पर!

कपूर— यदि आपको यही विश्वास है तो फिर आप सव समझते हैं—मेरी क्या जरूरत है? गीत लिखने वालोंकी क्या आवश्यकता है?

राकेश— [गुस्सेमें] हाँ, सब जानता हूँ, गीत लिखनेवालोको भी और सिखानेवालोको भी—आप लोग समझते ही क्या हैं अपने आपको ? आप जैसे मास्टरको चार-चार आनेमे खरीद सकता हूँ ।

कपूर— परन्तु मेरी भी तो सुनिए ।

राकेश— सुन लिया बहुत अब जाओ और जैसे किरण गाना चाहे वैसे ही सुरमे साज मिला दो—समझे ! [किरणकी ओर देख मुसकराता है—वह उठकर जाती है—उसके पीछे-पीछे कपूर साहब चल देते हैं]

राकेश— [अपने आपसे] कैसी सुन्दर है—हँसती है तो जैसे मोती गिरते हो—एक बार यह पिक्चर बन जाय तो देखो—सब इसीके ऊपर लट्टू हुए फिरेंगे ।

[चपरासी आता है और झुक कर दरबारी ढगसे फर्शी सलाम करता है]

राकेश— क्यो, क्या है ?

चपरासी— साहब एक कवि आपसे मिलना चाहते है ।

राकेश— अच्छा, अच्छा ! कवि महाशयसे कह दो कि इस महीनेके लिए हमारे पास गीतोकी सामग्री काफी है—चाहे तो अगले महीने आवे ।

[परन्तु कवि महाशय निर्माताओंको कुछ अच्छी तरह जानने-पहचानने वाले मालूम होते हैं; क्योंकि वह आज्ञाकी प्रतीक्षा किये बिना ही अन्दर चले जाते हैं]

कवि— [हाथ जोड प्रणाम करते हुए] धृष्टताके लिए क्षमा कीजिए साहब—परन्तु मैंने यह दो चार गीत तो लिखे ही केवल आपके लिए है ।

राकेश— लेकिन कचन साहब, अभी तो हमारे पास बहुत पडे हैं ।

कंचन— तो मैं आपसे कोई लेनेको तो नही कह रहा, मैं तो केवल दिखानेको आया हूँ—आपकी अनुमति चाहता हूँ, क्योंकि

आपही को इन चीजोकी परख है। और फिर कभी इसे किरणलता गाये तो क्या कहना

राकेश— [प्रशसासे प्रभावित होकर] कैसे गीत हे आपके पास ?

कचन— जैसे आप चाहे—जीवनके गीत, मरणके गीत, प्रीतके गीत, शोकके गीत, मिलनके गीत, वियोगके गीत, अँधेरी रातके गीत, चाँदनीके गीत

राकेश— कचन साहव, तो इन्हे दीजिएगा किस भाव ?

कचन— आपको लेने कितने है ?

राकेश— यह तो गीतकी कीमत पर निर्भर है ?

कचन— आपसे झगडा थोडे कर सकता हूँ—चलिए ३,६०० रुपया दीजिए एक दर्जनका।

राकेश— यह तो तीन सौ रुपया एक गीतका हुआ ? कचन साहव यह तो मुनासिव नही।

कचन— आप तो जानते है कितनी मेहनतसे लिखता हूँ और फिर सवसे पहले आपके पास लाता हूँ।

राकेश— मै तो एक सौ रुपयेसे एक पाई भी वढकर नही दे सकता एक गीतके लिए। यह भी केवल आपको वैसे तो हमारे पास गीतोकी भरमार है।

कचन— एक सौ रुपया एक गीत—आप मजाक करते है राकेश साहव—कदाचित् आपका यह मतलब नही।

राकेश— नही, सच कहता हूँ, इससे अधिककी गुजाइश नही है।

कचन— चलिए ३,००० दीजिए और दर्जन पूरी ले लीजिए।

राकेश— कह दिया १,२००।

कचन— कुछ तो वढिए।

राकेश— चलो १,३००—वस, अव एक पैसा ज्यादा नही।

कंचन— तीन हज़ारसे एक पाई कम न लूँगा।

राकेश— [हँसता है] यह अच्छा सौदा रहा—आप मेरे दोको चार समझिए।

कंचन— कवि लोग भूखे मर जायँगे यदि आप ऐसी ही सख्ती बर्तते रहे तो ।

राकेश— भूखे ! भूखे कहाँ ? आज-कल तो गीतोका बिजनेस बहुत अच्छा है । जिसको देखो बम्बई चला आ रहा है ।

कंचन— बेचने ही तो आये है, चलिए तीन हजार दीजिए आप तो हमारे अन्नदाता है । हमारी कहाँ गुजर हो सकती है आपके बिना ।

राकेश— [चापलूसीसे कुछ फिसलकर] अच्छा चलिए—आप ही खुश रहिए १,५०० देता हूँ । [कचन कुछ कहने लगता है, परन्तु राकेश रोक देता है] बस बस अब रहने दीजिए और बहस और देखिए अभी इनका किसी और कम्पनीसे जिक्र न कीजिएगा ।

कंचन— यह भला कैसे हो सकता है—आपसे वचन करके औरोसे सौदा करूँ ? अच्छा तो दिलाइए कुछ पैसे मुझे तो अभी मकानका किराया भी देना है । [राकेश मेजका खाना खोल कर "चेक बुक' निकालता है]

जी नही, चैक देकर मुझे इनकमटैक्सके झगडेमे न डालिये चैक ही देना है तो १,७५० रुपयेका दीजिए ।

राकेश— नकद इस समय नही है । कल ले जाना ।

कंचन— खाली हाथ कैसे जाऊँ ! जितने है उतने तो दीजिए बाकी कल ले जाऊँगा ।

राकेश— [जेबसे निकाल कर गिनते हुए] यह लो १०० तो लो— शेष फिर ।

कंचन— धन्यवाद, नमस्कार !

[कचन जाता है—राकेश सिगरेट निकाल कर सुलगाता है । दरवाजे पर दस्तक होती है और बादिल तेलगानी, लम्बे-लम्बे पट्टे, छोटी-छोटी दाढ़ी, दुबला-पतला शरीर, ढीला कुरता पहने मुँहमें सिगरेट लगाये, प्रवेश करते है]

राकेश— [कुर्सी परसे उठकर हाथ मिलाते हुए] आइए बादिल साहब, बहुत देरसे प्रतीक्षा कर रहा हूँ आपकी

बादिल— हाजिर हूँ—कहिए मेरे लायक क्या खिदमत है ?

राकेश— यह गाना है एक—इसमे यह 'सूरत' शब्द नही बैठता .. इसको बदलना चाहता हूँ ।

बादिल— इसमे क्या मुश्किल है ? अभी पॉच मिनटके अन्दर अन्दर हो जाता है ।

राकेश— आप जैसे गुणी पुरुषसे यही आशा है ।

बादिल— शुक्रिया, मगर रुपये लगेगे सौ !

राकेश— सौ ! एक शब्दके लिए ?

बादिल— जी हॉ ।

राकेश— इतनी सी बातके लिए १०० ! गजब करते है आप ?

बादिल— हजरत विलायतमे डाक्टर है, ऑखके आपरेशनके ५,००० से १०,००० रुपया तक ले लेते है । अब आप कहेगे जरा सी ऑखका ! मेहनत तो उतनी ही पडेगी चाहे सारा गीत बदलनेको कहिए, चाहे एक लाइन, चाहे एक शब्द ।

राकेश— फिर भी, सौ रुपया एक शब्दके लिए ।

बादिल— मै भी तो शब्दका आपरेशन ही करने वाला हूँ—हुजूर आप का दिया खाते है .

राकेश— नही साहब, हमको आपसे काम, आपको हमसे काम यह लीजिए साहब [जेबमेंसे ५० रुपये नकद निकालकर उसके हाथमें रखता है]

बादिल— कहॉ है गीत दीजिए [राकेश एक कागज उसके हाथमे देता है—देखकर] यह किस अनाडीने लिखा है न काफिया, न रदीफ, न सुर, न ताल कितने पैसे दिये आपने इसके लिए ?

राकेश— वह तो समझिए उसका कुछ पहले जन्मका देना था जैसे—

बादिल— किसने बेचा यह आपके पास ?

राकेश— मै तो उसे जानता भी नही घुडदौड पर मिला—पहली बार .

बादिल— जीते हुए होगे आप—

राकेश— कुछ यही समझो ।

बादिल— है तो यह सब हमारे अपने भाई ही—कहना अच्छा नही दिखता लेकिन घुडदौड पर हो, या कोई मुशायरा हो, या कोई पीने पिलानेकी महफिल हो—ऐसी जगहो पर इन गीत बेचनेवालोका एतबार नही किया जा सकता । . अरे, इससे अच्छा गीत तो मेरा खानसामा लिख लेता है—यह गीत तो ऐसे नही चल सकता ।

राकेश— देखिए बादिल साहब मै पैसे दे चुका हूँ, अब और नही दे सकता . इसका प्रयोग करना ही होगा . आप इस शब्दको बदल दीजिए क्या मालूम यही गाना चल जाय, मेरा अपना अनुभव तो यही कहता है वह गाना जिसे हम बेढगा कहकर निकाल देना चाहते थे, बच्चे-बच्चेकी जवान पर ऐसा चढा कि हर गली, हर कूचे, हर सडक पर कई महीनो तक सुनाई देता रहा ।

बादिल— जैसे आपका हुक्म । गल्तियाँ बताना मेरा फर्ज था वह मैने कह दिया । आप इसे ही ठीक कराना चाहते है तो यही सही—मै इसे लिये जाता हूँ, सात वजे तक मँगवा लीजिए ।

राकेश— अच्छा !

[जाता है । चपरासी एक परची लेकर आता है]

राकेश— [सोचते हुए] गगाप्रसाद ! . पहले तो नही सुना कभी अच्छा देखते है, आज कवियोका ही दिन मालूम होता है [चपरासी से] वुलाओ उन्हे ..

[एक शर्मीला-सा सीधा सादा युवक, मामूली कपड़े पहने अन्दर आता है]

राकेश— [उसे ऊपरसे नीचे तक परखते हुए] आप कविता लिखते है क्या ?

गगाप्रसाद— जी हाँ, प्रयत्न तो करता हूँ, कुछ लिखा भी है, एक दो कवि-सम्मेलनमे भी पढी है, लोगोके पसन्द भी आयी, पत्रोने छापी भी—परन्तु कुछ पैसे-वैसे तो मिले नहीं—कविता लिखने और जीविका कमानेमे जैसे कोई जोड न हो। कुछ मित्रोने बताया कि बम्बईमे गीतोकी बडी मॉग है—पैसे भी अच्छे मिल जाते है—इसी उद्देश्यसे यहाँ चला आया

राकेश— किस किसके पास बेचकर आये है अपने गीत ?

गंगाप्रसाद— सीधा आप हीके पास चला आ रहा हूँ।

राकेश— देखे आपकी रचनाएँ ! [**गगाप्रसाद चार पाँच गीत देता है। राकेश पढता है—प्रभावित होता है, परन्तु अपने भाव छिपाये रखनेकी कोशिश करता है**] देखिए कवि महाशय, मै आपकी कठिनाइयॉ समझता हूँ—कलाकारो का जीवन कैसा कठिन होता है इसका भी मुझे आभास है—परन्तु जब तक यह गीत गाकर तथा बजाकर न देख लिये जायँ, इनको स्वीकार करनेमे असमर्थ हूँ। बुरा न मानिये, मै भी विवश हूँ [**घण्टी बजाता है—चपरासी आता है**] देखो, माथुर साहबको बुलाओ।

चपरासी— [झुककर] बहुत अच्छा हुजूर !

[चपरासी जाता है]

राकेश— [कविसे] मैने अपने म्युजिक डायरेक्टरको बुलाया है—उनको आपके गीत दिखाता हूँ। वह इस पियानो पर इन्हे बजाकर देख लेगे—आप चाहे तो तब तक हमारा स्टूडियो देखिए—वहाँ रिहर्सल हो रही है। आपको कुछ अन्दाजा हो जायगा कि हमारा फिल्म-ससार कैसे चलता है .

[माथुर साहब आते हैं—पीछे-पीछे चपरासी]

गंगाप्रसाद— [झेंपते हुए] आपको पसन्द आया कुछ ?

राकेश— हाँ, अच्छे हैं, परन्तु हमारे मतलबका तो एक ही दिखता है।

गंगाप्रसाद— बस ! केवल एक ही ?

राकेश— इनमेंसे तो एक ही है—आप अपनी और रचनाएँ भी लाये—उनमेंसे देखेंगे। सम्भव है कुछ और हमारे कामकी निकल आवे।

गंगाप्रसाद— अवश्य लाऊँगा—आपकी कृपा है—इसका क्या देंगे आप ?

राकेश— आप ही कोई उचित मूल्य बताइये।

गंगाप्रसाद— आप नित्य खरीदते हैं, आपको इन चीजोंकी परख है—आप ही कहिए।

राकेश— २५ रुपये।

गंगाप्रसाद— [अकस्मात् चोट खाकर] पच्चीस ? मुझे तो कहा गया था कि एक भी गीत चल जाय तो हजारों रुपये मिल सकते हैं।

राकेश— हो सकता है—परन्तु इसके नहीं।

गंगाप्रसाद— [खिन्न होकर] इतनेमें तो नहीं दे सकता।

राकेश— [साधारणतया] जैसी आपकी इच्छा—मैंने तो सोचा था आप पहली बार हमारे पास आये हैं और पहली बार बम्बईमें—आपको निराश नहीं करना चाहिए।

गंगाप्रसाद— यह तो आपकी कृपा है—परन्तु पच्चीस रुपयेमें भी किसीको गीत खरीदते सुना आपने ? आप तो इतने बड़े सेठ हैं—कमसे कम ५० तो दीजिए।

राकेश— मैंने तो अपनी कीमत बता दी है—आगे आप जैसा चाहें।

गंगाप्रसाद— तो रहने दीजिए।

[जानेको उठता है]

राकेश— [कागज लौटाते हुए] यह लीजिए।

[गंगाप्रसाद कुछ अनिश्चित भावसे दरवाजे पर रुक जाता है—एक पाँव अन्दर एक बाहर—फिर वापस आता है]

रेत और सीमेण्ट

•

रेत और सीमेण्ट

[समय—सध्याके सात वजे। स्थान—ठीकेदारका घर। कमरा वहुत-सी वढिया चीजोसे अटा पडा है, क्योकि ठीकेदार साहवने पिछली लडाईमें खूव रुपया वनाया था। किन्तु इन कीमती चीजोकी ढगसे व्यवस्था नहीं की गई है। कुछ चीजें ऐसी भी हैं जिनसे ठीकेदारकी कलात्मक वृत्तियोके अभावका पता चलता है, जैसे दीवारपर टँगे फिल्मी सितारोके चित्र वा रगदार तस्वीरोवाले कैलेंडर इत्यादि। शारदा सोफेपर बैठी सिलाइयाँ वुन रही है। रह-रहकर खिडकीके वाहर सडककी ओर देख लेती है। कुछ देर वाद एक मोटरका हार्न सुनाई देता है। शारदाके हाव-भावसे मालूम हो जाता है कि यह वही मोटर है, जिसकी वह प्रतीक्षा कर रही थी। वरामदेके सामने मोटर रुकती है और केशवलाल अन्दर आता है।]

शारदा— वहुत देर लगा दी आज आपने ?

केशवलाल— अव दो-चार दिन तो देर ही लगेगी। जव तक इस पुलका उद्घाटन नही हो जाता, सिरपर बोझ-सा लगता है। मैं चाहता हूँ कि यह काम जल्दीसे समाप्त हो,ताकि मैं निश्चिन्त होकर उधर रेलकी लाइनकी ओर ध्यान दूँ। पचास मील लम्वी लाइन बनानेका ठीका ले लिया है, वह कोई एक दिनमे थोडे ही हो जायगा ?

शारदा— [मुसकराकर] मैं भी तो यही चाहती हूँ कि पुलका उद्घाटन निर्विघ्न हो जाय, क्योकि मुझे भी तो अपनी चीजे ख़रीदनी हैं। याद है न अपना वादा ? अव तो समय आ रहा है।

केशवलाल— हाँ, हाँ, याद है। क्या तुम उस वादेको भूलने दोगी ? कहो, क्या लेना है ?

शारदा— हीरेके टाप्स और अँगूठी और उनके वीचमे एक-एक ऐमरल्ड

शारदा— सो तो करना ही होगा ।

केशवलाल— देखो शारदा, एक काम करना । एकआध ड्रिंकके बाद तुम फ्लश खेलनेका प्रस्ताव करना । वे तो कहेगे कि समय बहुत थोडा है इत्यादि, पर तुम अनुरोध करना । [आँख मारकर] मै आज दो-चार सौ रुपया हारना चाहता हूँ ।

शारदा— क्यो, आज फिर ?

केशवलाल— हाँ, बस यह अन्तिम बार है । फिर इसकी आवश्यकता न होगी ।

शारदा— अच्छा !

केशवलाल— यदि वे आज खेलनेके लिए राजी न हुए, तो तुम मिसेज दासको कल सवेरेके लिए पक्का कर लेना । जब आय, तो ब्रिज खेलना और कोई ढाई-तीन सौ तक हार जाना, ज्यादा नही । बाकी फिर सरकारसे पूरे पैसे वसूल कर लेनेके बाद देखा जायगा ।

शारदा— [कुछ अप्रसन्न-सी होकर] जैसा कहो, वैसे तो मैने आज ही वायलका थान भी भेजा है उनके यहाँ ।

केशवलाल— किसके हाथ ?

शारदा— इसी बैरेके हाथ भेजा था ।

केशवलाल— अभी इस बैरेको ऐसा काम मत सौपो । नया आदमी है, न जाने कहाँ-कहाँ क्या-क्या कहता फिरे ।

शारदा— अरे हाँ, इस बातका तो मुझे ध्यान ही नही आया । सौरी । अच्छा उसे समोसोके लिए तो कह दूँ । [आवाज देती है] बैरा !

बैरा— [दूरसे] आया जी ।

[बैरेका प्रवेश]

शारदा— देखो, दो-चार लोग हमसे मिलने आ रहे है । तुम छ बोतल सोडा और बर्फ ले आओ जल्दीसे । [केशवलालसे] क्यो, छ काफी होगी न ?

केशवलाल— हाँ ।

शारदा— जो मटर-आलू उबले पडे है उसके समोसे तलने है । चार-छ पापड भी भून लेना । जब कहूँगी, तो ये चीजे ले आना ।

बैरा— जी हुजूर । [जाता है]

शारदा— देखो, कैसे शिष्टतापूर्वक बात करता है । देखनेमे भी साफ-सुथरा है ।

[बाहर मोटर रुकनेकी आवाज आती है]

केशवलाल— वे आ गये शायद । [उठकर बाहर बरामदेकी ओर जाता है और दास तथा श्रीमती दासको लेकर आता है ।]

शारदा— नमस्कार ।

श्रीमती दास—नमस्कार बहन शारदा । भई वायलके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद । मुझे बेहद पसन्द है । कितनी पतली और हल्की है ।

शारदा— अच्छा हुआ आपको पसन्द आ गई ।

करुणा— उसके पैसे तो बताइए, कितने है ?

[अपना हैंडबैग खोलती है]

शारदा— [उसका हाथ पकडकर] आप बैठिए तो, पैसे कही भागे थोडे ही जाते है ।

करुणा— नही, यह बात ठीक नही । आपने पहले भी एक-आध बार मुझे यूँ ही बातो-बातोमे टरका दिया था ।

शारदा— आप तो लज्जित कर रही है मुझे । क्या मै आपसे जरा-सी चीजके लिए पैसे लेती अच्छी दीखती हूँ ? क्या मेरा इतना भी अधिकार नही कि बच्चोके फ्रॉकोके लिए थोडी-सी वायल भी भेज सकूँ ?

करुणा— आप बहुत तकलीफ करती है ।

शारदा— इसमे तकलीफ कैसी ? अच्छा, आप यह बताइए कि आप पिएँगी क्या ? क्यो दास साहब, आप ?

केशवलाल— [हँसकर]—हम लोगोको तो पूछनेकी जरूरत नही, मिसेज दाससे पूछिए ।

करुणा— मेरा भी आपको पता ही है—वही ताजा नीबू सोडेके साथ ।

शारदा— [बैरेसे]—पहले सोडा, बर्फ और ह्विस्की दे जाओ । फिर दो गिलास सोडा और उसमे ताजा नीबू मिलाकर लाओ । [करुणा] थोडी-सी चीनी तो डाल दे न ?

करुणा— हाँ, मगर बिल्कुल थोडी-सी ।

शारदा— [बैरेसे]—जाओ, तुम यह ले आओ । और हरीसे कहना ज़रा गरम-गरम समोसे बनाय ।

करुणा— नही, समोसे रहने दीजिए । हमे खाना खाने बाहर जाना है ।

शारदा— एक-आध टुकडा ही सही । क्यो दास साहब ?

दास— इस घरमे बने समोसेके लिए तो मै कभी भी ना नही कर सकता । [केशवलालसे] मिनिस्टरके आनेकी तारीख तो पक्की हो गई है । सत्ताईसको सुबह आयँगे और अगले दिन शामको लौट जायँगे । सिन्हाका भी तार आया है । अब तो प्रोग्राम बनाना-भर बाकी है ।

करुणा— शुक्र है भगवान्का कि यह काम समाप्त हो रहा है । काम था कि एक मुसीबत थी ! ज्यो सवेरेसे शुरू होता था, तो बस सारा दिन काम, काम, काम ! न इन्हे अपनी सुध थी, न घरकी । मेरे तो नाकमे दम कर रखा था ।

केशवलाल— सच कहती है आप, इतना काम किया है दास साहबने कि क्या कोई इजीनियर करेगा !

दास— भाई, तुम्हारे सहयोगसे ही तो सब-कुछ हो सका है ।

केशवलाल— यह तो आपकी कृपा है । हमे तो केवल काम करना था, सारी जिम्मेदारी तो आपकी ही थी । जिस चतुराईसे आपने इसे निभाया है, सब जानते है । इसीलिए तो काम नियत समयसे तीन महीने पहले ही समाप्त हो गया !

[बैरा चाँदीकी ट्रेमें पीनेकी चीजे लेकर आता है। करुणा और शारदा अपना-अपना गिलास उठा लेती है।]

दास— [ह्विस्कीकी बोतल देखकर]—स्काच-क्रीम! अरे दोस्त, यह कहाँसे मार लाये? [गिलासमें डालते हुए] इसे तो आजकल देखना ही दुर्लभ हो गया है!

केशवलाल— [अपना गिलास भरकर]—आपके लिए तो चीज अच्छी ही चाहिए।

दास— आपका तो रसूख इतना है कि न-जाने कहाँ-कहाँसे कौन-कौन-सी चीज ले आते है!

केशवलाल— आपकी कृपासे इस नाचीजके काम हो ही जाते है। कहिए, आपको भी मँगवा दे?

दास— नेकी और पूछ-पूछ?

केशवलाल— जितनी चाहे! अगले हफ्ते तक आ जाय, तो ठीक है न? एक बोतल चाहिए, तो अभी है मेरे पास।

दास— किन्तु लूँगा एक शर्तपर—पैसे अभी ले ले। मै जानता हूँ कि पैसेके मामलेमे तुम बहुत लापरवाह हो। मेरी मोटर के लिए जो टायर मँगवाकर दिये थे, उसके पैसे भी अभी तक नही बताये।

केशवलाल— पैसेकी बात करके लज्जित न किया करें मुझे। जहाँ पैसेका सवाल आया, वहाँ मित्रता नही रहती। आपके हमारे सम्बन्ध ऐसे नही, जहाँ पाई-पाईका हिसाब करना ऐसा आवश्यक हो।

शारदा— [बैरेसे, जो अभीतक वही खडा है]—देखो, तुम ये चीजे मेज पर रख दो और कुछ खानेको ले आओ।

बैरा— बहुत अच्छा हुजूर। [जाता है]

करुणा— सच कहती हूँ, खानेके लिए कुछ न मँगाओ। ज़रा भी भूख नही है।

शारदा— मुझे तो आशा थी कि आप खाना हमारे साथ ही खायँगी ।

करुणा— क्या करे, लाचारी है ।

शारदा— तो आइए, एक-दो हाथ ताशके ही हो जायँ ।

करुणा— फिर किसी दिन सही, अभी जरा जल्दी जाना है ।

शारदा— जा लेना, अभी तो आई है आप । [घड़ी देखकर] अभी खानेकी भी तो बहुत देर है ।

केशवलाल— और जब तक आप लोग पहुँचेगे नही, कोई खाना खायगा नही ।

करुणा— अच्छा, जैसी आपकी इच्छा । लेकिन होगे दो-चार हाथ ही, क्योकि हमे जल्दी ही जाना होगा ।

शारदा— [केशवसे]—जरा आलमारीसे ताश और काउण्टर तो निकालिए ।

दास— कैसा चस्का है इन स्त्रियोको भी ताशका !

शारदा— आप भी तो आइए न । दिन-भर काम करके थक गये होगे । इससे मन कुछ बहल जायगा ।

[केशवलाल आलमारी खोलकर ताश निकालता है । सब लोग मेजके आसपास बैठ जाते है । केशवलाल सबको एक-एक सौ रुपयेके काउण्टर गिनकर दे देता है ।]

दास— पूल कितना ? कोई सीमा बाँधो ।

केशवलाल— आप तो जानते है, इस घरमे किसी चीज़की कोई सीमा नही है । जब खेलना ही दस-पन्द्रह मिनट है, तो सीमा कैसी ?

[कुछ देर ह्विस्कीके साथ इसी प्रकारकी बातचीत चलती रहती है । फिर ताशके पत्ते बाँटे जाते है । बैरा खानेका सामान ले आता है और मेजके आसपास घूमकर सबको दिखाता है । इसी बहाने वह सबके पत्ते भी देख लेता है और ताशकी बाजी किस तरह चल रही है यह भी भाँप जाता है ।]

करुणा— [पहली बाजी समाप्त होनेपर शारदासे] मै आपकी जगह होती, तो इस हाथपर इतना न लगाती । आख़िर मामूली सत्तियोका जोडा ही तो है ।

केशवलाल— मैंने इसे कई बार समझाया है, पर जब यह खेलने बैठती है, तो ऐसे आवेशमे आ जाती है कि अपनी सुध-बुध ही भूल जाती है । बैरा, देखो बर्फ और लाओ ।

[बैरा जाता है । नई बाजी शुरू होती है । सब लोग दॉव लगाते हैं और चाल बढ़ती चली जाती है ।]

करुणा— मेरे आठ आये ।

शारदा— मेरे सोलह ।

[बैरा चुपकेसे आता है और उत्सुकतासे बाजीका रुख देखता है ।]

केशवलाल— मेरे बत्तीस ।

दास— यह लो, बत्तीस यह रहे ।

करुणा— आप लोग तो बढते ही चले जा रहे है, मैं तो पास । [पत्ते फेंक देती है]

शारदा— मैं भी पास । [पत्ते रख देती है]

केशवलाल— यह हाथ मुझे या तो राजा बनायगा या रक ! यह लीजिए दास साहब, मेरे चौसठ ।

दास— [मुसकराता हुआ]—तो चौसठ मेरे भी लो । [बैरा बर्फ आगे बढाता है]

केशवलाल— [बैरेसे]—ठहरो जी, यहाँ घमासानका रण पड रहा है । दास साहब, यह रहे चौसठ और

दास— [अपने गिलासमें ह्विस्की तथा बर्फ डालते हुए]—यही बात है, तो लो भई एक और चौसठ और शो करो तो

[केशव पत्ते दिखाता है । पत्ते बिल्कुल मामूली है, इतनी बडी चाल खेलनेके योग्य नही ।]

दास— [अपने पैसे बटोरते हुए]—अच्छा ! इतना ब्लफ [झूठ] खेलते हो तुम ! मै तो डरकर पत्ते फेकने जा रहा था ।

केशवलाल— बैरा, अब लाओ ह्विस्की इधर । जरा गम-गलत करें । कितने बने दास साहब ? बहुत बडा हाथ मारा आपने तो !

दास— [गिनकर] दो सौ अस्सी रुपये ।

केशवलाल— हे भगवान् !

दास— सब लोग अपने-अपने काउण्टर गिनो तो । क्यो ठीक है न हिसाब ?

केशवलाल— जी हाँ, और ३६ मिसेज़ दासके देने हैं । मिलाकर ३१६ हुए ।

करुणा— [कलाईपर बँधी घड़ी देखकर]—है तो बहुत धृष्टता, परन्तु अब हमें चलना चाहिए ।

केशवलाल— चले जाइएगा । और नहीं खेलना चाहते, तो ताश बन्द कर देते हैं । दास साहब, एक ह्विस्की तो और पीजिए । बैरा, साहब को ह्विस्की दिखाओ । [फिर जेबमेंसे रुपये निकालकर दासके हाथमें देते हुए] यह लीजिए तीन नोट—सौ-सौके हैं और दो दस-दसके । ताशका कर्जा तो मेज़पर ही चुका देना चाहिए ।

दास— [अपना बटुआ निकालकर चार एक-एक रुपयेवाले नोट देता है]—मिस्टर केशवलाल, आज तो आप खूब हारे !

केशवलाल— अगली बार कसर निकाल लूँगा !

शारदा— यह सदा हारते ही है, जीते कब है ?

करुणा— यह तो आपके प्रेमकी कृपा है । क्यो ठीक है न !

[सब हँसते है । सहसा किसी मोटरके आनेकी आवाज आती है और सबके कान खड़े हो जाते हैं ।]

शारदा— कौन होगा, इस समय ?

करुणा— आपके और मेहमान आ रहे हैं । हमें अब आज्ञा दीजिए । देर हो रही है । [दाससे] क्यो, चलें ?

दास— चलो, चलते हैं ।

[सिन्हा साहब आते हैं ।]

केशवलाल— बड़ी लम्बी उम्र है आपकी ! अभी-अभी हम सब आपही को याद कर रहे थे ।

सिन्हा— क्षमा कीजिएगा, मैं यूँ ही विना खवर किये चला आया। आपके घरके सामनेसे जा रहा था, जव दास साहवकी गाडीपर नज़र पडी, सोचा जरा इनसे भी मिल लें। [दाससे] उद्घाटनके लिए मिनिस्टर साहव आ रहे हैं, यह तो आपको पता होगा ही।

दास— जी हाँ।

सिन्हा— अव प्रोग्राम क्या वनाना है ?

केशवलाल— [सिन्हाके कन्धोपर हाथ रखकर]—ज़रा वैठिए तो। थोडी-सी ह्विस्को ?

सिन्हा— धन्यवाद, इस समय नही। मुझे वहुत जल्दी कलेक्टर साहवके पास जाना है। उनसे प्रोगाम तय करके आप लोगों से वातचीत करूँगा। मिनिस्टर साहवके लिए एक पार्टी तो सरकारी होगी ही, एक पव्लिककी तरफसे भी हो जाय तो वहुत अच्छा हो।

केशवलाल— आप यह सव मेरी ओर देखकर क्यो कह रहे हैं ?

सिन्हा— [कृत्रिम मुसकराहटसे]—इसलिए कि यहाँकी पव्लिकमें तो सवसे माननीय आप ही हैं।

केशवलाल— ना भैया, मेरे पास इतने पैसे नही है।

सिन्हा— आप जानते है कि सरकारी रुपयेसे तो ऐसी पार्टियाँ हो नहीं सकती। जव ये वडे लोग आ टपकते है, तो आप सवको ही तकलीफ देनी पड़ती है। और करे भी क्या ? जव तक दो-चार ठाठदार पार्टियाँ न हो, तो मिनिस्टर लोग खुश भी तो नही होते।

केशवलाल— सच्ची वात तो यह है भाई साहव कि जव आपके मिनिस्टर पिछली वार आये थे, तो मेरा एक हजार रुपया खुल गया था। अव तो मेरे पास इतने पैसे है नही।

सिन्हा— क्या कहते है मिस्टर केशवलाल ? पुलका उद्घाटन हुआ नही कि आप मालामाल हो जायँगे।

केशवलाल— जब होंगे, तो देखा जायगा । अभी तो ...

सिन्हा— आपके लिए क्या मुश्किल है ?

केशवलाल— आप दास साहबसे कहिए । यदि उनका सहयोग हो, तो बहुत-सी मुश्किल आसान हो सकती है ।

दास— तुम कल सुबह किसी समय दफ्तर आओ, तो देखेंगे । कोई छोटा-मोटा ऐस्टीमेट बनाकर दे दो । पुलके खातेमें डाल देना, प्रबन्ध हो जायगा ।

सिन्हा— बहुत अच्छा । तो मैं चलूँ । [दाससे] आपसे ब्योरेवार बातचीत तो कल ही होगी । [जाता है]

केशवलाल— यह लो, मिनिस्टर साहबके आनेकी हमको तो चपत लग गई !

दास— आपको चपत कैसी ? चपत तो लगनेवालोंको लगेगी ।

[टेलीफोनकी घण्टी बजती है । केशवलाल उठकर सुनता है ।]

केशवलाल— कौन ? मिस्टर दास ? अच्छा ! आप थामे रखिए । [दासको इशारा करता है]

दास— [टेलीफोन पकड़कर]—मैं दास बोल रहा हूँ । क्या ? कब ? कहाँसे ? दो खम्भे ! दो खम्भे ?. कैसे हुआ ?.. अच्छा ! तो काम रोक दो . मैं अभी आ रहा हूँ

[टेलीफोन पटककर रखता है और वहीं पास पड़ी कुर्सी पर बैठ जाता है । उसके मुखपर घबराहट है ।] केशव, शारदा, करुणा [तीनों एक साथ]—क्या हुआ ?

दास— [चिन्तित स्वरमें]—पुलके दो खम्भोंमें दरार पड़ गई है । इस बातको ज़रा बैठकर ध्यानसे सोचना पड़ेगा । [पत्नीसे] तुम चलो, मैं ज़रा देरसे आऊँगा ।

करुणा— क्या इसी समय पुलपर जाना पड़ेगा ?

दास— हाँ । तुम वहाँ पहुँचकर मोटर यहीं भेज देना ।

करुणा— कितनी देर लगेगी ?

दास— कोई आधा घण्टा, शायद कुछ अधिक भी लग जाय ।

[करुणा जाती है । शारदा उसे मोटर तक पहुँचाने जाती है ।]

केशवलाल— खम्भोमे दरार कैसे पड गई ! क्या स्थिति कुछ गम्भीर है ?

दास— तुम पूछते हो गम्भीर ? वहाँ तो सत्यानाश हो गया है ! दो खम्भे बिल्कुल दब गये है । दस मजदूरोको चोट आई है, जिनमेसे दोकी दशा शोचनीय है । अगर इनमेसे एकको भी कुछ हो गया, तो हमारा सर्वनाश हो जायगा ।

केशवलाल— यह तो बहुत बुरा हुआ । इसका उपाय क्या होगा ।

दास— [आवेशमे]—अब उपाय पूछते हो ? मैंने तुमसे कहा नही था कि सीमेण्टका मिश्रण ठीक रखो । तुम्हे तो लालच खाये जा रहा था । चाहते थे सारी उम्रकी कमाई इस एक पुलमे से ही निकले ! और वह भी अपने ही लिए नही, अपनी सात पुश्तोके लिए भी ! माना कि कई जगहे ऐसी होती है, जहाँ सीमेण्ट थोडे अनुपातमे लगानेसे भी काम चल जाता है । परन्तु वह जगह खभे नही । खम्भोका तो सीमेण्टपर ही दारोमदार है । और अगर खम्भे ही पक्के न हुए, तो पुल खडा कैसे रह सकता है ?

केशवलाल— अब यह दुर्घटना हो गई, तो आप भी ऊपर चढे आ रहे है ! वैसे मैंने तो जो-कुछ किया, सब आपकी सलाह और सहयोगसे ही ।

दास— जब नीव खुदवा रहे थे, तो तुम्हीने तो कहा था कि पचीस फुट गहराईकी बजाय १७ फुट कर दो, कौन देखता है ? मिट्टी हीमे तो दब जायगी ।

केशवलाल— [तमतमाते हुए]—स्वय तुम्हीने तो सब-कुछ पास किया है । अब सारा दोप मेरे सिरपर मत थोपो । मै तो जब कमाऊँगा, तब कमाऊँगा, अभी तक तो तुम्हारा ही घर भरता रहा हूँ ।

तुम्हारी माँगे ही पूरी नही होती । कभी पेट्रोल, कभी टायर, कभी वायलका थान और अब ह्विस्की

दास— [दाँत पीसकर]—हूँ, यह बात है !

केशवलाल— जब तुम अपने बाल-बच्चोको कश्मीर भेज रहे थे, तो मुझे उनके आने-जानेके टिकट तथा वहाँ हाउस-बोटमे रहनेकी व्यवस्था करनेको कहा था या नही ?

दास— झूठ मत बोलो । मैंने कहा था तुम्हे यह सब करनेको ?

केशवलाल— झूठ ! तुम इसे झूठ कहते हो ? मेरे पास रसीदे रखी हैं सब ! कहो, तो अभी दिखा दूँ । तुम्हारी मोटरके टायर किसने खरीदे थे ? क्या यह भी झूठ है ? जहाँ तक कहनेका सवाल है, मुझसे तुमने कहा या तुम्हारी पत्नीने, इसमे कोई फर्क नही पडता । आजकल तो यह तरीका ही बन गया है कि अफ्सर लोग स्वय कुछ नही कहते, उनकी स्त्रियाँ ही ढगसे अपनी जरूरते बता देती हैं ।

दास— [गुस्सेसे तमतमाते हुए]—इस तरह अफसरोसे टक्कर लेकर आज तक तो किसीने कुछ लाभ उठाया नही । अगर तुम सोचते हो कि इस तरह बढ-चढकर बाते करनेसे तुम बच निकलोगे, तो तुम्हारी यह गलतफहमी भी जल्दी ही दूर हो जायगी । जब इजीनियर और ठीकेदारमे झगडा हो, तो जीतेगा तो इजीनियर ही ! तीन अफ्सर मेरे नीचे काम करते हैं और तीन ऊपर । उन सबके हस्ताक्षर हैं सब कागजोपर । मेरा अकेलेका कोई क्या बिगाड लेगा ? किन्तु तुम्हारा छुटकारा तो किसी सूरतमे नही होगा ।

केशवलाल— मैं इन धमकियोसे डरनेवाला नही हूँ ।

दास— [व्यगसे]—हूँ । यह बात है ! तो मेरा क्या बिगाड लोगे ? करके देख लो, जो मनमे आये ।

पुलिस-अफ०—नही साहब, इन बातोको छोडिए। मामला बहुत दूर तक पहुँच चुका है। अब न मेरे बसकी बात है, न आपके

दास— लेकिन मै तो ड्यूटी पर जा रहा हूँ।

पुलिस-अफ०—[हथकडी निकालकर]—आप चलेगे या मुझे इसके लिए मजबूर करेगे ?

[दास और केशवलाल उठकर उसके साथ-साथ बाहरकी ओर जाते हैं]

बैरा— [केशवलालसे]—हुजूर, मेरी दस दिनकी तनख्वाह तो देते जाइए !

[केशवलाल उसको मुक्का दिखाता हुआ बाहर जाता है। उनके चले जानेके बाद बैरा अपने आपको सारी स्थितिका मालिक समझता है। ह्विस्कीकी बोतल उठाकर लाता है। कुछ निकालकर मजेमें पीता है। पर्दा गिरता है।]

प्रोफ़ेसर साहब

•

प्रोफ़ेसर साहब

[स्थान कालेजके अध्यापकोका कमरा। चारो ओर दीवारोपर तस्वीरें टँगी है--कुछ भूतपूर्व प्रिंसिपलोकी और कुछ फुटबाल, क्रिकेट, हाकी आदिके विजेता खिलाडियोकी। कमरेके बीचमें एक बडी-सी मेज है। उसके चारो ओर कुर्सियाँ पड़ी है। एक-दो छोटी मेजें और भी है, जिनपर अध्यापकोके सुभीतेके लिए टेबुल-लैम्प रखे है। एक ओर दीवार पर कुछ काले गाउन टँगे दिखाई देते है। बीचवाली मेजपर पाँव पसारे प्रोफेसर सेठ बडे आरामसे सो रहे है। उनके खर्राटोकी ध्वनिसे कमरा गूँज रहा है। इसी समय कालेजकी घण्टी बजती है। बाहर क्लासोंके छूटने तथा लडके-लडकियोकी चहल-पहलका शोर होता है। रमेशचन्द्र अन्दर आता है और प्रोफेसर सेठको सोया हुआ पाकर दबे पाँव एक ओर मेजके पास कुर्सीपर बैठ जाता है। सहसा उसके हाथसे किताब गिर पडती है। रमेश लज्जित-सा पीछे मुडकर प्रोफेसर सेठकी ओर देखता है। प्रोफेसर सेठ अँगड़ाई लेते है।]

रमेश— क्षमा कीजिएगा

सेठ— नही, कोई बात नही। काफी सो लिया। क्या बजा होगा ?

रमेश— अभी-अभी तीसरा घण्टा शुरू हुआ है।

सेठ— हूँ! अरे, तब तो बहुत सोया।

रमेश— क्या अब कोई क्लास है आपका ?

सेठ— क्या मुसीबत है! पहले घण्टेमे बी० ए० की 'इण्डियन हिस्ट्री' थी, दूसरे घण्टेमे एम० ए० फाइनलवालोकी और अब है 'आनर्स' की! पर गोली मारिए, मै तो नही लूँगा आज कोई भी क्लास!

रमेश— आपकी तबीयत तो ठीक है न ?

सेठ— तबीयत बेचारी क्या करे ? जो शनिवार शामके छ बजेसे ब्रिज खेलने बैठे है, आज सवेरे आठ बजे छोडा ! किन्तु और करता भी क्या ? रजिस्ट्रार और डीन दोनो मिलकर आ धमके और उनके साथ था बबईका प्रोफेसर पटेल भी

रमेश— वही न, जो परीक्षक नियुक्त होकर आये है ?

सेठ— बिल्कुल वही। ब्रिजका बहुत शौकीन है। ब्रिज न खेले, तो उसे रोटी ही हजम नही होती ! रातभर खेलता रहता है।

रमेश— तो फिर काम किस समय करता होगा ?

सेठ— काम-वाम तो ऐसे ही चलता है। जानते हो, लडके बहुत पढकर खुश नही होते और हम बहुत पढाकर खुश नही होते ! तो फिर बस, मियाँ-बीवी राजी, तो क्या करेगा काजी ?

रमेश— परन्तु एम० ए० की परीक्षा तो सिरपर आ गई है। आखिर लडके पास कैसे होगे ?

सेठ— तुम चिन्ता न करो। जानते हो, परीक्षा लेनेवाले कौन है ? यही पटेल तो आयँगे न फिर। ये अगर नही आये, तो नागपुरसे देसाईको बुलायँगे और उसे भी अवकाश न हुआ, तो लखनऊसे लालको बुला लेगे। सब अपने ही तो है। यदि मै उनके शिष्योको पास कर सकता हूँ, तो क्या वे हमारे छात्रोको नही करेगे ?

रमेश— [अचम्भित-सा]—अच्छा ! मै नही समझता था कि प्रोफेसरोमे भी परस्पर ऐसा भाईचारा होता है।

सेठ— तुम अभी-अभी विदेशसे आये हो। तुम क्या जानो हमारे रस्मो-रिवाज ? हाँ, धीरे-धीरे तुम्हें सब-कुछ पता चल जायगा। [उठता है] चलूँ जरा प्रिसिपलसे मिल आऊँ। कई दिनोसे कोई गप-शप नही हुई है।

[खूँटीपरसे अपना गाउन उतारकर पहनता है। फिर जेबमेंसे चश्मा निकालकर लगाता है और दो-चार किताबें बगलमें दबाकर चल देता है। रमेश अपने काममें लग जाता है। कोई दरवाजा खटखटाता है।]

रमेश— अन्दर आ जाओ।

[दो विद्यार्थी आते हैं]

पहला— क्या प्रोफेसर सेठ नही आये आज ?

रमेश— वे प्रिंसिपलसे मिलने गये हैं।

दूसरा— तो क्या वे आज क्लास नही लेंगे ?

रमेश— मेरे विचारमे तो शायद नही।

[दोनो विद्यार्थी 'धन्यवाद' कहकर हँसते हुए बाहर चले जाते हैं। रमेश फिर किताब पढने लगता है। दरवाजेपर हल्की-सी खटखट होती है।]

रमेश— आ जाओ।

[एक सुन्दर युवती प्रवेश करती है।]

युवती— नमस्कार।

रमेश— नमस्कार, मीरा। कहो, क्या बात है ?

मीरा— आपने जो किताब बतलाई थी न देखनेको, वह मुझे लाइब्रेरी से नही मिल रही। इसी कारण मैंने अपना निबन्ध भी नही लिखा। मैंने सोचा कि क्लास शुरू होनेसे पहले ही आपको बता दूँ।

रमेश— कौन-सी किताब ?

मीरा— वही 'ब्रिटिश हिस्ट्री' की।

रमेश— [पास रखी किताबोमेंसे एक निकालकर देते हुए] तुम इस किताबको पढ लो। इसमें कुछ मिल जायगा।

मीरा— [किताब लेकर] आपको कब तक चाहिए यह ?

रमेश— दो-तीन दिनमें लौटा देना।

रमेश— मैं बन रहा हूँ या आप बना रहे है मुझे ?

नरेन्द्र— बना नही रहा, बता रहा हूँ कि यह सुन्दर युवती प्रिंसिपल साहबकी बेटी है ।

रमेश— अच्छा । [फिर पढने लगता है] जरा यह अध्याय समाप्त कर लूँ ।

नरेन्द्र— [सहृदयतासे] देखो रमेश भैया, एक बात समझ लो । बहुत मत पढा करो, आँखे कमजोर हो जायँगी ।

[रमेश मुसकराता है]

नही मैं हँसी-मजाक नही कर रहा हूँ । सच कहता हूँ कि इस तरह मन मारकर परिश्रम करनेसे कुछ लाभ न होगा । मुझे यहाँ पढाते दस साल होनेको आये । मेरे अनुभवसे कुछ सीखो ।

रमेश— [हँसता है और किताब बन्द कर देता है] कहिए ।

नरेन्द्र— पहले-पहल मैं भी इसी तरह लगनसे काम किया करता था । एक विषयपर दुनिया-भरकी पुस्तकोका अनुसन्धान करके अपना लेक्चर तैयार करना, विद्यार्थियोको जब-तब लेकर समझाने बैठ जाना । परन्तु उससे कुछ नही बना । सालाना पाँच-दस रुपये तरक्की मिल जाती थी, बस । हारकर मैंने भी खेल-कूदकी ओर ध्यान देना शुरू किया । हाकी थोडी-बहुत जानता था, अत उसीकी देख-भालका भार अपने ऊपर ले लिया । उसके बाद तो भगवान् की कृपा रही । इसी हाकीकी टीमकी बदौलत देश-विदेश घूम आया और जब हमारी टीम अतर्युनिवर्सिटी-टूर्नामेंटमे जीत गई, तो मैं भी रीडर बन गया ।

रमेश— [उत्तेजित होकर] तो हम यहाँ करने क्या आते है ? लडकोको हाकी खिलाने, ब्रिज सिखाने तथा परीक्षामे जैसे-तैसे पास करानेके लिए ही न ? क्या हमारा इन तरुण-

तरुणियोकी ओर यही दायित्व है ? कमालकी बाते करते है आप ! जब तक हम स्वय शिक्षाको गम्भीरतापूर्वक नही लेगे, इन युवकोको क्या सिखायेंगे ?

नरेन्द्र— [हँसकर] अरे दोस्त, इतने उत्तेजित होनेकी कोई आवश्यकता नही। शुरू-शुरूमे सभीके मनमे उत्साह होता है, दलीले होती है। सोचते है सारी व्यवस्था ही बदल देगे। परन्तु यह उत्साह जल्दी ही ठडा पड जाता है। तुम अभी युनिवर्सिटी-जीवनके कई क्षेत्रोसे अनभिज्ञ हो, इसलिए इन चीजोको नही समझते। मेरी बात सुनो—इस तरह केवल पढने-लिखनेसे तुम्हारा कुछ भी बननेका नही।

रमेश— [नरेन्द्रकी बात काटकर] – पर मुझसे खाली ढोग तो नही रचा जायगा।

नरेन्द्र— ढोग रचनेकी आवश्यकता क्या है ? चुपचाप इस लडकीसे शादी कर लो, बस ।

रमेश— किस लडकीसे ?

नरेन्द्र— अरे वही, जो अभी तुमसे मिलकर गई है।

रमेश— [चिढकर] मैने कहा वह मेरी क्लासकी एक छात्रा है।

नरेन्द्र— पर गुस्से क्यो होते हो ? मै जानता हूँ कि वह बी० ए० मे पढती है। यह भी जानता हूँ कि वह प्रिंसिपलकी लडकी है और उसके हाव-भाव तथा आँखोसे यह भी भाँप गया हूँ कि वह तुमसे प्रेम करती है ! तभी तो कहता हूँ कि यह सबन्ध पक्का कर डालो ! तुम तो सौभाग्यवान हो, जो सुन्दर लडकी मिल रही है। हममेसे कई ऐसे भी है, जिन्हे ऐसी लडकियोसे व्याह करना पडा है, जो देखनेमे बहुत साधारण है। पर केवल इसलिए व्याह करना पडा कि उनके पिता या तो रजिस्ट्रार या वाइस-चान्सलर या सेनेटके सदस्य या कोई अन्य बडे आदमी थे !

रमेश— जाइए, मुझे उल्लू बनानेकी चेष्टा मत कीजिए। क्या आपका कोई लेक्चर-वेक्चर नही है आज ?

नरेन्द्र— लेक्चरकी भी सोच लेते है, पहले यह वात तो पूरी हो ले ।

रमेश— [व्यगसे] जी, माफ कीजिए। मुझे अभी शादी नही करनी है ।

नरेन्द्र— पागल मत वनो। आखिर शादी तो तुम करोगे ही—आज नही, दो साल बाद सही। इससे अच्छा तो यही है कि मेरी वात मान लो और प्रिंसिपल साहवके जामाता वन जाओ। फिर देखो, कैसे सफलताकी सीढीपर दौडते हुए चढते हो—आज लेक्चरार, कल रीडर, परसो प्रोफेसर और फिर युनिवर्सिटियोके परीक्षक वन जाओगे। और शायद यूनेस्कोसे छात्रवृत्ति पाकर अमरीकाकी सैर भी कर सकोगे !

रमेश— और शेखचिल्लीके अण्डे कब फूटेंगे ?

नरेन्द्र— [खिन्न होकर] तुम तो इसे मजाक समझ रहे हो ।

रमेश— केवल मजाक नही, उपहास भी !

नरेन्द्र— [गम्भीरतासे] नही रमेश, मै भला तुम्हारा उपहास क्यो करने लगा ? मै तो तुम्हारे भलेकी वात कह रहा हूँ। तुम्हे यूँ काम करते देख मुझे कष्ट होता है। क्या तुम इस वातसे सहमत नही कि आजकल जमाना वसीले और जान-पहचानका है, रिश्तेदारीका है ।

रमेश— सो तो मानता हूँ ।

नरेन्द्र— तो फिर दोस्त, मेरे सुझावपर ध्यान दो। हाँ, यदि वाइस-चान्सलरकी लडकीपर नजर है वा दिल्लीमे शिक्षा-मन्त्रालयमे कोई है, तो और वात है। नही तो यह अवसर अच्छा है ।

[एक विद्यार्थी, अति व्याकुल-सा हाँफता हुआ अन्दर आता है]

विद्यार्थी— डाक्टर शास्त्री है ?

रमेश— नही ।

रमेश— प्रोफेसरके विश्वासपात्र वे भले ही वन जायँ, परन्तु आजकी शिक्षा-प्रणालीके लिए इनके मनमे क्या श्रद्धा या आदर हो सकता है ?

नरेन्द्र— ऐसी श्रद्धा थी कव, जिसके उठ जानेका अव भय हो ! लडकोके मजाक नही सुने कभी ? कहते है परीक्षा तो एक लाटरी है, जिसमे भाग्यका निर्णय होता है। परीक्षक साहवके मूडपर ही तो सव-कुछ निर्भर करता है। प्रसन्न होगे, तो पास कर देगे, अप्रसन्न हुए तो फेल !

रमेश— भई कमालके लोग है , मेरी तो वुद्धि ही

[शास्त्री साहव पान चवाते हुए अन्दर आते है]

शास्त्री— कहो, क्या खवर है ?

नरेन्द्र— आपको एक लडका ढूँढ रहा था अभी ।

शास्त्री— कौन-सा लडका ?

नरेन्द्र— एम० ए० का छात्र है, नाम तो नही याद आ रहा इस समय

शास्त्री— शक्ल-सूरत कैसी है ?

नरेन्द्र— वही लवा-सा, दुवला-पतला, जो काली ऐनक पहने रहता है । वहुत घवराया हुआ-सा नजर आता था ।

शास्त्री— अखिल तो नही ?

नरेन्द्र— हाँ, वही ।

शास्त्री— आप कहते है घवराया हुआ था ?

रमेश— जी ।

शास्त्री— कुछ वताया नही, क्या काम था ?

नरेन्द्र— कहा तो कुछ नही, परन्तु वहुत व्याकुल दिखाई देता था ।

[शास्त्री कुछ सोचने लगता है । इतनेमें अखिलेश झाँककर भीतर देखता है ।]

नरेन्द्र— यह लीजिए, आ गया ।

[अखिलेश आता है]

शास्त्री— क्यो, क्या हुआ है ?

अखिलेश— [गिड़गिड़ाते हुए] क्षमा कीजिए प्रोफेसर साहव, मै वहुत शर्मिन्दा हूँ। कैसे समझाऊँ, आप क्या कहेगे

शास्त्री— [क्रुद्ध होकर] कुछ कहोगे भी सही

अखिलेश— कल रात मैने पचास परचे देखकर रखे थे। आज सवेरे उन सवको वडलमे वाँधकर आपको लौटानेके लिए ला रहा था। वसमे वडी भीड थी। जैसे ही मै उतरा कि किसीने मेरी वगलमेंसे वण्डलका वण्डल छीन लिया। मैंने वहुत शोर मचाया, किन्तु चोरका कुछ पता नही चला।

शास्त्री— तुमने वस-कण्डक्टरसे क्यो नही कहा ?

अखिलेश— वहुत कहा, परन्तु वे लोग सुनते कहाँ है ? कहने लगे, यदि हम हर एक सवारीके झगडोका निवटारा करने लगे, तो वस चल ही न पाय।

शास्त्री— [तमतमाते हुए] हूँ! तो तुमने किया क्या ?

अखिलेश— पुलिसमे रिपोर्ट लिखवा दी है, साहव।

शास्त्री— [गरजकर] पुलिसमे रिपोर्ट! उल्लू कहीका। मुझे क्यो नही वताया ? क्या मै मर गया था, जो थाने जाकर रिपोर्ट लिखवा आये ?

अखिलेश— [गिडगिडाकर] पहले आपको ढूँढता हुआ यही आया था, प्रोफेसर साहव। पहले घटेमे आप नही थे, सोचा दूसरेमे आते होगे। दूसरेमे भी आपको नही देखा, तव भागा-भागा आपके घर गया। वहाँ भी आप नही मिले। मैंने सोचा, जितनी देर होती जायगी, मामला और भी चौपट होता जायगा, इसीलिए पुलिसको खबर कर दी।

शास्त्री— [तुनककर] पर पुलिसको क्यो ? जानते नही, वहाँ क्या होता है ? तुम्हारी अक्ल कहाँ है ?

अखिलेश— [रुआँसा होकर] तो मै क्या करता ?

शास्त्री— [क्रोधित होकर] करता अपना सिर। मै नही जानता था कि तुम इतने गवे हो, नही तो कभी तुम्हे वजीफा न दिलवाता। अव भी वद करवा सकता हूँ। वेकार ही वातका वतगड वना दिया। चलो, अव मेरे साथ। कौन-से थानेमे रिपोर्ट की है ?

अखिलेश— [धीरेसे] माल रोडके थानेमे।

शास्त्री— वहाँका थानेदार कौन है ?

[वडवडाता हुआ अखिलेशको साथ लिये कमरेके वाहर चला जाता है।]

रमेश— वैसे तो अच्छा ही हुआ। शास्त्री साहव फँसे, तो जरा स्वाद आ जाय।

नरेन्द्र— लेकिन फँसेगा नही, वडा घाघ है। सवके साथ वनाकर रखी है। पुलिस-थानेमे भी कोई-न-कोई अपना शिष्य ही निकल आयगा और प्रोफेसर साहव छा जायँगे उसपर। वस, फिर क्या, रपट-वपट शीघ्र ही खारिज करवा देंगे!

रमेश— लेकिन परचे तो अव मिलनेसे रहे।

नरेन्द्र— ऐसी वाते तो होती ही रहती है। वहुत हुआ, तो दो-चार दिन अखवारोमे ले-दे होगी। फिर मामला ठप्प हो जायगा।

रमेश— और जो अखिलेशकी छात्रवृत्ति वद करवा देनेकी धमकी देता था

नरेन्द्र— क्या जाने क्या होगा उसका ?

रमेश— अगर उसकी छात्रवृत्ति वद हो गई, तो मै प्रिंसिपलको रिपोर्ट कर दूँगा।

नरेन्द्र— न, न! तुम काहेको इस झगडेमे पडोगे ?

रमेश— परन्तु यह तो घोर अन्याय होगा।

नरेन्द्र— न्याय-अन्यायकी अपनी-अपनी व्याख्या है। जिसे तुम अन्याय समझते हो, सम्भव है,वह उसकी दृष्टिमे न्याय हो। और फिर तुम्हारा इस मामलेमे पडना उचित न होगा।

रमेश— यही हाल है, तो मै कालेजकी नौकरी छोड कोई और काम कर लूँगा। दाल-रोटी ही तो चाहिए, सो कही-न-कही मिल ही जायगी। पर ऐसे वातावरणमे तो मेरा दम घुटता है।

नरेन्द्र— अरे मियाँ, जहाँ भी जाओगे, वातावरण तो आजकल ऐसा ही मिलेगा। जमानेकी हवा ही बिगडी हुई है। सरकारी नौकरी क्या, व्यापार क्या, कारखाने क्या, सब जगह यही हाल है। दयानतदारीको कोई नही पूछता।

[कालेजकी घण्टी बजती है]

यह लो, जाओ, अब अपना क्लास लो। भूल जाओ इन बातोको। सब ओर देख-सुनकर यही मानना पडता है कि नौकरी फिर भी अच्छी है।

रमेश— [किताबें उठाकर] अच्छा भाई, जाता हूँ।

[दरवाजेकी ओर बढता है। सामनेसे एक लड़का परचोका बंडल उठाये आता है।]

लड़का— नमस्कार, प्रोफेसर साहब।

रमेश— क्या है?

लड़का— क्षमा कीजिएगा, डाक्टर शास्त्रीको तो नही देखा आपने?

रमेश— [व्यग्यपूर्ण मुसकराहट सहित] डाक्टर शास्त्री? वे तो थाने गये है माल रोडके थानेमे मिलेंगे तुम्हे।

[जाता है। लडका हक्का-बक्का इधर-उधर देखता है। पर्दा गिरता है।]

●

घर आई लक्ष्मी

•

घर आई लक्ष्मी

[मेहता साहबके बैठनेका कमरा। बढिया हरे रगका सोफा-सेट, लाल, फूलदार ईरानी कालीन, गहरे ब्राउन रगका रेडियोग्राम, दीवारो पर दो चार पेंटिंग्स, तथा गाँधीजीका चित्र। हर चीज अपनी-अपनी जगह सजी हुई। एक कोनेमें काम करनेकी बडी मेज रखी है जिस पर टेलीफोन, रीडिंग-लैम्प, कुछ फाइलें इत्यादि हैं। कमरेको देख कर कुछ ऐसा लगता है, मानो सारी चीजें यथा तथा इकट्ठी की गयी हैं। मेहता साहब बैठे फाइलें देख रहे हैं। तभी बाहरके दरवाजेकी घण्टीकी आवाज आती है। मेहता साहब जरा चौंक कर सिर उठाते हैं—]

[भीमसेन आता है]

भीमसेन— साहब, आपसे कोई मिलना चाहता है।

मेहता— इस समय ? कौन है ?

भीमसेन— नाम तो बताया नही।

मेहता— तुमने पूछा भी था ?

भीमसेन— जी हाँ, कहने लगे, नाम बतानेकी जरूरत नही।

मेहता— [कुछ रहस्यमय भाव से] पहले देखा है उसे यहाँ कभी ?

भीमसेन— याद तो नही पडता।

मेहता— कपडे कैसे पहने हैं ?

भीमसेन— अँधेरेमें खड़े थे—कुछ ठीक दिखाई नही दिया। शायद खद्दरकी टोपी तो थी।

मेहता— [विस्मित-सा] खद्दरकी टोपी ! तुमने क्या कहा, मैं घरमें हूँ ?

भीमसेन— मैंने कहा, देखता हूँ।

मेहता—— अच्छा आने दो, मगर इसके वाद कोई भी आये तो कह दो कि मै नही मिल सकता ।

शोभा—— बहुत अच्छा।

[जाती है । एक अधेड व्यक्ति प्रवेश करता है । चाल-ढाल-कपडो आदिसे लगता है कोई आधुनिक ढंगका अच्छा, खाता-पीता 'बिजनेस मैन' है]

मेहता—— कहिए ?

छोटूभाई—— देखिए साहव, मै वडा सीधा सादा आदमी हूँ । मुझे छल-वल नही आता । आपसे भी सीधी बात करता हूँ ।

मेहता—— कहिए, कहिए ।

छोटूभाई—— मै 'मोहनभाई छोटूभाई' फर्मका एक हिस्सेदार हूँ । हमारा एक 'केस' आपके पास आया है । मै उसीके वारेमे आपकी राय लेना चाहता हूँ ।

मेहता—— [जरा तनकर) उसमे राय क्या लेना है आपको ? जैसे और मामलोका निर्णय किया जाता है वैसे ही, बारी आने पर इसका भी फैसला हो जायगा [छोटूभाईकी ओर जरा तीखी नजर तथा गम्भीर दृष्टिसे देखते हुए] हूँ ! ! तो आप मुझे प्रभावित करने आये है ? निकल जाइए यहाँ से अभी एकदम ! [छोटूभाई कुछ कहनेको उद्यत होता है, परन्तु मेहता साहब मौका ही नही देते] क्या समझते है आप, मै अपना धर्म बेच डालूँगा ? आपको मालूम होना चाहिए सरकारने मुझे एक भारी उत्तरदायित्व सौप रखा है ।

छोटूभाई—— क्षमा कीजिए, मुझे पहले ही वता देना चाहिए था आपको कि मुझे सत्यप्रकाशजीने आपके पास भेजा है और उन्होने यह भी कह देनेको कहा था कि [धीरेसे] 'ख़ान साहब पीपल के पेडके नीचे सो रहे है [मेहताका चेहरा खिल उठता है जैसे किसी गुप्त भाषाके समझ जाने पर सकोच दूर हो गया हो]

मेहता— अरे वाह, आपने भी कमाल किया ! पहले क्यो नही कहा ? सत्यप्रकाश तो हमारे मित्र है । [अपने पास सोफे पर वैठने का इशारा करते हुए] आइए न, यहाँ वैठिए । [सिगरेटका डिब्बा छोटूभाईके सामने रखते हैं] क्या पीजिएगा ? थोडी-सी ह्विस्की मँगवाऊँ ?

छोटूभाई— [सिगरेट लेते हुए] धन्यवाद, नही इस समय ह्विस्की नही, फिर कभी सही । अव तो मिलते ही रहेगे ।

मेहता— हाँ, हाँ, क्यो नही । मै जानता हूँ सारा केस । अपनी ओरसे पूरा प्रयत्न करूँगा । किन्तु आप तो जानते है मुझे इसके लिए वहुत-कुछ करना होगा । हाँ, कई लोगोसे मिलना होगा ! ऊपरसे नीचे तक पूरा-पूरा प्रवन्ध करना पडेगा । आपके मित्रने आपको वताया ही होगा ।

छोटूभाई— जी हाँ, उसके लिए मै यह ५००० का चेक लाया हूँ आपके भाईके नाम ।

मेहता— नही साहव, चेकसे काम नही चलेगा, कैश चाहिए ।

छोटूभाई— [जेवसे एक मोटा-सा लिफाफा निकाल कर] वह भी हाज़िर है ।

मेहता— [मुसकरा कर] क्षमा कीजिए, ऐसे मामलेमे तो नकद चाँदी या सोना ही

छोटूभाई— वह भी है, अभी लाया ।

[जाता है । शोभा मुसकराती हुई आती है]

शोभा— [सिर हिलाकर] कितने है ?

मेहता— क्या ?

शोभा— मैने दरवाज़ेकी ओटसे सव सुन लिया है । अव तो मुझे कगन ले ही देने पडेगे । कहो, कल चलोगे न वाजार ?

मेहता— जरा, धीरज रखो, ऐसी भी क्या जल्दी !

शोभा— देखो, ऐसा पैसा घरमें नही रखना चाहिए। जितनी जल्दी हो

मेहता— [बाहर आहट पाकर] अच्छा, अभी तो अन्दर जाओ, वह आ रहा है।

[शोभा जाती है—छोटूभाई रुपयोकी थैली लाकर मेज पर रख देते हैं]

छोटूभाई— तो, अब आज्ञा है मुझे ?

मेहता— [उठकर उसके साथ दरवाजे तक जाते हुए] मै आपको बता दूँगा मामलेका हाल। भगवान्ने चाहा तो सब ठीक हो जायगा [छोटूभाईके मनका भाव समझ कर] नही मुझ टेलीफोन करनेकी जरूरत नही। कोई विशेष काम हो तो इसी समय आ जाइये या मै सवेरे घूमने जाता हूँ तो, कभी आप भी निकल आइए, रास्तेमे भेट हो जायगी।

छोटूभाई— समझ गया। ऐसे ही करूँगा। अच्छा, धन्यवाद! नमस्कार!

[जाता है—शोभा आती है और सीधी रुपयोकी थैलीके पास जाकर उसे टटोलती है, रुपयोकी आवाज होती है—फिर, थैली खोल, दो-चार रुपये निकाल कर उन्हें बजा कर देखती है]

मेहता— धीरे, कोई सुन लेगा तो क्या सोचेगा!

[कमल आता है]

कमल— [थैलीको देख कर अचरजके साथ] मै भी तो कहूँ, इस समय यह रुपयोकी खनक कहाँसे आ रही है! [कुछ रुपये मुट्ठी में भरकर] पापा, अब तो मेरी मोटर-साइकिल पक्की है न ?

मेहता— अरे जरा तो धीरजसे काम लो, उसे सीढियोके नीचे तो उतर लेने दो!

कमल— [रुपयोसे खेलता हुआ] वह तो चला गया, कब का।

शोभा— हाँ सच, ऐसे भागा जैसे उसे सन्देह हो कि कही आप अपना मन न वदल दे ।

कमल— [अचानक एक एक रुपयेको देखने लगता है] एक ही सन्के इतने इकट्ठे रुपये पहले कभी नही देखे थे । यह तो सवके सब ही १६१२ के मालूम होते है ।

मेहता— [उछलकर] क्या कहा ? एक ही सन्के है [पास जाकर स्वयं परखता है] सवके सब ! [घबराकर] इसमे अवश्य कोई भेद है । यह तो जानवूझकर मुझे फँसानेको जाल रचा गया है । [जल्दीसे खिड़कीके पास जाकर झाँकता है मोटरके स्टार्ट होनेकी आवाज] लो वह गया अव समझो मुसीवत आयी ।

शोभा— आप व्यर्थ घवरा रहे हैं ।

मेहता— [चिन्तित] नही, तुम नही समझती इन चालोको ! ये लोग वडे वदमाश होते है—वडी-वडी चालाकियाँ करते है—नोटो पर निशान लगाकर दे जाते है । और ये एक सालके इतने रुपये ! यह विना किसी विशेप अभिप्रायके नही हो सकते । अव करूँ तो क्या ! यह तो जरूर कोई जाल है । ववत क्या है कमल ? [बेचैनीसे चक्कर लगाता है]

कमल— ग्यारह बजनेको है ।

मेहता— [अधीर होकर] फेकूँ इन मनहूस रुपयोको ?

शोभा— कोयलेकी वोरीमे डाल दो ।

मेहता— ऊँह ? कैसी भोली बाते करती हो ! ऐसे अवसर पर पुलिसवाले ट्रक नही खोलते, सीधे कोयलेकी बोरी, आटेका टीन, मैले कपडोका थैला, बाथरूम ही देखते है ।

शोभा— तो, इधर लाओ, दरियो, चद्दरोके ट्रकमे रख देती हूँ ।

मेहता— और तलाशी ली गयी तो सव पिछला भण्डा भी फुडवाना !

शोभा— तो घनश्यामके घर भेज दो ।

मेहता— लेकर कौन जायगा ? देखते ही उसे सन्देह भी तो होगा। और कही हरिश्चन्द्र बन कर आप ही पुलिस को

शोभा— ऐसा कैसे हो सकता है, आपका इतना मित्र है वह।

कमल— माँ, पिताजी ठीक कहते है, रुपयोके मामलेमे दोस्त पर भी भरोसा नही किया जा सकता।

मेहता— मुझे तो एक तरीका ही सूझता है—सामने समुद्रमे फिंकवा दो इन रुपयोको।

शोभा— [बात काट कर] वाह! घर आई लक्ष्मीका ऐसा अनादर ? तुम रहने दो, मै सँभाल लूँगी।

मेहता— [चिढ कर] मुझे जेल भिजवाओगी ?

कमल— माँ, पापाका विचार ठीक है—इन्हे फेक ही देना चाहिए।

मेहता— कौन जायगा फेकने ?

शोभा— तुम, और कौन ?

मेहता— नही, मै तो पकड जाऊँगा—रगे हाथो [पसीना पोछता है। शोभा से] तुम जाओ, टैक्सी ले लो

शोभा— मै कैसे जा सकती हूँ अकेली ? इस समय ? टैक्सी-ड्राइवर ही मार डाले तो—कमल, तुम जाओ।

कमल— मुझे तो सीधा थानेमे भेज देगे वे! पूछेगे, तुम्हारे पास इतने रुपये कहाँसे आये ? और बस सारा भेद खुल जायगा। मै कहता हूँ भीमसेनको भेजो।

शोभा— तुम समझते हो भीमसेन रुपये समुद्रमे फेकेगा ? ऐसा बेवकूफ नही है वह। रुपये लेकर चम्पत न हो जाये तो मेरा नाम शोभा नही।

मेहता— चम्पत हो जाये, यही तो हम चाहते है। लेकिन मुझे डर है कि वह यही कही किसी ताडीवालेके यहाँ पहुँच जायगा और पी-पीकर बकेगा! [माथेका पसीना पोछता है] हे भगवान्!

शोभा— [खीझ कर] तो तुम ऐसे काम करते ही क्यो हो ?

मेहता— [गुस्सेमें] तुम्हारे मुँहसे तो यह बात नही सोहती। तुम्ही तो सवेरेसे शाम तक ताने दिया करती थी कि रोशनने अपना घर बना लिया, सूरजने लडकेको विलायत भेज दिया, कान्ता ने बिटियाके व्याहमे दस हजार नकद दिया

[टेलीफोनकी घण्टी बजती हे—तीनोके मुँह पीले पड जाते हैं—डरके मारे सब एक दूसरेकी ओर देखते है]

मेहता— [शोभा से] पूछो जरा कौन है ?

शोभा— [पीछे हट कर] भई, मुझे तो लगता है डर

मेहता— तुम उठाओ, कमल ।

कमल— लेकिन पिताजी कोई ऐसी वैसी बात हुई तो मै तो समझ भी न पाऊँगा क्या कहूँ ?

मेहता— निकम्मे हो तुम सब [काँपते हाथोसे टेलीफोन उठाता है] हैलो कौन है जी नही, यह अस्पताल नही है आपको गलत नम्बर मिला [रिसीवर रखता है—शोभा और कमल साँस लेते हैं, परन्तु मेहता साहब अब भी चिन्तित हैं ।]

शोभा— मेरा तो ख्याल है आप यो ही घबरा रहे है ।

मेहता— सम्भव है उन्होने यह टेलीफोन केवल यही पता करनेके लिए किया हो कि मै घर पर हूँ या नही [एक नई चिन्ता जागती है—कमलसे] थैली वन्द करो और छुपा दो इस बलाको कही—मुझे तो लगता है कि अब पुलिस आयी कि आयी ।

[सहसा कोई बाहरका दरवाजा खटखटाता है—सबके चेहरे फक पड़ जाते है]

मेहता— जल्दी करो देखते क्या हो । डालो इसे सोफेके नीचे देखो, सम्हालके, धीरेसे शोर नही [कमरेके दरवाजेके बाहर निकल जाता है]

शोभा— [हाथ जोड कर] हे भगवान्, अबकी क्षमा करो—फिर ऐसा कभी न होगा ।

[बाहरका दरवाजा खुलनेकी आवाज आती है—माँ-बेटे कान लगा कर सुनते है]

आगन्तुक—श्री नारियलवालाका फ्लैट यही है ?

मेहता— जी नही, ऊपर है, तीसरे तल्ले पर ।

आगन्तुक—क्षमा कीजिए—आपको कष्ट हुआ ।

मेहता— [भर्राई आवाजमें] कोई बात नही ।

[दरवाजा बन्द होनेकी आवाज]

शोभा— [कमलसे] मै कहती हूँ यह ऐसे ही घबरा रहे है ।

मेहता— [अन्दर आकर] मालूम होता है कोई सादे कपडोमे सी०आई० डी० का आदमी था । नारियलवालाका बहाना लेकर आया था । यह तो वह नीचे ही पढ सकता था कि नारियलवाला किस नम्बरके फ्लैटमे रहता हे । [आह भर कर] जाने किस मनहूस घडीमे उस आदमीका मुँह देखा था ? [दाँत पीसकर] कम्बख्त मिले तो नोच डालूँ ! बडा आया सत्यप्रकाशका नाम लेकर ! लेकिन उसे हमारी सकेत भाषाका कहाँसे पता चला ? [ज़रा शान्त होकर] हो सकता है मै यो ही घबरा रहा हूँ [अपने आपको जरा तसल्ली देता है—इतनेमें फिर कोई दरवाज़ा खटखटाता है—मेहताके हवाश उड जाते है । शोभा से] अब तो सचमुच वही होंगे—जाओ तुम दूसरे कमरेमे हे भगवान् [जाता है, दरवाज़ा खोलता है]

मेहता— [दूरसे गुस्सेमें] हा, आप ! अब फिर क्या करने आये है ? कौन है ? बाहर मोटरमे कौन है ?

छोटूभाई—क्षमा कीजिए, मुझसे बहुत भारी भूल हुई । अन्दर चलिए मैं सब बतला दूँ । [दोनो परेशानसे अन्दर जाते है] बात असल में यो हुई कि जब रुपये गिनकर थैलीमे डाले तो सब एकमे नही आते थे । इसलिए पाँच सौ दूसरी थैलीमें डाल लिये

थे। उस समय जल्दीमे वह दूसरी थैली आपको देना भूल गया था, यह लीजिये।

मेहता— भाग जाओ रुपयोका बच्चा

छोटूभाई—क्षमा कीजिए सा'व सुनिये तो! सा'व

मेहता— तुम मेहरवानी करो और यह सव उठाकर ले जाओ।

छोटूभाई—[हाथ जोड कर मिन्नत करते हुए] नही साहब, इतनी-सी भूल के लिए मुझ पर इतना गुस्सा न कीजिये। सच कहता हूँ मैंने धोखा देनेके विचारसे ऐसा नही किया।

मेहता— [उसकी कुछ न सुनते और अपनी ही कहे जाते हुए] तुम यह रुपये उठाओ, जल्दी करो, मुझसे जो होगा तुम्हारे लिए कर दूँगा मगर ये अपने रुपये लेकर दूर हो जाओ, आँखोसे!

[छोटूभाई भौंचक्का-सा होकर इधर-उधर देखता है]

मेहता— मै कहता हूँ जाओ, जल्दी [रुपयोकी थैली जबरदस्ती उसके हाथोमें ठूँसकर] जाओ, भगवान्के लिए जाओ जाओ!

[मेहता उसे रुपयो सहित दरवाजेके बाहर ढकेल देता है!]

प्रीति-भोज

•

प्रीति-भोज

[सदानन्द परिवार सहित खाने वाले कमरेमें बैठे नाश्ता कर रहे हैं। छुरीकॉटेके चलनेकी आवाज आ रही है। समोसेकी खुशबूसे कमरा महक रहा है।]

कमला— [सदानन्दसे] समोसे और चाहिए ?

सदानन्द— मिल जाय तो क्या कहने !

पपू— मैं भी समोसे लूँगी।

कमला— तू पहले दूध तो पी।

धर्मदेव— आज तो छुट्टी है, हम भी और खाएँगे।

कमला— [चिढ़ कर] जो लोग शामको खाने पर आ रहे हैं, उनकी भी फिक्र है या समोसे ही बनते रहेंगे ? [टेलीफोन की घण्टी बजती है] कान्ति, जरा देखना।

[कान्ति कोनेमें रखी मेज पर से टेलीफोन उठा कर सुनती है।]

कान्ति— पिताजी, आपको सहगल साहब बुला रहे हैं।

कमला— अब सवेरे-सवेरे सहगल साहब क्या खबर देने लगे। अपने साथ कोई मेहमान ला रहे होंगे।

सदानन्द— सुनने तो दो। कितनी जल्दी घबरा जाती हो ! [उठ कर टेलीफोन सुनता है]।

कमला— पपू, चलो जल्दी करो—चटसे दूध पी जाओ। [प्याला पकड़ कर पपूके मुँहसे लगाती है]।

पपू— [रोना मुँह बना कर] मैं नहीं पीऊँगी—इसमें मलाई है।

कमला— चल, पी भी ले। मुझे और भी बहुतसे काम करने हैं।

सदानन्द— [लौटते हुए] सहगल कह रहे हैं कि वह नहीं आ सकेंगे।

कमला— यह सदा ही कुछ-न-कुछ गड़बड़ करते हैं।

सदानन्द— इसमे गडबड क्या है ? दो आदमियोके न आनेसे कौन-सा ऐसा खेल है जो खराव हो जायगा ?

कमला— खेल तो है ही—आज नही आयँगे, तो दो दिन वाद फिर बुलाना पडेगा । मै तो सोचती थी कि एक ही वार सव निवट जाते ।

सदानन्द— निवटाना ही है, तो और वहुत है ।

कमला— और कौन ?

सदानन्द— भाटियाको बुलाओ ।

कमला— विचार तो अच्छा है, परन्तु

सदानन्द— [बात काट कर] परन्तु क्या.

कमला— उनको वापस पहुँचाना पडेगा ।

सदानन्द— क्यो ?

कान्ति— उनकी मोटर कारखानेमे पडी है ।

सदानन्द— तो रहने दो उनको । रातको ग्यारह वजे उन्हे लोदी रोड छोडने कौन जायगा ।

कान्ति— तो, माँ, सहदेव और गार्गीको भी बुला लो । वे भाटियाको वापस पहुँचा सकते है ।

कमला— [खुश होकर] ठीक, वहुत ठीक । खूब रौनक रहेगी । [सदानन्द से] देखो, कान्तिने कितनी अच्छी सलाह दी ।

सदानन्द— [मुसकरा कर] लेकिन उसका आना ठीक नही होगा ।

कमला— क्यो ?

सदानन्द— वह इस पार्टीमे ठीक जँचेगा नही ।

कमला— क्यो ?

सदानन्द— और मेहमान सब सरकारी अफसर है । अपने-अपने दफ्तर तथा महकमेकी बाते करेगे । और वह अकेला बैठा इनकम टैक्सका रोना रोता रहेगा ।

कान्ति— बुला लो, माँ । ऐसे-ऐसे लतीफे सुनाते है कि हँसते-हँसते पेटमे दर्द होने लगता है ।

सदानन्द— किसी औरको तो बात करनेका अवसर नही देता । गँवारोकी तरह शोर कितना मचाता है !

कमला— आपकी तबीअतका भी कुछ पता नही लगता—न बोलो तो कहते हो बुद्ध् है, और बोलो तो गँवार ! लेकिन मुझे तो ऐसे सीधे मनुष्य बहुत पसन्द है ।

सदानन्द— चाहे कुछ भी हो, वह इस पार्टीमे नही चलेगा ।

धर्मदेव— [**माँ-बापकी बहससे तग आकर**] तो रहने दो दोनोको, यशके माता-पिताको बुला लो ।

सदानन्द— यश कौन ?

कमला— इसका मतलब सेठीसे है । उनका लडका यश इसका मित्र है ।

सदानन्द— हाँ, उन्हीको बुला लो ।

कमला— मै तो नही बुलाती । पिछले मगलको उन्होने हमे दावतमे बुलाया था ?

सदानन्द— पडोसमे रहते है—आख़िर किसीको तो पहले करनी ही होगी । अगर तुम ही पहले बुला लोगी तो क्या बिगड जायगा ?

कमला— जो समाजकी रीति है, उसका तो पालन करना ही चाहिए । हम इस कोठीमे उनके बादमे आये । उनसे मिलने भी गये । पहले तो उन्हीको बुलाना चाहिए ।

सदानन्द— अब छोडो ये विदेशी सभ्यताके नियम । मै टेलीफोन किये देता हूँ ।

कान्ति— टेलीफोन तो उनके यहाँ है नही ।

सदानन्द— तो देव कह आयेगा ।

कमला— इस तरह दो-चार घण्टे पहले बुलानेसे तो वह समझ जायँगे कि उन्हे किसी की जगह बुलाया जा रहा है ।

सदानन्द— तो रहने दो, मत बुलाओ । ग्यारह बज रहे है, तुम रोटीकी फिक्र करो ।

कमला— जिन लोगोके यहाँ हमने खाया है, उन सबको एक ही बार क्यो न निबटा दूँ ? रोजरोज मुसीबत कौन करे !

सदानन्द—ऐसी ही मुसीबत थी, तो दावत दी ही क्यो ?

कमला— आप तो यो ही झुँझला रहे है। चोपडा और कमला यहाँ थोडे दिनके लिए आये है। तुम गुलमर्गमे उनके पास पूरे दस दिन रहे थे। क्या यह अच्छा लगता है कि हम उनको एक बार भी खाने पर न बुलाये ?

सदानन्द—बीस मेहमान और जो बुलाये है, वह किस लिए।

कमला— चोपडा और कमलाके लिए।

कान्ति— तब तो, माँ, पडोस वाले नन्दाको भी बुलाना चाहिए, रेलवे के अफसर ठहरे।

कमला— हाँ, ठीक कहती हो। रेल वालोसे मित्रता करनेमे फायदा है। जरा जाओ तो, देव, उनसे कह आओ।

देव— मै नही जाता। जब पार्टी होती है, तो हमे खाना अलग दिया जाता है।

कमला— अभी तुम बच्चे हो न, बेटा। जब कालेज जाने लगोगे, तो.

देव— [तीखे स्वरसें] हाँ, जी ! अब मै बच्चा हो गया। और कल जब कान्तिको ललिताके घर पहुँचाना था, तो मै बडा भाई बन गया था।

कान्ति— हूँ ! एक बार जरा-सा काम कर दिया, तो कौन-सा तीर मार दिया।

देव— तो जाओ, फिर तुम्ही कह आओ न। उस समय तो सुन्दर-सी साडी पहन कर सज जाओगी।

कान्ति— घबराते क्यो हो ? छ महीने ठहर जाओ—तुम्हे भी सूट मिल जायेंगे।

देव— यह मैट्रिककी परीक्षा क्या हुई, मेरे सिर पर एक भूत सवार

हो गया—जो बात हो, कालेज जाकर। और जो कही फेल हो गया, तो ?

[सब हँसते है]

कान्ति— वह तो तुम्हारी अपनी नालायकी होगी।

देव— [गुस्सेसे] देखो, कान्ति, जबान सभाल कर बात करो।

सदानन्द— बेटा, बडी बहनसे इस तरह नही बोलते। अब तुम कोई बच्चे तो हो नही। और तीन-चार महीने बाद कालेजमे पढने लगोगे। [देव खीझ कर उठ जाता है और खिडकीके पास खडा होकर बाहर झाँकने लगता है] इस तरह छोटी-छोटी बातो पर हमेशा जिद करना तुम्हे शोभा नही देता। जाओ, जहाँ माँ कहती है, हो आओ।

कमला— उनसे कह देना कि पहले भी दोचार बार आदमी भेजा था, लेकिन वह मिले नही।

सदानन्द— सच कह रही हो या झूठ ?

कमला— सचझूठका कोई सवाल नही। तुम काम करने दो। [निश्चिन्त भावसे] चलो, यह तो तय हुआ। अब बताओ पकाना क्या है ?

सदानन्द— यह तो स्त्रियोका काम है। तुम और कान्ति फैसला कर लो।

कमला— आप कहते तो हमेशा यही है, परन्तु मेरा बनाया हुआ खाना कभी पसन्द भी तो नही आता आपको ?

सदानन्द— [हँसकर] क्यो ताने मारती हो ? जो चाहे बना लो, मै कुछ नही कहूँगा।

कान्ति— मै बताऊँ—एक तो आलूकी कचौरी बनाओ, और पनीरकी खीर

पपू— मै सूप पीऊँगी।

कमला— तू पहले दूध तो पी। डेढ घण्टेसे प्याला सामने रखा है, अभी आधा भी नही हुआ। [सदानन्दसे] हाँ, तो बताओ न, क्या बनाये ?

सदानन्द— कह तो दिया जो तुम चाहो वना लो ।

[कमला मुसकरा देती है]

कान्ति— माँ, आलूकी कचौरी और पनीरकी खीर जरूर वनाओ ।

कमला— वनायेगा कौन ?

कान्ति— मैं बनाऊँगी । हमने पिछले सोमवारको कालेजमे सीखा था ।

सदानन्द— तुम मेहरवानी करो खाने वालो पर । जो चीजे कालेजमे वनाना सीख रही हो, वह अपने ही घरमे वनाना ।

[कान्ति लजा जाती है]

कमला— उसको शोक है, तो वनाने दो न । आखिर कालेज भी तो इसीलिए भेजा है । और फिर जब तक अभ्यास नही होगा, चीज ठीक कैसे बनेगी ?

सदानन्द— खाना पकानेका अभ्यास कोई कालेजका सबक थोडे ही है, जो कापी सामने रख कर याद किया जाय ।

देव— और, पापा, केवल कापी ही नही, तराजू, बाँट, आउ स मेजर और बूँदे गिननेके लिए ड्रापर भी जरूरी है । [हँसता है] खाना क्या, अच्छा खासा नुस्खा तैयार करना होता है ।

कान्ति— तू चुप रह । उस दिन मेरे नोट्सकी कापी रसोईमे रह गई थी, तो महाराजने रद्दी समझ कर जला दी । [रोनी सूरत बना लेती है] ।

देव— [हँसते हुए] इसमे रोनेकी क्या बात है ?

[टेलीफोनकी घण्टी बजती है । सदानन्द उठ कर टेलीफोन सुनने जाता है । देव बराबर वाले कमरेमें चला जाता है]

कमला— [कान्तिको मनाते हुए] चल, जाने दे । अभी कितना काम पडा है । तू जरा बरतन निकलवा । तब तक मैं बाजार हो आऊँ ।

कान्ति— लेकिन चाँदीके बरतन तो सेफमे रखे है ।

कमला— अरे बावा, तब तो जल्दी करनी पडेगी। आज है भी रविवार, कही सेफ वन्द न हो गया हो।

कान्ति— नही, चार बजे तक खुला रहेगा, अभी तो बारह ही बजे है।

कमला— बारह बज गये!

सदानन्द— [हाथमें टेलीफोन पकड़े हुए] मिसेज कोहलीका टेलीफोन है।

कमला— क्या कहती है?

सदानन्द— [टेलीफोन पर हाथ रख कर] तुम्हे बुला रही है।

कमला— [टेलीफोन लेकर] हॉ, कौन लक्ष्मी नमस्ते धन्यवाद आप अच्छी तो हैं जी, हॉ, कहिए कौन? आपके मित्र नही, मै नही जानती उन्हे यह तो बडी खुशीकी बात है हॉ, हॉ, ज़रूर लाइए। इसमे हिचकिचानेकी क्या जरूरत है नही, अभी तो किसी चीजकी ज़रूरत नही। कुछ चाहिएगा, तो टेलीफोन कर दूँगी नमस्ते! [टेलीफोन पटककर] तीन आदमी अपने साथमे और ला रही है।

सदानन्द— कौन है?

कमला— मुझे क्या मालूम! पूछ रही थी कि तीन मेहमान अभी-अभी आये हैं, उनको भी साथ लेती आऊँ? मै कैसे मना करती?

सदानन्द— ये लोग भी कितना परेशान करते हैं!

कमला— मै तो स्वय तग हूँ इस चुडैलसे। कभी भी तो ऐसा नही हुआ कि यह आई हो और अपने साथ दो-तीन वेवुलाये मेहमानोको न लाई हो।

सदानन्द— और वह कोहली भी मालूम पडता है, बिलकुल गधा है। वीवी पगली है, तो क्या वह भी इतना नही समझता कि राशनके ज़मानेमे किसीको खिलाना-पिलाना कितना मुश्किल है।

कमला— हद हो गई!

सदानन्द— अव तो सिर पर आई निभानी ही पडेगी।

कमला— [हताश होकर] कान्ति, देखना देव अभी नन्दाके यहाँ न गया हो, तो उसे रोक लो।

[देव आता है]

देव— माँ, उनसे कह आया हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। जरूर आयँगे। अब मै जा रहा हूँ क्रिकेटका मैच देखने—शामको लौटूँगा।

कमला— आज न जाते तो अच्छा था। घरमे काम है।

[देव बिना सुने ही भाग जाता है]

सदानन्द— जाने दो उसे। खेलकूद आयेगा। काम करनेके लिए नौकर जो है।

कमला— जी, हाँ, बहुतसे नौकर है! [व्यंग्यसे] एक तो आपका चपरासी ही है—अभी तक नही पहुँचा।

सदानन्द— आजकल इन लोगोके मिजाज बिगडे हुए है। अपने अफसर तककी तो परवा करते नही, उसके घरवालोकी क्या करेगे!

कमला— आप ही ने तो कहा था कि चपरासी ला देगा सामान। उसीके भरोसे बैठी रही, नही तो कबका मँगा लिया होता।

सदानन्द— क्या खरीदना है? चलो, अब ले आयँ। मै मोटर निकालता हूँ, तुम तब तक महाराजको बता दो क्या बनाना है।

कमला— क्या बजा है?

कान्ति— साढे बारह।

कमला— तो इस समय जानेसे क्या लाभ? दो घण्टे तो लगेगे ही। न इधरके रहेगे, न उधरके। खाना खानेके बाद ही चलेगे।

सदानन्द— दो घण्टेका वहाँ क्या काम—बाजारसे सब्जी, और फल ही तो लाने हैं।

कमला— और बैंक भी तो जाना है।

सदानन्द— कल सुबह ही तो मैंने तुम्हे दो सौ रुपये दिये थे। आज फिर बैंक? कहाँ गये सब रुपये?

कमला— सत्तर रुपयेकी तो मेरी साडी ही आई थी। एक सौ तीस ही तो बचे है अब। खैर, घबराओ नही, बैंकसे तो मुझे चाँदीके बरतन निकालने है।

सदानन्द— जाने भी दो चाँदीके बरतनोको। कल फिर उन्हे रखने जाना होगा।

कान्ति— नही, पिताजी, रातको खाना हो, तो चाँदीके बरतन बहुत अच्छे लगते है। कमरा जगमगा उठता है।

कमला— और फिर चाँदीके बरतन है किस लिए, जो ऐसे अवसर पर इस्तेमाल न किये जायँ?

सदानन्द— जिन लोगोको तुम बुला रही हो, उन सबने तो ये बरतन देखे हुए है—अब और किसको दिखाने है?

कमला— सबने कहाँ देखे है। और देखे भी हो तो क्या? माँगेके थोडे ही है कि एक बार दिखाकर लौटा दिये।

सदानन्द— जो अनजाने मेहमान आ रहे है, उनमेंसे कोई चोर हुआ, तो?

कमला— ईश्वरके लिए ऐसे अशुभ वचन न निकालो।

सदानन्द— जैसी लूटमार आजकल हो रही है, उसे देख कर ऐसा होना असभव नही।

कमला— [कान्तिसे] तो फिर क्या करे?

सदानन्द— मै कहता हूँ बरतनोकी फिक्र छोडो, दावतके लिए खाना बनवाना शुरू करो।

कमला— चीजे तो बन जायँगी। बनानेमे देर ही कितनी लगती है। दो घण्टेका काम है सारा।

सदानन्द— जरा बाजारका काम जल्दी कर लेती, तो मै भी दो घण्टे ब्रिज खेल आता।

कमला— बस खाना खाते ही चल पडेगे। कान्ति, महाराजसे पूछो तो कितनी देर है?

[रायसिंह आता है]

रायसिंह— बीबीजी, महाराजके पेटमे बडे जोरसे दर्द हो रहा है ।

कमला— लो, यह एक और मुसीबत आई ।

सदानन्द— [रायसिंहसे] हुआ क्या है उस गधेको ?

रायसिंह— यह तो मुझे मालूम नही—वह अपनी कोठरीमे चारपाई पर लेटा हुआ है ।

कमला— [घबराकर] अब क्या करे ? मैंने तो लक्ष्मीसे भी नौकर भेजनेको मना कर दिया था ।

कान्ति— होटलसे कोई आदमी बुलवा लो । दस रुपये लेगा ।

सदानन्द— पैसे देकर तो सब कुछ हो सकता है, खुद भी थोडी हिम्मत करना सीखो ।

कान्ति— तो लक्ष्मी मौसीसे पूछूँ ?

कमला— पहले उसको तो देखो हुआ क्या है ? जब भी काम होता है बीमार पड जाता है ।

कान्ति— मुझे तो लगता है वह बहाना कर रहा है ।

कमला— कुछ भी हो, इस समय तो कोई-न-कोई बन्दोबस्त करना ही चाहिए ।

सदानन्द— इन नौकरोकी जाति ही ऐसी है । शुरू-शुरूमे तो बडा मन लगा कर काम करते है । फिर दिमाग आसमान पर चढ जाता है । सोचते है जैसे इनके बिना हमारा गुजारा हो ही नही सकता । [**कमलासे**] यदि तुमने आज दावतका झझट न किया होता तो धक्के देकर उसे बाहर निकाल देता ।

कमला— न, न, ऐसा न करना ! मै लक्ष्मीकी तरह लोगोको डिब्बोका खाना नही खिलाना चाहती । [**कान्तिसे**] जरा लक्ष्मीको टेलीफोन करके तो देखो । पूछो अपने रसोइयेको भेज सकती है ?

[**कान्ति टेलीफोन करने लगती है**]

कमला— [सदानन्दसे] आप जरा महाराजके पास जाइए—उससे प्यार से बातचीत करना। सहानुभति प्रकट करना। उसे तसल्ली हो जायगी।

सदानन्द— जाता हूँ। शायद कुछ हो जाय। [उठता है]।

कमला— देखना, जरा नम्रतासे बात करना, कही इतनेसे भी हाथ न धो बैठे।

कान्ति— एक सेरीडानकी गोली दो, तो सब ठीक हो जायगा।

कमला— सेरीडान तो है नही।

सदानन्द— [खीझ कर] तो लाल स्याहीकी गोली ही दे दो।

कान्ति— वह तो जहर होती है।

कमला— [घबरा कर] कही सचमुच दे ही न देना—मर गया, तो और मुसीबत पडेगी।

सदानन्द— क्या समझ रखा है तुमने मुझे? मै पागल हूँ जो उसे ज़हर दे दूँगा? लेकिन सवाल यह है कि यदि वह न माना, तो खानेका क्या होगा?

कमला— [चिढ़ कर] मुझसे पूछते है?

सदानन्द— और किससे पूछूँ?

कमला— मेरी बलासे। आपके ही दोस्त आ रहे है। आप ही निकालिए कोई तरकीब।

सदानन्द— यह खूब रही! जब प्रबन्ध करना हो तो मित्र मेरे, और जब तारीफ हो तो तुम!

कमला— [नम्र होकर] इन झगडोसे क्या लाभ? तुम जाकर जरा देखो तो उसे हुआ क्या है?

सदानन्द— हुआ वही है, जो सबको होता है। तनख्वाहमें दो चार रुपये और बढा दो, ठीक हो जायगा।

कमला— यह तो मै नही होने दूँगी। यह तो सरासर गले पर छुरी रखकर लेनेवाली बात हुई।

कान्ति— [टेलीफोन रख कर] मौसीजी कहती हैं कि उनका महाराज तो छुट्टी ले गया है। रातका खाना तो वनाना था नही और आपने भी मना कर दिया था।

कमला— [लाचारीसे] तो फिर क्या करे—दे दे उसे दोचार रुपये और ?

कान्ति— तनख्वाह वढानेके बजाय उसे दोचार रुपये इनाम जो दे दे।

सदानन्द— इनाम तो खानेके बाद दिया जाता है। लेकिन उससे पहले क्या होगा ?

कमला— [कान्तिसे] तुम पराँठे तो बना लोगी न ?

कान्ति— पराठे बनाना हमें सिखाया ही नही गया अभी।

सदानन्द— [आवेशमें] कोई कामकी चीज सिखाई भी है ?

कमला— पराँठोमें सीखने वाली बात ही क्या है ? आटा गुँधा हुआ रखा ही है। रायसिह बेलता जायगा, तुम तवे पर डालकर घीमें सेक लेना।

कान्ति— कौनसे घीमें बनाऊँ—असली या वनस्पति ?

कमला— इस समयके लिए तो बडे टीनमेंसे निकाल लो, और रातके लिए जो दस पाउड वाला वनस्पतिका टीन मँगाया था, उसे खोल लेना।

सदानन्द— तो तुम खाना बनाओगी इस समय ?

कमला— विचार तो यही है।

सदानन्द— तब हम जा चुके बाजार।

कमला— आप जरा महाराजकी खबर तो लीजिए। तब तक खाना तैयार हो जायगा।

सदानन्द— मेरी तो भूखके मारे जान निकल रही है और इस गधेको बहाना करके लेटनेकी पडी है। [जाने लगता है]

[सदानन्द अभी दरवाजे तक ही पहुँचता है कि पप्पू बाहरसे रोती हुई आती है, हाथ रगे है।]

सदानन्द— क्यो, क्या हुआ ?

पपू— भैयाने मारा ।

सदानन्द— [उसे गोदीमें उठा कर] तूने उसकी चीजोको क्यो छूआ था?

कमला— [सदानन्दकी गोदीमें से पपूको लेकर] तू तो मेरी रानी बेटी है । [आँसू पोंछ कर] देखो, अभी कान्ति छोटा-सा पराँठा बनाकर लायेगी पपूके लिए ।

कान्ति— माँ, इसे भूख तो है नही । इसका सोनेका समय हो रहा है ।

सदानन्द— इस समय मत सोने देना इसे । नही तो रातको मुसीबत करेगी । शामको जरा जल्दी खिला-पिला कर सुला देना ।

कमला— अच्छा । तो फिर चले बाजार ?

सदानन्द— कमाल करती हो तुम भी ! अभी तो तुम कह रही थी कि खाना खाकर चलेंगे ।

कमला— महाराज जो बीमार पड गया है ।

सदानन्द— मुझे तो पहले ही आज खाना मिलनेकी आशा नहीं थी ।

कमला— खाना बनानेमे कुछ देर तो लगेगी ही । रायसिंह अंगीठी सुलगा रहा है । जैसे ही वह सुलगी और खाना तैयार समझो ।

सदानन्द— कैसे समझ लूँ ! मै ऐसे खानेसे बिना खाये ही अच्छा । मुझे तो दो चार बिस्कुट दे दो । मक्खन और पनीरका डिब्बा खोल दो । फिर तुम जानो और तुम्हारा काम ।

[अलमारीमें से पनीरका डिब्बा निकाल कर उसका ढकना काटना शुरु करता है । टेलीफोनकी घण्टी बजती है । सुनने जाता है ।]

कमला— कान्ति, तो फिर तुम पराँठे तो बना ही लेगी ।

कान्ति— क्यो नही ।

कमला— और क्या बनाये ?

कान्ति— पनीर भी मैं बना लूँगी । बाकी चीजे तो पकीपकाई डिब्बोमें मिल जाती हे । हाँ, पुलाव बनानेके लिए रायल होटलसे कश्मीरी पण्डितको बुला लो ।

कमला— डिब्बे किस चीजके लाऊँ ?

कान्ति— सूपके ।

कमला— खडे-खडे सूप कैसे खायँगे ?

सदानन्द— [गुस्सेसे टेलीफोन पटकते हुए] कुछ न बनाओ इन सालोके लिए। अफसरी तो इनके दिमागमेंसे किसी समय भी नही निकलती ।

कमला— क्यो, क्या हुआ ?

सदानन्द— खोसलाका वच्चा कहता है कि वह नौ वजेसे पहले नही पहुँच सकता ।

कमला— क्यो ?

सदानन्द— कारण नही वताया। कही वैठ कर चढायगा। मुझे तो गुस्सा इस वात पर आता है कि सब जगह ठीक वक्त पर पहुँचता है, पर क्योकि मै उसके साथ काम करता हूँ, इसलिए मेरे यहाँ समय पर आनेसे उसकी शान कम हो जायगी ।

कमला— और लोग भी आठ वजे थोडे ही आयँगे ।

सदानन्द— लेकिन जो आठ वजे आ गये, तो उन्हे घण्टे भर इन्तजार करना वुरा लगेगा ।

कमला— अरे, गपशप करते रहेगे ।

सदानन्द— परन्तु यह तो प्रत्यक्ष है कि वह मेरा अफसर होनेका लाभ उठा रहा है ।

कमला— तो कर भी क्या सकते हो ?

सदानन्द— तुम्ही वताओ क्या करूँ ? यदि और कोई ऐसा करनेकी हिम्मत करता, तो साफ-साफ कह देता कि इतनी देर प्रतीक्षा करना कठिन होगा ।

कमला— चलो, अब जाने दो। बाजार चले ?

सदानन्द— [पनीरका टुकड़ा मुँहमे डाल कर] चलो। [अलमारी खोल कर] एक बिस्कुट और खा लूँ ।

कमला— लाना क्या-क्या है ?

सदानन्द— जो कुछ मिल जायगा ।

कमला— मेरी तो राय है कि बन्द डिब्बे ले ले—पकोपकाई चीजे होगी । कोई झझट ही नही रहेगा ।

सदानन्द— लेकिन डिब्बेकी सब चीजोका एक-सा ही स्वाद होता है । इससे तो तन्दूरकी रोटियाँ और माश की दाल ले लो । स्वाद तो आ जायगा ।

कमला— पराँठे तो कान्ति बना लेगी । तन्दूरकी रोटियोकी जरूरत नही । परन्तु बाकी चीजे बनाना तो मुश्किल है । आपका चपरासी भी तो नही आया । रायसिह अकेला क्या क्या करेगा ?

सदानन्द— तुम सबने मिलकर मुझे तो पागल बना दिया । [सिर पकड कर बैठ जाता है] मेरी तो समझमे कुछ नही आता । तुम जैसा चाहो करो ।

कमला— यह खूब रही ! एक तो महाराज बैठ गया और अब आप परेशान कर रहे है । मै भी बायकाट कर दूँ, तो कैसा रहे ?

सदानन्द— तुम जैसा कहोगी मै करता जाऊँगा—और क्या चाहती हो ?

कमला— मैने तो सीधा तरीका बता दिया—जब तक हम बाजार होकर आते है, कान्ति पराँठे बना लेगी ।

कान्ति— माँ, कितने पराँठे बनाऊँ ।

कमला— पचीस आदमी होगे—पचास काफी होगे ।

सदानन्द— [व्यग्यसे] मेरे लिए तो आठ पराँठे बनाना—मै सुबहका भूखा हूँ ।

कमला— छोडिए भी । यह समय मजाकका नही ।

सदानन्द— मै हँसी नही कर रहा हूँ । मुझे बडे जोरकी भूख लग रही है । [कमला हँसती है] और उन लोगोका भी ध्यान रखना, जो अपने ड्राइवरोको भी खाना खिलवाते है और घरवालोको भी भिजवाते हैं ।

कमला— यह नही होगा। मेरे यहाँ कोई शादी थोडे ही है।

कान्ति— थोडे ज्यादा ही बना लेंगे, माँ। वनस्पतिमे ही तो बनेगे।

सदानन्द— ऐ, वनस्पतिमे! और अभी से बना कर रख दोगी—रात तक प पड़ हो जायँगे।

कमला— नही होंगे। आप चलनेकी तैयारी कीजिये।

[टेलीफोनकी घण्टी बजती है। सदानन्द सुनता है]

सदानन्द— हाँ फरमाइए जी, चोपडा साहब क्या कहा आपने? आज रातको तार कहाँसे आ गया इसमे डरनेकी बात तो कोई नही कहिए न, साहब हाँ, हाँ, जल्दी आइए क्या कहा गाडी रात्रा नौ बजे जाती है, आपको खाना आठ बजे तक अवश्य मिल जाना चाहिए अच्छा।

[टेलीफोनको इतनी जोरसे पटकता है कि वह नीचे गिर पडता है और टुकडे-टुकड़े हो जाता है]

कमला— क्या भूकम्प आ गया?

सदानन्द— ऐसीतैसी इन सबकी! भाडमे जायँ सबके सब। एक कहता है नौ बजेमे पहले नही पहुँच सकता, और जिसके लिए यह रात बरबादी हुई, वह आठ ही बजे खाकर चला जाना चाहता है।

कमला— कौन, चोपडा?

सदानन्द— हाँ, वही तुम्हारी सहेली और उसका मियाँ चोपडा! चूल्हेमे जाय ऐसी दावत।

[कमलाके हाथसे चीनीकी बडी प्लेट गिर जाती है। वह निस्सहाय सी सदानन्दको ओर देखती है, जो एक-एक करके सब बरतन खिडकीके बाहर फेंके जाता है।]

[परदा]

आवागमन

०

आवागमन

[मञ्च पर बिलकुल अँधेरा है, केवल कुछ व्यक्ति सिरसे पैर तक सफेद कपडोमें दिखाई देते है। इनके ऊपर सफेद रोशनी भी पड़ रही है। पीछे वाला परदा काला है, उस पर तारे चमक रहे है। आसपास तथा नीचे ज़मीन पर घोर अन्धकार है जिससे ऐसा प्रतीत होता है मानो ये लोग कही आकाशमें टँगे है। हाथमें झण्डा पकड़े नेता एक छोटी-सी लकड़ीकी पेटी पर खडे लोगोको लेक्चर दे रहे है।]

नेता— यह अन्याय नही तो क्या है? भाइयो और बहनो, मैंने अपनी साठ सालकी आयुमें ऐसा जुल्म होता नही देखा। क्या हम इसे चुपचाप सहन कर लेंगे? नही! कभी नही! [लोग ताली बजाते है। नेता अपना भाषण जारी रखता है।] यहाँ साधारण जनताकी पुकार कौन सुनता है! कहते हैं फैसला होगा कि हम नरकमे भेजे जायँगे या स्वर्गमें? हम तो प्रतीक्षा करते-करते थक गये। इस दुविधासे तो, भई, हमे नरकमे ही फेको और छुट्टी करो। लेकिन नरकमे क्यो? हमने कौन-सा ऐसा पाप किया है कि हम स्वर्गमे नही जा सकते? क्यो, भाइयो? एक जोरदार नारा लगाकर अपनी आवाज उठाओ तो।

[देवदूत आता है]

देवदूत— [नेतासे] मैंने आपसे पहले भी कहा है कि यहाँ पर यह भाषणबाजी नही चल सकती। अपनी धरतीकी सब बातें भूल जाओ। अब तुम एक दूसरी दुनियामे हो। [लोगोसे] आप सब अपना रास्ता पकडिए।

[लोग धीरे-धीरे खिसक जाते हैं। केवल नेता अपनी पेटी पर खड़ा रह जाता है।]

देवदूत— यह पेटी कहाँसे लाये हो ?

नेता— इसे तो मैं सदा अपने पास रखता हूँ। क्या मालूम किस समय इसकी जरूरत पड़ जाय।

देवदूत— यहाँ पर इसकी आज्ञा नहीं है। नीचे उतरो!

[नेता उतरता है। देवदूत पेटीको उठा कर एक कोनेमें रख देता है और चला जाता है।]

नेता— [स्वतः, परन्तु बोलनेका ढंग ऐसा है मानो सामने श्रोतागण बैठे हों] भाषण हमारा मूल अधिकार है। इसे हमसे कौन छीन सकता है!

[एक लम्बी कर्कश ध्वनि होती है, जिससे यह जान पड़ता है कि एक और व्यक्तिकी आत्मा धरतीसे आ रही है। दो चार क्षणमें एक संवाददाता हाथमें नोटबुक लिये प्रवेश करता है।]

संवाददाता— आप कुछ कह रहे थे ?

नेता— तुम हो कौन ?

संवाददाता— मैं एक अखबारका संवाददाता हूँ। मैंने कुछ क्षण पहले चालीस वर्ष तक संवाददाताका काम करते-करते अपना शरीर त्याग दिया।

नेता— आप ठीक मौके पर आ गये। आपका यहाँ होना बहुत आवश्यक है। देखो तो, यहाँ कैसा अत्याचार हो रहा है! हमारे जन्मसिद्ध अधिकारोंको किस प्रकार कुचला जा रहा है, दुनिया वालोंको इसकी खबर देनी चाहिए। आप अभी इसकी रिपोर्ट अपने अखबारको भेज दीजिए और उनसे कहिए कि इसे मुख्य पृष्ठ पर मोटे अक्षरोंमें छापें।

संवाददाता— आप यहाँ पर भी लेक्चर और आन्दोलनसे बाज नहीं आये ?

नेता— जब तक मुझमे दम है मै अपने उद्देश्यकी पूर्तिके लिए लडता रहूँगा ।

सवाददाता— आप भूल रहे है—आप जीवित नही है । और जहाँ तक आदर्शोका सवाल है आपको केवल अपनी व्यक्तिगत उन्नति की ही चिन्ता है । किन्तु यह सब बाते यहाँ नही चलेगी । अपनेको व्यर्थ इस धोखेमे न रखिए । यह धरती नही जहाँ आप लोगोको फुसला कर अपना उल्लू सीधा कर लेगे ।

नेता— तुम एक धरतीकी बात करते हो—मै अपना मत सातो लोकमे फैलाऊँगा । एक जूनमे नही, चौरासी लाख योनियो मे भी मै अपना आदर्श नही छोडूँगा । चाहो तो तुम मेरा यह प्रोग्राम टेलीप्रिंटर पर भेज दो ।

संवाददाता— [हँसकर] आपको जो कहना है लिख कर दीजिये । मुझे आपकी जबान पर विश्वास नही ।

नेता— [भड़क कर] क्या मतलब ? मेरा अपमान करना चाहते हो ?

संवाददाता— दूधका जला छाछको फूँक कर पीता है । आप नेता ठहरे, नेताओकी स्मरणशक्ति ज़रा कमज़ोर होती है । याद है आपके कारण मुझे अपनी नौकरीसे हाथ धोना पडा था ?

नेता— झूठ । मैने कभी किसीको कोई हानि नही पहुँचाई ।

संवाददाता— न जाने आप हानि किसे कहते है ! परन्तु इतना तो याद होगा कि दस वर्ष पूर्व जब देश भरमे कपडेकी मिलोमे जबर-दस्त हडताल चल रही थी तो आपने मजदूरोके बीच खडे होकर वह धूआँधार भाषण दिया था कि क्या कहे ! और जब अगले दिन अखबारोमे वह छपा और आप पर मुख्य मन्त्रीकी झाड पडी, तो आप साफ मुकर गये कि आपने ऐसी बात कभी कही ही नही । आपने हमारे अखबारके सपादक से शिकायत भी कर दी कि मेरे जैसे गैरजिम्मेदार व्यक्तिको

ऐसा दायित्वपूर्ण काम नही सौपना चाहिए। सपादकने आव देखा न ताव मुझे उसी क्षण निकाल बाहर किया।

[फिर वही लम्बी कर्कश ध्वनि होती है और एक स्त्री प्रवेश करती है।]

नेता— क्षमा कीजिए, यहाँ पर आपके बैठनेकी कोई जगह नही है। मेरे पास केवल यह पेटी है। [कोनेसे पेटी उठा कर उसके पास लाकर रख देता है।]

स्त्री— यह आप ही को मुबारक हो!

नेता— आपका मतलब?

स्त्री— मै कई वर्षोंसे आपको इस पर खडे होकर भाषण देते देखती आई हूँ। दिमाग चाट जाते थे बोल बोल कर।

नेता— [नाराज होकर] आपको इस तरह बदतमीजीसे बात करने का कोई हक नही है।

स्त्री— आप हककी कहते है, मै तो आप पर मुकदमा चलाऊँगी।

सवाददाता— [अपनी नोटबुकमें लिखते हुए] सनसनी पूर्ण घटना . एक सुन्दर युवतीका माननीय नेता पर आरोप .बहुत दिलचस्प कहानी

नेता— तुम तो कहते थे यहाँसे कोई सूचना नही भेजी जा सकती?

संवाददाता— अरे, हाँ, ठीक तो कहते है आप। मै कुछ बौखला-सा गया हूँ। आदतसे लाचार हूँ। [नोटबुक बन्द करके जेबमें रख लेता है।]

नेता— श्रीमतीजी, आप कुछ क्रोधित जान पडती है। मै पूछ सकता हूँ इसका कारण क्या है? जहाँ तक मुझे याद है मैने तो कभी आपको कोई कष्ट नही दिया।

स्त्री— कोई किसी को एकाधबार कष्ट दे तो याद भी रहे, जिनका सारा जीवन ही कपट और धोखेबाजीमे बीत जाये उन्हे क्या क्या याद रहेगा!

नेता— [व्यंग्यसे] हूँ! जरा सुनूँ तो मैने आपका क्या बिगाडा है?

स्त्री— सुनना चाहते हैं, तो सुनिए—आपको याद होगा कि मैं भी आप हीके गाँवमे रहती थी। बहुत अमीर तो न थी, लेकिन गाँववाले मेरा आदर करते थे, मेरी बात मानते थे। चुनाव के समय आपने मेरी सहायता माँगी थी और वह सब्ज बाग दिखाये हमे कि क्या कहूँ—तुम्हारे बेटेको अच्छी नौकरी दिला दूँगा, इस गाँवमे अस्पताल बनवाऊँगा, रेलकी लाइन यहाँ तक आयेगी, लडकोके लिए हाई स्कूल होगा। आपकी वातोसे तो ऐसा जान पडता था कि गरीबीका अन्त हो जायेगा, फसल दोगुनी होगी, किसान मालामाल हो जायँगे। ऐसे झाँसे दिये कि हम लोगोने जीतोड मेहनत की और आप चुनाव जीत गये। पर हमे क्या मिला ? आप राजधानीमे रहने लगे—हमारे गाँवसे कोसो दूर। हम पर कई मुसीवते आई, वाढ आई, अकाल पडा, किन्तु आपने अपनी सूरत तक न दिखाई।

नेता— झूठ, बिलकुल झूठ। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब बाढ आई थी तो मैंने हवाई जहाज़ पर बैठ कर बाढ-पीडित गाँवो का ऊपरसे निरीक्षण किया था। जब अकाल पडा था तो मैंने ऐसा दर्दनाक भापण दिया कि विधान सभाके सदस्योके हृदय रो उठे।

स्त्री— आप उडकर तमाशा देखते रहे, भाषण देते रहे और हमारे गाँवके चालीस प्रतिशत लोग मर गये, हमारे पशु बह गये, हमारे घर नष्ट हो गये, हमारे खेत उजड गये।

नेता— मुझे यह सब सुनकर बहुत दुख हुआ था। परन्तु सोना तो आगमे तप कर ही निखरता है। ससारमे जितने बडे-बडे मनुष्य हुए है वे सब कष्ट भोग कर ही इतने ऊँचे पहुँचे है।

सवाददाता— वाह ! वाह !

[फिर वही लम्बी-सी कर्कश ध्वनि होती है और मच पर उपस्थित व्यक्ति उत्सुकतासे आगन्तुककी प्रतीक्षा करने लगते हैं। एक सरकारी अफसर प्रवेश करता है, परन्तु इन लोगोकी ओर पीठ करके एक ओर खड़ा हो जाता है।]

संवाददाता— अरे, यह तो कमिश्नर साहब है! [आगे बढकर] नमस्कार!

कमिश्नर— [रुखाईसे] नमस्कार!

नेता— कमिश्नर साहब, आपने मुझे पहचाना नही?

कमिश्नर— खूब अच्छी तरह पहचानता हूँ आपको। नित्य नई सिफा-रिशे लेकर आप मेरे पास आते थे—आज उसका तबादला रोक दीजिए, तो कल उसकी तरक्की कर दीजिए, यह मेरा भतीजा है, इसे ज़मीन दिला दीजिए, यह चाचा है, इसे ठेका मिल जाये तो आपकी कृपा होगी। और सिफारिश भी सदा उन लोगोकी करी जो बिलकुल निकम्मे, अयोग्य और भ्रष्ट थे।

नेता— देखिए, साहब, आप बहुत बढचढ कर बाते कर रहे हैं।

कमिश्नर— [तीखेपनसे] मैं ठीक ही कह रहा हूँ। जिन दुष्ट घूसखोरों को पकड कर जेलके अन्दर करना चाहिए था, आपने उनको शरण दी और न्यायकी कडी सजासे बचाया। नतीजा यह हुआ कि सरकारी कामकाजमे चारो ओर भ्रष्टाचार फैलता गया और शासकोके प्रति जनताका विश्वास उठ गया।

नेता— देखिए, मिस्टर, जरा जबान सँभाल कर बात कीजिए, नही तो आप अपनी नौकरीसे हाथ धो बैठेगे।

कमिश्नर— अब तक इसी डरसे तो जी खोल कर कुछ कह नही पाया था। परन्तु मुझे अपने विचार प्रकट करनेका अधिकार है। मुझे खुशी है कि आप यहाँ मिल गये। जरा दिलका गुबार तो निकाल लूँ।

[फिर वही कर्कश ध्वनि होती है । एक पुरुषकी आत्माका प्रवेश ।]

नेता— [आगन्तुकको देखकर प्रसन्न होते हुए] अरे मित्र, तुम कहाँ ! कितने दिनो बाद मिले हो !

मित्र— आज आपने मुझे पहचान कैसे लिया ? क्या मुझसे कोई काम है ?

नेता— [उसके कन्धे पर हाथ रख कर] अरे, तुम तो मेरे बचपनके साथी हो । स्कूलमे हम इकट्ठे पढे, साथ खेले । क्या दिन थे वे भी ! भाइयोमे भी इतना प्यार नही होता होगा । याद है न ?

मित्र— याद क्यो नही ! और यह भी याद है कि निर्वाचनके समय मैंने आपके लिए कितना काम किया था । अपना तन, मन, धन सब लगा दिया । सोचा, मित्रकी सहायता करनी चाहिए । परन्तु जब आप चुनावमे जीत गये, बडे आदमी बन गये, तब तू कौन और मै कौन ! यहाँ तक कि एक बार मिलने गया तो सीधे मुँह बात तक नही की । सोचा होगा कही कुछ माँग न बैठे ।

नेता— नहीं, नही, यह कभी नही हो सकता । तुम्हे भ्रम हुआ है । मै तो देशसेवामे ऐसा उलझ गया कि अपने तनकी भी सुधबुध नही रही ।

मित्र— चलो, जाने दो । ऐसा हुआ ही करता है ।

[फिर वही लम्बी कर्कश ध्वनि । नेताके प्रतिद्वन्द्वीकी आत्मा आती है]

प्रतिद्वन्द्वी— [नेताको देखकर] तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? वही पुरानी चालबाजियाँ !

नेता— कैसी चालबाजी ? तुम तो आते ही झगडने लगे ।

प्रतिद्वन्द्वी— [अन्य लोगोसे] भाइयो, आप लोग इनसे बचकर रहिएगा । इनका काटा पानी भी नही माँगता । इन्होने तो झूठसच बोल कर केवल अपना उल्लू सीधा करना सीखा है ।

[फिर कर्कश ध्वनि और एक नवयुवक की आत्माका प्रवेश]

नवयुवक— [नेताकी ओर संकेत करके] यही है जिसने मेरी रोजी छीन ली, मुझे नौकरीसे हटा कर अपने चाचाके पोतेको मेरी जगह दिला दी। वेकारीका जमाना। मैंने दर दर धक्के खाये, सबके सामने हाथ पसारा। अन्तमे तग आकर मैंने आत्महत्या कर ली। मेरी मृत्युका जिम्मेदार यह है।

[नेता कुछ क्षण इधर-उधर देखता है। स्थिति गम्भीर होती देख जल्दीसे एक ओर रखी अपनी पेटी उठा लाता है और उस पर खड़ा होकर बोलना शुरू कर देता है।]

नेता— भाइयो और बहनो, आपने मुझे यह अवसर दिया कि मैं आपसे अपने मनकी दो चार वाते कह सकूँ। इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। मेरा सौभाग्य है कि मैं आप जैसे बुद्धिमान देशभक्त और कार्यकुशल सज्जनोके बीच खडा हूँ। आप लोगोने अपना खून पसीना बहा कर इस देशको महान् बनाया, आपके परिश्रमसे भारत फिर अपनी प्राचीन सभ्यता और सस्कृतिके गौरवको प्राप्त कर सका और ससारको शान्तिका सन्देश दे सका। आप अपनी निस्स्वार्थ सेवासे वापूके स्वप्नोको प्रत्यक्ष रूप दे रहे ह। आप लोग जानते ही हैं कि मैंने भी अपनी मातृभूमिके लिए अपना जीवन अर्पित किया है।

[नेताके भाषणको सुननेके लिए श्रोतागण इकट्ठे होने लगे हैं।]

स्त्री— [उठकर] भाइयो, आप फिर इनकी बातोमे आने लगे। क्या आप अपने अनुभवसे कुछ सीखेगे भी या नही ?

कुछ पुरुष— [स्त्रीसे] बैठ जाओ! बैठ जाओ! सुनने दो।

नेता— [अपना भाषण फिरसे चालू करते हुए] हाँ, तो मैं कह रहा था कि यह पचवर्षीय योजना, यह हमारा महान् देश .

[देवदूत आता है]

देवदूत— [नेतासे] फिर वही हुल्लडबाजी! नीचे उतरो इस पेटी से।

[नेता उतर जाता है। देवदूत पेटी उठा कर फिर कोनेमें रख देता है]

देवदूत— आप सब लोग इस दरवाजेसे भीतर जाइए। [पिछले परदे में एक दरवाजा खुलता है।] वहाँ आपको बता दिया जायगा कि आपको किधर जाना है। [नेता बढ़ कर सबसे आगे होना चाहता है। देवदूत उसका कन्धा पकड़ कर उससे कहता है] आप इतनी जल्दी मत करिए। [अन्य लोगोंसे] आप लोग जाइए। इनका मामला अलग है। इन्हे न तो स्वर्ग वाले लेनेको तैयार है, न नरक वाले। इसलिए धर्मराजने निर्णय किया है कि इन्हे वापस धरती पर भेजा जाय।

[देवदूत जाता है। सब लोग दरवाजेकी ओर बढ़ जाते हैं। नेता फिर अपनी पेटी उठा कर मंचके बीचमें लाकर रखता है। परदा गिरता है]

●

बलिदान

•

बलिदान

[पहला दृश्य । समय : संध्या]

[एक विद्यार्थी नवयुवकका कमरा। चीजें जहाँतहाँ बिखरी पड़ी हैं। एक ओर दीवारके साथ पलग सटा हुआ है। तकिया पलंगपोशके ऊपर पडा है। सामने वाले कोनेमें मेज कुरसी लगी है। उसके साथ ही वगलमें एक अलमारी है, जिसमें कितावोके अतिरिक्त और कई चीजें हैं, जैसे, कपडे, जूते, पुराने अखवार। पलगके सामने एक आरामकुर्सी है, जिस पर रमेश टाँगें पसारे वैठा है। दूसरी कुरसी पर बलदेव हथेली पर ठुड्डी टेके बड़े गभीर भावसे रमेशकी ओर देख रहा है। वलदेव उठता है, कमरेका चक्कर काटता है, फिर खिडकीसे बाहर झाँकता है। फिर खिन्न होकर पलंग पर लेट कर कुछ सोचने लगता है। रमेश उसकी यह हरकतें देख कर झुँझलाता है।]

रमेश— तुम्हे हो क्या रहा है ? वैठते क्यो नही चैनसे ?

बलदेव— चैन मिलता कहाँ है। यह इतना वडा काम जो शिर पर आ पडा है।

रमेश— घबराते क्यो हो ? देखो तो सेनेटका फैसला क्या होता है।

बलदेव— अरे, सेनेट क्या फैसला करेगी—सदाकी तरह इधर-उधरकी फजूल वाते करके छात्रोको वहकाना चाहेगी। [जोशमें उठ बैठता है] परन्तु इस वार हम आसानीसे नही मानेगे। यूनिवर्सिटी होती है छात्रोको शिक्षा देने तथा सस्कृति व शिष्टाचार सिखानेके लिए, न कि विद्यार्थियोको तग करके उनका गला घोटनेके लिए। देखा तुमने, परीक्षाका तिथिक्रम कैसा वनाया है। हिसाव और जुगराफिएके परचे एक ही दिन रख दिये। मरेंगे न वे जिन्होने ये दोनो मजमून ले रखे

है । उधर सस्कृतके दोनो परचे एक ही दिन, और उससे पहले कोई छुट्टी तक नही । फिर दोप देते है लडकोको कि वे विना विचारे मनमानी करते है ।

रमेश— तुम्हारा तो दिमाग खराब है ।

बलदेव— मेरा नही, तुम्हारा खराब है, जो कभी किसी चीज पर ध्यान ही नही देते ।

रमेश— तुम्हारी तरह मै छोटी-छोटी वातो पर अपनी शक्ति नष्ट नही करता ।

बलदेव— क्या यह छोटी-सी वात है ?

रमेश— और नही तो क्या ! सचसच वताओ, कितने लडके है जो ये दोनो मजमून लेते है ? मेरी जानपहचान वालोमेसे तो एक भी नही ।

बलदेव— तुम्हारी जान-पहचान वालोमेसे कोई ऐसा भी है जिसने कभी किताबको हाथ लगाया हो ? उनको क्या परवा इम्तहानो की—सिनेमा ही उनके लिए काफी है ।

रमेश— [मुसकरा कर] मै तो शर्त लगा कर कह सकता हूँ कि यह तिथिक्रम दस विद्यार्थियोसे अधिकको नुकसान नही पहुँचा सकता । और सस्कृत लेते ही कितने है !

बलदेव— दस ही सही । अल्पसख्यकोके हक भी तो है । उनके अधिकार...।

रमेश— हमने अपने प्रतिनिधियो-द्वारा—और तुम ही तो उनके नेता थे—रजिस्ट्रारको सुझावपत्र तो भिजवा दिया है । उसने इस वारेमे जॉच करनेकी प्रतिज्ञा भी की है ।

बलदेव— लेकिन किया तो कुछ नही न ! आज चार वजे तक जवाब देनेको कहा था, अब तो पाँच बज चुके । [**सहसा उठ खड़ा होता है**] मुझे कुछ करना चाहिए । विद्यार्थियोको इकट्ठा करके कोई ऐसी बात कर दिखाऊँगा कि यूनिवर्सिटी वालोको याद रहे ! अभी तक तो वह उन्ही लोगोके दम पर जीते है

जो अपने साथियोको त्याग कर दुश्मनोसे जा मिलते है। परन्तु अब जमाना और है। अब ऐसा भगोडा हमारी यूनियन मे एक भी नही है।

[अशोक और रंजीतका प्रवेश]

बलदेव— [उत्सुकतासे] क्या ख़बर है ?

अशोक— खबर क्या होगी—साले कहते हैं तिथिक्रम नही बदल सकता।

रमेश— मैने तुमसे क्या कहा था!

बलदेव— [उसकी उपेक्षा करते हुए] रजिस्ट्रारसे मिले ?

अशोक— वहीसे तो चले आ रहे है।

रजीत— कहता था कि बडा अफसोस है, परन्तु समय इतना कम है कि दूसरा कोई प्रबन्ध नही हो सकता।

रमेश— ठीक कहता है—यदि कही वह तिथिक्रम बदल देनेको तैयार हो जाते, तो मै उन्हे उल्लू समझता।

बलदेव— तुम चुप भी करोगे या ख्वाहमख्वाह बके जाओगे!

रमेश— [मुँह पर हाथ रख कर, व्यंग्य से] लो, बाबा!

बलदेव— [अशोककी ओर हाथ बढा कर] देखे तो लिख कर क्या दिया है।

रंजीत— लिख कर कुछ नही दिया। कहा है कि दफ्तरसे चिट्ठी एक-दो दिनमे भिजवा दी जायेगी।

[रमेश खाँस देता है]

बलदेव— अच्छा, यह बात है! [मेज पर हाथ पटक कर] ऐसे ही सही। मै भी जानता हूँ इन लोगोका इलाज। मुझे मालूम है ऐसे अवसर पर मेरा क्या कर्त्तव्य है—अपने देशके प्रति तथा अपने साथियोके प्रति, जिन्होने अपनी शिक्षाका प्रबन्ध यूनियन के ऊपर छोडा है। यह सेनेट वाले सब पूँजीपति है और विद्यार्थियोको अपने स्वार्थका साधन बनाये रखना चाहते है। जब तक मै यूनियनका मत्री हूँ, मै ऐसी अनुचित बात कभी नही

होने दूँगा । [ऊँचे और गम्भीर स्वरमें] मै आमरण अनशन करूँगा ।

रमेश—— [व्यंग्यसे] इकलाव जिंदाबाद ! दुनियाके मजदूरो एक हो जाओ !

बलदेव—— बकवास मत करो ।

[कठोर, गम्भीर तथा विचारमग्न सूरत बना कर पलग पर लेट जाता है ।]

अशोक—— ठीक है, बलदेव । तुमने इन शैतानोको सीधा करनेका उत्तम उपाय सोचा है ।

रंजीत—— तुम्हारे दिखाये हुए पथ पर चल कर विद्यार्थी अवश्य अपना उद्देश्य प्राप्त करेंगे ।

रमेश—— [मुसकरा कर, बलदेवसे] परन्तु मेरे भाई, अनशन करते ही नही लेट जाया करते । यह तो पाँचसात दिनके बाद शोभा देता है, जब शरीर इतना शिथिल हो जाय कि चलनाफिरना सम्भव न हो ।

बलदेव—— फिर तुमने मजाक किया !

रमेश—— नही, मजाक कहाँ कर रहा हूँ ! तुमसे तो सहानुभूति प्रकट करना भी व्यर्थ है । कुछ खा पी तो लो । तुमने चायके बाद अब तक कुछ खाया नही । शायद रातको भी न खा सको, तो कल सुबह तक तो बहुत दुर्बल हो जाओगे ।

बलदेव—— [क्रोधित होकर] बस, बन्द करो यह हँसीमजाक । यह सोच-विचारका समय है—हँसीमजाकका नही ।

अशोक—— सचमुच, रमेश, तुम तो हद करते हो । सेनेटकी इस चुनौती को स्वीकार करके उसे नीचा दिखानेके लिए एक-एक विद्यार्थी की सहायता चाहिए । और तुम हो कि इस प्रश्नकी गम्भीरता को समझनेकी कोशिश ही नही करते ।

बलदेव— [क्षीण आवाजसे] नही, अशोक, तुम रमेशको नही समझे। यह तो अपने स्वभावसे लाचार है। सहायता तो इसे देनी ही पडेगी—कही भाग थोडे ही सकता है।

रमेश— कहो, क्या चाहते हो मुझसे ?

बलदेव— [लेटे हुए ही] उपवास तो मेरा निश्चित हो गया। परन्तु उसके बादकी कार्यप्रणाली अभी निश्चित करनी होगी। पहले तो एक वक्तव्य तैयार करना होगा, जिसमे हमारे नियम तथा उद्देश्यका उल्लेख हो। फिर उसे अखबारोमे छपवाओ।

रजीत— यह तो अभी हो जाना चाहिए, ताकि कल तक हमारे मन्त्रीकी भीषण प्रतिज्ञाका ज्ञान हो जाये। जब लोकमत हमारे साथ होगा, तो सेनेटकी क्या हिम्मत कि अपने फैसले पर खडी रहे। कल हीसे परीक्षा-भवनके सामने धरना देगे। नतीजा यह होगा कि लडके परीक्षाके लिए नही बैठेगे और सेनेटको झुकना पडेगा।

बलदेव— पहले वक्तव्य तैयार कर लो। उसीमे यह सब बाते आ जायँगी। यह अखबारोके दफ्तरोमे शीघ्र ही पहुँच जाना चाहिए। [क्षीण स्वरमें] और यह लो दफ्तरकी चाबी। [**आँखें मूँद लेता है, मानो बातें करनेसे थकावट हो गई हो। कुछ देर ठहर कर**] पानी !

रमेश— अभीसे ? अभी तो चाय पिये एक घण्टा भी नही हुआ; खानेका समय तो अभी बहुत दूर है। तुम अभीसे तडपने लगे।

बलदेव— [**रमेशकी बातोकी उपेक्षा कर**] अशोक, वक्तव्यमे क्या-क्या लिखा जायगा ?

अशोक— एक खाका तैयार कर रहा हूँ। देख लो, जो कुछ बदलना चाहो अभी अभी बदल देते है।

बलदेव— पढ़ो तो।

अशोक— तुम्हारी ओरसे ही लिखा जायगा ?

बलदेव— देख लो, मन्त्रीके नामसे जाना चाहिए या अध्यक्षके। क्यो रमेश, रजीत ?

रमेश— उपवास तुम करोगे या अध्यक्ष ?

रंजीत— मन्त्रीके नामसे ही उचित होगा।

अशोक— तो सुनो। [पढता है] "स्टूडैट्स यूनियन के मन्त्री, श्री बलदेव ने यह वक्तव्य प्रेसको भेजा है—यूनिवर्सिटीके अधिकारियोने इण्टरमीडियेटकी परीक्षाकी उलटी-सीधी तारीखे निश्चित करके तथा विद्यार्थियोके प्रतिनिधियो-द्वारा भेजे हुए सुझावपत्र को अस्वीकार करके जो उनके अधिकारो पर अनुचित हस्तक्षेप किया है, उसका स्टूडैट्स यूनियन पूर्णत विरोध करती है। विद्यार्थियोने मिलकर यह प्रस्ताव मजूर किया है कि जब तक परीक्षाकी तारीखे बदल कर उनकी अन्य मॉगे स्वीकार न की जायँगी, तब तक कोई भी विद्यार्थी परीक्षामे नही बैठेगा। इस प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेके लिए यूनियनके मन्त्री श्री बलदेवने आमरण अनशनका भीपण व्रत धारण किया है। यह उपवास तब तक जारी रहेगा जब तक हमारी सभी शर्तें नही मान ली जायँगी।" क्यो, कैसा है ?

बलदेव— हॉ, ठीक ही है। केवल एक ही जगह पर जरा नरम मालूम होता है। शब्द तीखे लगाओ, ताकि उनको चुभे। इससे उनको यह भी मालूम हो जायगा कि हमारे इरादे कितने पक्के है।

अशोक— कहॉ पर बदलना चाहते हो ?

बलदेव— दिखाना जरा कागज। [**अशोकके वक्तव्यकी कापी हाथमें लेते हुए**] केवल 'अनुचित हस्तक्षेप' काफी नही। यहॉ तो 'अत्याचार' होना चाहिए, बल्कि 'घोर अत्याचार'।

अशोक— [लिखकर] और ?

बलदेव— 'भीपण व्रत' की जगह 'दृढ व अटल प्रतिज्ञा' लिखे, तो कैसा रहे ?

रमेश— जरूर, जरूर । मै तो कहता हूँ कि दोचार बडे-बडे शब्दोका प्रयोग भी अवश्य करो, जैसे कि 'ऐतिहासिक', 'अन्तर्राष्ट्रीय' । यह तो हर लीडरके वक्तव्यमे होते है ।

बलदेव— और यह वक्तव्य अखबार वालोको केवल भिजवा देना ही काफी न होगा । तुम्हे स्वय जाकर देना चाहिए । ताकि कल सुबह सब अखबारोमे छप जाये । परीक्षा कल ही प्रारम्भ होनेवाली है । लडके-लडकियोको प्रात काल ही मेरे उपवास का पता चल जाये, तब काम बनेगा ।

अशोक— हर अखबारके पहले सफे पर आना चाहिए—परीक्षकोके पास इतना समय कहाँ होगा कि वे सारा अखबार देख सके ।

बलदेव— और इस प्रस्तावकी एक कापी वाईसचासलरको, एक गवर्नर को, एक बाबू राजेन्द्रप्रसादको, एक जयप्रकाशनारायणको, एक गोविन्दवल्लभ पन्तको ।

रमेश— एक सर आगाखाँको, एक जनरल मैकार्थरको ।

अशोक— तुम कभी गम्भीर होना भी सीखोगे या नही ? [क्रुद्ध होकर] यहाँ हमारे लीडर [बलदेवकी ओर सकेत करके] जान देने को उद्यत है और तुम्हे अपने बेहूदा मज़ाक सूझते है ।

बलदेव— [अशोकको शान्त करनेका प्रयत्न करते हुए] तुम इसकी बातो पर ध्यान न दो । इसका स्वभाव ही ऐसा है । बेचारा करे भी क्या—अभी तक अपनी जबान पर तो काबू पा नही सका । तुम जाओ अपना काम करो । प्रेसमे छपवानेका प्रबन्ध करो ।

अशोक— केवल प्रेसमे भिजवा देना ही तो काफी नही होगा । इसके बाद भी तो काम जारी रखना चाहिए ।

रंजीत— वह तो बहुत आवश्यक है । एक तो जलूस निकालना होगा।

रमेश— काला झण्डा भी तो बनवाना होगा ।

रजीत— [रमेशको घूरता है] काला झण्डा क्यो ? अपनी यूनियनका झण्डा जो है ।

अशोक— परीक्षा-भवनमें से निकल आनेके लिए विद्यार्थियोसे कहना होगा ।

वलदेव— उनसे यह भी तो कह सकते है कि हालमे जायँ अवश्य, परन्तु कलम उठानेसे इनकार कर दे ।

अशोक— नही, जलूस अधिक प्रभावित कर सकता है । ग्रामजनताको भी तो साथ मिलाना है । फिर यूनिवर्सिटीके रजिस्ट्रारके दफ्तरके सामने धरना देना होगा ।

रमेश— पुलिस वालोको भी समझा देना कि लाठियाँ वहुत जोरसे न चलाये । अकसर पुलिस वाले असभ्य होते है । वह नही समझते कि जलूस मजदूरोका है या विद्यार्थियोका । न ही उन्हे इतनी समझ होती है कि शिक्षित लोगोमें शारीरिक वल कम होनेसे वे लाठीका वार नही सह सकते ।

वलदेव— तुम नही मानोगे, रमेश ?

रंजीत— प्रेस फोटोग्राफर भी तो चाहिए जो वलदेवका फोटो खीचे ।

रमेश— कल नही, वावा ! तुम लोग सब कुछ भूल जाते हो और यदि मै कुछ कहता हूँ, तो डॉटने लगते हो ।

अशोक— क्यो, कल क्यो नही ?

रमेश— फोटो परसो खिचवाना, जब खायेपिये चौबीस घण्टे हो जायँ । कुछ कमजोर दिखाई देगा, कुछ दाढी वढ जायेगी । भला कही बढी हुई दाढीमूँछोके बिना भी कोई शहीद देखा है ?

वलदेव— फिर वही व्यग्य ! कोई भी तो बात सीधी नही करते ।

रमेश— तुम्हे यही दिखाई देता है तो यही सही । कहो तो मै चला जाऊँ । तुम तीनो आपसमे फैसला करते रहो ।

अशोक— नही, नही, तुम नही जा सकते । वलदेवके पास हर वक्त दो-चार आदमी अवश्य रहने चाहिए । हमे जरा जाना है ।

[घड़ी देख कर] पहले तो अखबार वालोके पास जायँगे। उसके बाद प्रभातने खाने पर बुलाया है।

बलदेव— दावत है क्या ?

रंजीत— हाँ। वह मटर, पनीर और कचौरी पकवा रहा है।

बलदेव— ओह !

रजीत— एक टोकरा बनारसी आमोका उसके चाचाने भेजा है। यह अनशनका झझट न होता तो तुम भी चलते।

अशोक— अब भी तो चल सकते हो। उपवास है, तो क्या—न खाना कुछ भी। गपशप तो चलेगी।

बलदेव— [मुँहमें पानी आ रहा है] नही, नही, तुम जाओ। मुझे कुछ कमजोरी-सी मालूम हो रही है। पानी !

अशोक— [पानीका गिलास बढाते हुए] अच्छा तो, दोस्त, कल सुबह तक के लिए बिदा।

[दोनो जाते हैं। बलदेवकी माँ आती है। रमेश प्रणाम करता है]

माँ— [रमेशसे] कैसे हो, बेटा ? बहुत दिनसे दिखाई नही दिये—क्या पढाईमे लगे रहते हो ? अरे बलदेव, तुम क्यो लेट गये ? तबीयत तो ठीक है ? चलो उठो, खाना तैयार है। रमेश, तुम भी खाना खा कर जाना। तुम्हारी मनभाती चीज बना रही हूँ—तन्दूरकी रोटी और सरसोका साग।

रमेश— यह तो कृपा है आपकी, [मुसकरा कर] उठो, बलदेव। क्या विचार है ?

बलदेव— मै तो खाना नही खाऊँगा जब तक इसका कुछ फैसला न हो जाय।

माँ— किसका फैसला ?

बलदेव— यह जो अत्याचार हम लोगो पर हो रहे हैं।

माँ— कौन पैदा हुआ है तुम पर अत्याचार करने वाला—नाम तो बताओ मुझे उसका।

बलदेव— माँ, तुम नही समझती, मेरे साथियोने मुझे बडी जिम्मेदारीका काम सौंपा है—उनके अधिकारोकी रक्षा करना। यूनिवर्सिटी वालो ने परीक्षाकी तारीखें ऐसी निश्चित की है कि लडके घबरा उठे है। इन लोगोको लडकोको फेल करने मे कुछ खास मज़ा आता है। [जोशसे] परन्तु हम भी दिखा देंगे इन प्रोफेसरो को ! [उठ बैठता है] यह जो आमरण उपवासकी प्रतिज्ञा मैंने की है . .

माँ— [घबरा कर] कैसा आमरण उपवास, कैसी परीक्षा ? तुम्हे तो इस साल कोई परीक्षा नही देनी है। तुम क्यो भूखे रहोगे ? [उसके माथे पर हाथ फेरते हुए] मेरे लाल, अनशन करे वे जिनके सिर पर बला आई है, तुम क्यो दूसरोके लिए मुसीबत उठाओ। [भर्राई हुई आवाजमें] न, मुझे अपने बेटेको महात्मा गाँधी नही बनाना है।

बलदेव— लेकिन, माँ, तुम क्या अकेली ही माँ हो ? क्या उनकी माँ नही जिन्हे मुसीबतने घेरा है। मेरा यह कर्तव्य है कि मैं अपने साथियोके लिए अपने आपको बलिदान कर दूँ। [रुँधे हुए गलेसे] माँ, तुम धन्य हो जाओगी। तुम्हे अपने बेटे पर गर्व होगा।

माँ— [आँखोमें आँसू लाकर] नही, मुझे ऐसा महात्मा बेटा नही चाहिए। दुनिया ऐसो को भी नही जीने देती। देखा नही, गाँधीजी जिनके लिए सारी उमर कष्ट उठाते रहे, उन्ही मे से एक उनका काल बन गया।

बलदेव— [माँकी ममतासे प्रभावित होकर अपने आपको संभालते हुए] पानी !

रमेश— [पानी देते हुए] तुम घबराओ नही, चाची। यह तो पागल है। अभी ठीक करता हूँ इसे मै। आप चलिए, खाना परसिए। मैं अभी लेकर आया इसे।

मांँ— [जाते हुए] जल्दी करना, बेटा, ठडी रोटीका कोई स्वाद नही रहता ।

रमेश— [बलदेवसे] क्यो, क्या ख्याल है ?

वलदेव— ख्याल क्या है ! पगले हुए हो तुम ? कैसे खा सकता हूँ ! मुझे पानी पिलाओ जरा ।

रमेश— कितना पानी पिओगे तुम—हर दो मिनट बाद पानी ! पानी !

वलदेव— जरा जी मचलाता है ।

रमेश— इसी लिए तो कहता हूँ खाना खा लो ।

वलदेव— फिर वही बहस—मैं नही खाता ।

रमेश— अच्छा, तो पानीमे थोडा नीबूका रस डाल लो ।

वलदेव— फिर उपवास कैसा हुआ ?

रमेश— अरे नीबू तो महात्माजी भी डाल लेते थे । तुम्हारा उपवास उन से तो कडा नही है ।

वलदेव— [सोचता हुआ] तो दे दो थोडा ।

रमेश— जरा सी चीनी भी डाल लो । तबीयत साफ हो जायगी । कहो तो जरा सी बरफ मँगवा लूँ ।

बलदेव— कैसी बहकीबहकी बाते करते हो तुम ! मैने अनशनका प्रण किया है और तुम

रमेश— तो मै तुम्हे अन्न खानेको तो नही कह रहा हूँ । पानी ही तो है । नीबू और चीनी डालने से क्या होता है । कल डाक्टर बुलाना पडे और वह दवाई दे जाय, तो क्या करोगे ?

वलदेव— अच्छा लाओ, गुरु, कुछ भी दो । वडी प्यास लगी है।

रमेश— [खुशीसे] अभी भिजवाता हूँ [उठ कर दरवाजे तक जाता है । फिर मुड़ कर देखता है । गम्भीर सूरत बना कर] कहो तो दोचार विस्कुट भी ले आऊँ—क्यो ?

वलदेव— [चीख कर] चुप रहो !

[परदा]

[दूसरा दृश्य। समय—दूसरे दिन सुबह आठ बजे।]

[बलदेवका कमरा। बलदेव पलंग पर सोया खर्राटे ले रहा है उसका पिता कमरेमें आता है।]

पिता— बलदेव! [हाथसे हिला कर] ओ बलदेव!

बलदेव— [हड़बडा कर उठ बैठता है] जी, पिताजी।

पिता— आठ बजनेको आये—आज उठना नही है क्या?

बलदेव— रातको नीद जरा देरमे आई, इस वजह से .

पिता— खाना जो नही खाया, नीद कैसे आती! चलो उठो, हाथमुँह धो कर नाश्ता करो।

बलदेव— परन्तु, पिताजी मैंने तो उपवासकी प्रतिज्ञा की है।

पिता— बेवकूफ़ मत बनो। कैसा उपवास? तुम लडकोका तो दिमाग फिर गया है। परीक्षा है, कोई मजाक नही।

बलदेव— लेकिन हमारे अधिकार भी तो हैं। हम कोई पशु तो नही। हमारा भी व्यक्तित्व है।

पिता— बस, यही दोचार, बडे बडे वाक्य तुम लोगोने सीखे है, और सीखा ही क्या है! हरामखोर हो तुम लोग। हम लोगोने भी परीक्षाएँ दी थी। तुम्हारा बस चले तो तुम बैठे-बिठाये डिग्रियाँ लेना चाहोगे।

बलदेव— सैनेटका भी तो कुछ फर्ज है कि परीक्षाकी तारीखें निश्चित करते समय विद्यार्थियोके सुभीते पर ध्यान दे। हमने जो यूनियन बनाई है, वह उसके मत्रीसे सलाह क्यो नही लेती? पीछे गडबड होनेका कोई बहाना ही न रहे।

पिता— क्या राय ले वह तुमसे? पहले तो तुम लोग कहोगे कि तिथिक्रम बनाने से पूर्व तुम लोगोसे स्वीकार कराया जाय। फिर कहोगे परचे तुम्हारें परामर्शसे बनाये जायँ। फिर यह धाक जमाओगे कि परचे देखने वाले तुम्हारे चुने हुए हो।

इससे आगे बढोगे तो चाहोगे कि किताबे परीक्षा-भवनमे साथ ले जाने की आज्ञा हो । कोई अन्त भी है ऐसी माँगो का ? डिग्रियाँ वी. पी करके लडको के घर ही भिजवा दी जायँ ?

वलदेव— [दबी हुई आवाजमें] हम कोई पढाईसे मन थोडे ही चुराते है ।

पिता— [चिढ कर] मै जानता हूँ सब पढने वालोको । एक तुम्ही हो न—बडे मत्री बने फिरते हो विद्यार्थियोके । जानते हो तुम उन्हे गलत रास्ते पर ले जा रहे हो ? [बलदेव कुछ कहना चाहता है, पर पिता रोक देता है] बस, मै और कुछ नही सुनना चाहता । तुम्हे व्यर्थ बहस करने की बहुत आदत हो गई है । 'खाना नही खाऊँगा', 'उपवास आमरण होगा' इत्यादि उलटी-सीधी बाते कर कर माँ को न डराओ । सीधी तरह उठो और तैयार होकर आओ । [उधर दरवाजे तक जाता है, फिर मुड कर] इस समय तो मै जा रहा हूँ दफ्तर । लौटने पर मै कोई शिकायत नही सुनना चाहता । समझे । इस घरमे रहना है तो यहाँ का नियम पालन करना होगा—नही मानना तो अपना बिस्तर उठाओ और ले जाओ यूनियनके दफ्तर मे जिसके लिए इतने दीवाने हो रहे हो । [जाता है] ।

[बलदेव उठ कर शृगार मेजके पास जाता है । गालो तथा ठोडी पर हाथ फेरता है कि दाढी कुछ बढी या नही । इतनेमें कोई दवराजा खटखटाता है । वह झटसे पलगमें घुस जाता है और इस प्रकार करवटें लेने लगता है मानो रात बडी मुश्किलसे कटी हो । अशोक और रंजीत आते हैं ।]

अशोक— कहो, कैसे हो, भाई ?

बलदेव— रात भर जागकर बिताई । सोचता रहा कि किस प्रकार सफलता मिले । अबतक तो वक्तव्य भी छप गया होगा । पानी !

[रंजीत पास रखी सुराहीमेंसे पानी डालता है । अखबार वालेकी पुकार नीचेसे सुनाई देती है ।]

अशोक— मै अभी आया। [जाता है]।

बलदेव— [रंजीतसे पानी लेकर] तुमने सुबहसे कोई अखबार नही देखा?

रंजीत— 'हिंदुस्तान टाइम्स' देखा। उसमे तो कुछ नही था। 'स्टेट्स-मैन' ने भी नही दिया।

बलदेव— [जरा तेज होकर] तुम लोगोने वक्तव्य इन अखबारो के दफ्तरो मे पहुँचाया भी था या मुर्गा ही खाते रहे ? [अशोक अखबार हाथमें लिये मुँह लटकाये आता है] क्यो, है कोई खबर ?

अशोक— 'नेशनल हेरल्ड' में तो नही है। 'लोक-वाणी' मे देखता हूँ। [अखबारके पन्ने पलटता है। थोड़ी देरके लिए मुख खिल जाता है]।

बलदेव— क्यो, है ?

अशोक— हॉ, लेकिन उन्होने तुम्हारा नाम गलत छापा है।

बलदेव— [अखबार छीन कर] देखे तो। [पढ़ता है] "सहदेवने यह वक्तव्य प्रेसको भेजा है—सुना जाता है कि कुछ विद्यार्थियोके तिथिक्रमसे शिकायत प्रकट करने पर यूनियनके एक सदस्यने उपवास शुरू कर दिया है। शायद इस ख्यालसे कि सेनेट इस तरीकेसे मान जाय "[गुस्सेमें अखबार फेंक देता है] जला देना चाहिए ऐसे छापेखानो को। लिख कर भेजो कुछ और, छापते कुछ और ही है। और इन कोमी अखबारोको तो देखो—जो खबरे जनतासे सबन्ध रखती है उन्हे तो छापते नही, वैसे कोई भी मत्री दुनियाके किसी भी कोनेसे कैसी ही फजूल बात कहे, तो भी उसे पहले सफे पर मोटेमोटे अक्षरो मे छाप दिया जाता है।

रंजीत— पूँजीपती है ये सबके सब। हमारा प्रेस भी पूँजीपतियोके जूते चाटता है।

बलदेव— खैर, मै भी वचन का पक्का हूँ—मर कर दिखाऊँगा इन सबको।

अशोक— अव्वल तो ऐसा अवसर आयगा ही नही। इससे पहले ही हमारी जीत हो जायगी। परन्तु यदि ऐसा मौका आ ही गया

तो, [बलदेवको थपकी देकर] दोस्त, तुम परवा न करो—तुम्हारी अरथी ऐसी शानदार निकालेंगे कि दुनिया याद करेगी। मीलो लम्बा जलूस होगा। लड़के, लड़कियाँ, युवा, बुड्ढे—सब काली पट्टियाँ बाँधे, रोते हुए तुम्हारे साथ होगे। तुम्हारा खुला मुख सूर्यकी किरणोसे चमक उठेगा। चारो ओर से फूलो की वर्षा होगी। और जब शामके धुंधले प्रकाश मे तुम्हारी चिता बनाई जायगी तो उसकी लपटे सीधी आकाश तक पहुँचेगी।

बलदेव— [आँखें मूँद कर, क्षीण स्वरमें] पानी।

रंजीत— और यही नही—जलूस सारे शहरका चक्कर काटता हुआ यूनिवर्सिटी हालके सामनेसे होकर जायगा। बड़े-बड़े लीडर तुम्हारे बलिदानकी प्रशसा करेंगे। यूनिवर्सिटीके इतिहासमे तुम्हारा नाम स्वर्ण अक्षरोमे लिखा जायगा। दो साल तक सब परीक्षाएँ बन्द रहेगी। कोई कालिज नही जायगा।

अशोक— तुम्हारी चिता-भस्म सब यूनिवर्सिटियोको भेजी जायगी।

बलदेव— [खीझकर] पानी!

रजीत— माफ करना, अभी देता हूँ। [पानी देता है] अशोक, अब हमे चलना चाहिए। नौ बज गये, साढे नौ तक तो वहाँ पहुँचेगे। दस बजे तो परचा शुरू हो जाता है। परीक्षा-भवनके दरवाजे पर धरना देंगे, ताकि कोई विद्यार्थी अन्दर न घुसने पाये। नही तो हमारी सारी मेहनत बेकार हो जायगी।

अशोक— हाँ, भाई, चलो। शामके जलसेका भी तो प्रबन्ध करना है।

बलदेव— तो क्या अभी तक कुछ भी नही किया?

अशोक— कहाँ किया—रातको खाने पर ही इतनी देर हो गई। जो लोग वहाँ थे, उनसे कह दिया था। तुम्हारे उपवासकी खबर तो अब तक फैल चुकी होगी।

बलदेव— कैसा रहा खाना ? खूब स्वादिष्ट होगा ?

अशोक— खाना तो अच्छा था, परन्तु तुम्हारे विना सब अधूरा लगा। सारे वक़्त तुम्हारी ही बाते करते रहे। कैसे महान् शक्तिशाली वीर हो ! यह उमर और ऐसी दृढ प्रतिज्ञा !

रंजीत— चलो, अव कुछ आगे की सोचो।

[जाते हैं। रमेश आता है। उसे देख बलदेव खुश हो जाता है।]

रमेश— तुम अभी तक पलग पर ही पडे हो ?

बलदेव— और क्या करूँ ? तुम बताओ खबर क्या है ?

रमेश— खबर यही है कि तुम अपना उल्लू बना रहे हो। मै अभी परीक्षा-भवन की ओरसे आ रहा हूँ। सभी वहाँ थे। कालिजमे भी जमाते लगी है। और तुम यहाँ दीवाने बने बैठे हो।

बलदेव— तो और क्या करूँ ?

रमेश— छोड दो इस हठको।

बलदेव— वाह, कमाल करते हो तुम ! क्या समझ रखा है मुझे ?

रमेश— समझता तो अकलमद था। परन्तु अब कुछ विचार बदल गया है।

बलदेव— मै तुम्हारे विचारोको क्या करूँ। तुम तो चाहते हो मै कायर बन जाऊँ। मै अभिमान करता था तुम्हारी मित्रता पर, तुम्हारी सहायता पर।

रमेश— देखो, बलदेव, सच बात कहता हूँ। यदि तुम लड रहे होते किसी उद्देश्यके लिए तो मै सब कुछ त्याग कर तुम्हारा साथ देता। परन्तु यह तो बचपन दिखाना है—तारीखोके लिए झगडना। ऐसी छोटी-छोटी बातो पर उत्तेजित होना तुम्हे शोभा नही देता। इनसान अपना हाथ उस चीजमे डाले जहाँ से कुछ निकाल लेने की आशा हो, परन्तु यह हार की बाजी है। इसमे अपनी शक्ति नष्ट करना बेकार है।

बलदेव— यह बात तो तुम ठीक कहते हो। मै भी अब यही सोचता हूँ

कि हमे अपना आन्दोलन बहुत दिन पहले शुरू करना चाहिए था। और उन्हे देखो न—अशोक और रजीत रातको खाना ही खाते रहे। अभी तक शामके जलसे तथा दोपहरके जलूस का ही प्रबन्ध नही किया।

रमेश— तभी तो कहता हूँ, छोड़ो इस झझटको।

बलदेव— परन्तु एकबार प्रतिज्ञा जो कर चुका हूँ—उसे कैसे तोडू। अब तो सिद्धान्तोका सवाल है।

रमेश— सिद्धान्त! वह क्या चीज है? सब मनुष्यके अपनी इच्छानुसार तथा समयानुसार बनाये हुए ढोग है।

बलदेव— परन्तु सोचो तो, यह बात कितनी फैल चुकी होगी। और फिर यूनियनकी कार्यकारिणी सभाका वार्षिक चुनाव पद्रह वीस दिनमे होने वाला है। मै अध्यक्षके पदके लिए खडा होना चाहता हूँ। अध्यक्ष बननेकी आशा तभी हो सकती है जब इस झगडेमे जीत हमारी हो। फिर जहाँ-जहाँ विद्यार्थियोकी कॉफ्रेसे होगी मै प्रतिनिधि बनकर जाऊँगा—कलकत्ता, बबई, मद्रास, शायद यूरोप, अमेरिकाका भी चक्कर लग जाय। फिर दो सालमे पढाई समाप्त करके असैबलीके चुनावके लिए प्रयत्न करूँगा।

रमेश— और यदि इस झगडेमे हार गये तो?

बलदेव— तब तो खेल बिगड जायगा

रमेश— तो खेल बिगडता ही दिखाई देता है।

बलदेव— तो कोई तरीका बताओ।

रमेश— उपवास तोड दो। साथियोसे मिलकर खाओ-पिओ। हो जाय एक पार्टी।

बलदेव— परन्तु उपवास तोडने का कोई बहाना भी तो हो।

रमेश— बडी सीधी बात है—एक वक्तव्य और भेजो प्रेसको कि लोगो के निरन्तर आग्रह करने तथा आश्वासन दिलाने पर .

बलदेव— यह आग्रह और आश्वासन है कहाँ ?

रमेश— उसका प्रबन्ध मैं किये देता हूँ । मेरे कुछ मित्र अमृतसर मे है, कुछ लुधियानेमें । उनसे कहता हूँ कि तुम्हारे नाम तार भेजे और टेलीफोन करे।

बलदेव— तुम्हारा ख्याल है यह चल जायगा ?

रमेश— तुम्हे सन्देह क्यो है ? मैंने कभी कोई ऐसा काम किया है जिसमे सफलता न पाई हो ? लो, अभी तैयार करता हूँ वक्तव्य । **[कागज पैंसिल उठा कर लिखता है । साथ ही ऊँचे स्वरमें बोलता भी जाता है]** "सहस्रो लोगोके तार, टेलीफोन, पत्र द्वारा तथा स्वय आग्रह करनेपर और वाईसचासलरके आश्वासन देने पर कि विद्यार्थियोकी माँगो पर भली प्रकारसे सोचविचार किया जायगा "

बलदेव— नही, नही, वाईसचासलरका नाम न लिखो ।

रमेश— अच्छा, तो काट कर यूनिवर्सिटीके अधिकारी वर्ग कर देता हूँ ।

बलदेव— **[कुछ सोच विचारके बाद]** नही भैया, तुम कोई गोलमोल नाम लिखो ।

रमेश— घबराते क्यो हो—कौन जाँच करने आयगा !

बलदेव— कुछ कहा नही जा सकता । तुम यो लिखो । "कुछ ऐसे जिम्मेदार लोगो के कहने पर जिनका यूनिवर्सिटीसे घनिष्ठ सबन्ध है ।"

रमेश— अच्छा, यो ही सही । **[फिरसे लिखता हुआ]** "स्टूडैंट्स यूनियन के मत्री बलदेव ने एक वक्तव्य मे कहा है । सहस्रो लोगो के पत्र, तार, टेलीफोन द्वारा तथा स्वय आग्रह करने पर और कुछ ऐसे जिम्मेदार लोगोके आश्वासन देने पर, जिनका यूनिवर्सिटी से घनिष्ठ सबध है, मैंने अपना उपवास समाप्त कर देना स्वीकार कर लिया है । मुझे पक्का भरोसा है कि हम विद्यार्थियोके बुनियादी हक हमे दिये जायँगे तथा जो अत्याचारी नियम

यूनिवर्सिटी की ओर से लगाये गये है उनका खडन किया जायगा" अब तो ठीक है ?

बलदेव— हाँ, ठीक ही मालूम देता है।

रमेश— तो उठो अब। हजामत करो। खा पी लो और फिर शाम को सिनेमा चलेगे।

बलदेव— परन्तु अभी कैसे खाऊँ ? पत्र, तार, टेलीफोन तो अभी आये नही।

रमेश— यहाँ कमरेमे कौन देखने आता है।

[बलदेव केवल चुप रह कर अपनी अनुमति प्रकट करता है।]

रमेश— अच्छा, तुम इस वक्तव्यको अपनी लिखाईमे तो लिखो। मैं अभी आता हूँ।

[जाता है। बलदेव लिखना शुरू करता है। रह-रह कर दरवाजेकी ओर देख लेता है। थोड़ी देर बाद रमेश हाथमें चार पुड़ियाँ लिये लौटता है। वह एक-एकको खोल कर पूरी, कचौरी, नमकीन तथा मिठाई बलदेवके सामने मेज पर रखता जाता है।]

[परदा]

•

गृह-लक्ष्मी

•

गृह-लक्ष्मी

[आधुनिक रीतिसे सजा हुआ गोल कमरा। उसकी बड़ी-बडी खिड़कियोके शीशोमेंसे बाहर आनेजाने वाले दिखाई देते है। सोफेके एक तरफ चायकी मेज रखी है। कैलाश प्लेट-प्याले लगा रहा है। मोटरके हार्नकी आवाज आती है। कैलाश खिड़कीके पास जाकर बाहर झाँकता है। फिर जल्दीसे जाता है।

मोटर रुकनेकी आवाज, फिर मोटरके दरवाजे खुलने तथा बन्द होनेकी आवाज आती है।

ललिता कमरेमें आती है। उसकी उमर करीब पैंतीस-चालीस सालकी है। देखनेमें चुस्त और सुन्दर है। बगलमें हैंड बैग दबाये हाथोमें दो खाकी रगके लिफाफे लिये हुए है। उसके साथ कुसुम भी है हाथमें दो-तीन पत्रिकाएँ लिये। ललिता लिफाफे सोफे पर फेंकती है। फिर स्वयं उस पर लेट जाती है]

ललिता— हाय! मै तो थक गई।

कुसुम— [आरामकुरसी पर बैठ कर सिर पीछे टिका कर पत्रिकाओके पहले पृष्ठ पर छपी हुई अभिनेत्रियोकी तसवीरें देखती हुई] माँ, आनन्द आ गया आज! कितनी चीजे थी वहाँ! वह सफेद नीलोनकी साडी तो अभी तक मेरी आँखोके सामने नाच रही है। कैसा अच्छा होता जो तुम वह मुझे ले देती।

ललिता— चीज तो अच्छी थी, लेकिन दाम बहुत है। [कैलाशको कुछ और पारसल उठाये अन्दर आते देख] सब चीजे ले आये? कोई रह तो नही गई?

कैलाश— हुजूर, मेम साहबने खुद चीज़े दी थी, और कहा था बस यही है।

ललिता— मोटर चली गई ?

[कैलाशके जवाब देनेसे पहले ही मोटरके जानेकी आवाज आती है]

ललिता— कुसुम, इन सब चीजोको अन्दर रखवा दो, तुम्हारे पापा ने आते ही इन्हे देख लिया तो आफत आ जायगी।

कुसुम— पापाका तो जैसे पैसा खर्च करते दिल बैठा जाता है।

ललिता— [कैलाशसे] और देखो, चाय जरा जल्दी ले आना। [कुसुमसे] सिरमे दर्द होने लगा है।

कुसुम— मै मुँहहाथ धोकर तैयार हो जाऊँ। लीलाने शामको आनेको कहा था—हम दोनो कॉफी हाऊस जा रही है। कैलाश, कोई चिट्ठी है ?

[कैलाश पारसल वही रखके चिमनी पर पड़े दो लिफ़ाफे उठा कर देता है। कुसुम लिखाई पहचाननेकी कोशिश करती है]

ललिता— किसकी है ?

कुसुम— आपही के नाम है। खोलूँ ?

ललिता— हाँ देखो तो कहाँसे आई है ?

कुसुम— [लिफाफे खोलते हुए] यह तो बिल है।

ललिता— अरे, रख दो। ये पारसल भी अन्दर रखो। महीनेका शुरू है अभी छ सात दिन आते ही रहेगे। [आँखें बन्द कर लेती हैं]

कुसुम— [उठकर दरवाजेकी ओर जाते हुए रास्तेमें ललिताके सोफेके पास रुक कर] माँ, तुम्हारे बुन्दे तो खूब खिल रहे है। पुखराज ऐसे चमक रहे हैं जैसे हीरे हो।

ललिता— [उत्सुकतासे उठते हुए] सच ?

कुसुम— और नही तो क्या ?

ललिता— तब तो सौदा बुरा नही रहा। आजकल तो बहुत सी औरते झूठे गहने पहनने लगी है। इनका तो, खैर, किसीको क्या सन्देह होगा। [फिर सिर पकड़ती है] कुसुम, जा, जरा कैलाश से कह एक प्याला चाय ले आय, जल्दी।

कुसुम— पापा तो अभी आये नही।

ललिता— आते ही होंगे—पाँच तो बज गये।

[कुसुम जाती है। दूरसे मोटरके हार्नकी आवाज आती है। ललिता जल्दीसे कुछ लिफाफे कोनेमें पड़ी मेज पर रख देती है। बिलके दोनों लिफाफे तसवीरके पीछे रख देती है। कैलाश चाय लाता है। रामबाबू कमरेमें आते हैं]

रामबाबू—आहा! आज तो आते ही चाय तैयार मिल रही है।

ललिता— सब आपकी खातिर है।

रामबाबू—नही, जी, यह तो सब आपकी कृपा है।

ललिता— क्या बनाऊँ? सुबह से खाना खाये हुए हो, भूख लगी होगी।

रामबाबू— [इधर-उधर देख कर] मोहन और कुसुम कहाँ है?

ललिता— मोहन तो मैटिनी शो देखने गया है—साढे पाँच बजे आयगा। कुसुम अन्दर तैयार हो रही है—अभी आती होगी। [हाथोसे बाल सँवारती है] आप चाय पीजिए। सारे दिन काम करते-करते थक गये होगे।

रामबाबू— [पत्नीके आदरसे मोहित होकर] ललिता, थकान तो घर पहुँचते ही दूर हो जाती है। जब तुम्हे और बच्चोको हँसते हुए देखता हूँ तो दुनियाकी सब मुसीबते भूल जाता हूँ।

[ललिता लजाते हुए नखरेसे सिर नीचा कर लेती है। कानोके बुन्दे ढलते सूर्यकी रोशनीमें झिलमिलाते है]

रामबाबू— आज खानेको क्या मिलेगा?

ललिता— [रसगुल्लोकी प्लेट आगे बढा कर] यह लीजिए।

रामबाबू— [एक रसगुल्ला उठा कर मुँहमें रख लेते है] यह रसगुल्ले तो बडे स्वादिष्ट है। चाँदनी चौकसे मँगवाये है शायद?

ललिता— हाँ।

रामबाबू— आज इतनी कृपा क्यो?

ललिता— ऐसे ही।

रामबाबू— [ललिताके पास सोफे पर बैठ कर] नही, सच बताओ।

[कुसुम आती है]

कुसुम— पापा, हम आज चाँदनी चौक गये थे। खूब मजा किया—चाट खाई, काँचकी चूडियाँ खरीदी, **[हाथ बढ़ाकर दिखाती है]** बरतनो की दुकानो पर गये। **[पापाकी सूरत कुछ गम्भीर सी हो जाती है]** आपके पसन्दकी चीजें भी लाये है। यह देखो, खुर्चन—आपको बहुत पसन्द है न। हम कोई ऐसे स्वार्थी थोडे ही है कि अपने पापाको भूल ही जायँ।

रामबाबू— अच्छा! यह बात है! तब तो और भी बहुत कुछ आया होगा। **[ललिताकी ओर देखते है]**।

ललिता— **[प्यालेमें चाय बनाते हुए]** मेरा तो जानेका कोई विचार भी नही था। मालतीका टेलीफोन आया कि स्टेशन पर एक नुमाइशी गाडी आई है, कहते है वहाँ बहुत सी अच्छी-अच्छी चीज़े है। मैंने सोचा साथ अच्छा है, चलो देख आयँ। आप ही तो उस दिन कह रहे थे कि नुमाइशोमे बहुत सी नई-नई बातो का पता चलता है। **[प्याला देती है]**।

रामबाबू— **[चायका प्याला पकड कर]** हाँ, तो मैंने कब कहा है कि देखने मे हर्ज है ?

ललिता— देखने जाओ तो कुछ-न-कुछ तो खरीदना ही पडता है। **[रामबाबू चायका प्याला मेज़ पर रख देते है]** दुकानो पर इतनी चीजे होती है, उन सबको निकलवा कर हर एक को उलट-पलट कर अच्छी तरह परखते है, दुकानदारोकी सब सजीसजाई चीजे गडबड कर देते है। फिर भला क्या यह अच्छा लगता है कि उनका इतना समय बरबाद करके खाली हाथ लौट आयँ ? मेरे विचारसे तो यह शिष्टाचारके बाहर है। और फिर खरीदी हुई चीज कोई व्यर्थ थोडे ही जाती है—आज काम न आयगी, कल सही। आप चाय तो पीजिए, ठढी हो रही है।

रामबाबू— **[तनिक घबरा कर]** यह तो बताओ लाई क्या-क्या हो ?

[मोहन आता है]

मोहन— [पापाको देख कर भाँप लेता है कि कोई वहस हो चुकी है या होने वाली है। फिर कुसुमकी चूडियो पर नजर जाती है] हूँ। हूँ।

कुसुम— [मुसकराकर] हूँ। हूँ।

मोहन— आज वाजारका चक्कर लगा है शायद ?

ललिता— [वात टालनेका प्रयत्न करते हुए] चाय पियोगे, मोहन ? [पतिसे] आपकी चाय तो ठढी हो गई होगी, दूसरा प्याला वनाये देती हूँ।

मोहन— चाय तो पीछे, पहले खुर्चन। [प्लेटमेंसे उठानेको झुकता है। माँके कानो पर नजर जाती है] हूँ। हूँ।

[ललिता मुसकरा देती है]

रामवावू— [चिढ कर मोहनसे] यह क्या है—जवसे आये हो 'हूँ, हूँ' कर रहे हो ? सीधी वात क्यो नही करते ?

मोहन— पापा आज तो वडी जवरदस्त खरीदारी हुई दीखती है। माँ के वुन्दे तो देखो कैसे चमक रहे है।

रामवावू— [कृत्रिम मुसकराहटसे] ओहो। ये तो मैंने देखे ही नही थे। आज ही लिये है क्या ? जरा इधर देखो तो।

ललिता— [शरमाती है] आपको क्या ? आप तो कभी देखते ही नही मेरे पास क्या है, क्या नही।

रामवावू— जानता क्यो नही—सव जानता हूँ। परन्तु आजकल चीजोके दाम तो देखो—लूट मच रही है। [मिठाईकी प्लेट मेज पर रखके ललिताकी ओर हाथ वढाते हुए] दिखाओ तो।

[ललिता वुन्दे उतार कर उन्हें देती है]

रामवावू—[देखकर] कितने के मिले ?

ललिता— सस्ते ही मिल गये।

रामवावू— फिर भी।

ललिता— सौ रुपयेकी जोडी ।

रामबाबू—सौ रुपये !

ललिता— हाँ, चीज तो देखो !

रामबाबू—मगर नकली हुए तो इन राह चलते दुकानदारोका क्या भरोसा ?

कुसुम— पापा, आपको तो कुछ भी पसन्द नही आता ।

ललिता— भले न आये । अबकी बार कोई इनके पैसोसे थोडे खरीदे है ।

रामबाबू—किसीने भेट किये है क्या ?

ललिता— नही, मौसीकी लडकीकी शादीमे जो रुपये मिले थे उसके मैने बुन्दे खरीद लिये ।

रामबाबू—और उसकी शादीमे जो खर्च हुआ था—वह ?

ललिता— कौनसा खर्च ?

रामबाबू—किराया खर्च करके लखनऊ गई थी या नही ?

ललिता— वह क्या—जानेका किराया आपने खर्चा, आती बार उन्होने टिकट ले दिया । बस बराबर हो गया—खर्च क्या हुआ ?

रामबाबू—[और भी खीझ कर] और बहनको जो उपहार था वह ?

ललिता— वह तो पिछले महीनेके हिसाबमे था ।

रामबाबू—तो उसे खर्चा नही कहते ?

ललिता— आप ही तो कहा करते है कि पिछली बाते जाने दो—आगेसे हिसाब ठीक रखा करो ।

रामबाबू—बहुत खूब ! अच्छा इस महीनेका हिसाब क्या है ?

ललिता— वह भी सुन लेना । पहले चाय तो पी लो ।

रामबाबू—बस, और नही चाहिए मुझे ।

ललिता— अच्छा, एक रसगुल्ला और ले लो । ये तो आपको पसन्द है ।

रामबाबू—नही, और नही चाहिए । तुम हिसाब बताओ । मुझे और भी काम करना है ।

ललिता— क्या काम ?

रामबाबू—डिप्टी कमिश्नरसे मिलने जाना है ।

ललिता— वापस आकर सही ।

रामबाबू—नहीं । अभी हो जाय तो ठीक है ।

ललिता— जैसी आपकी इच्छा । [कुसुमसे] वह बिल कहाँ है ?

रामबाबू—कैसे बिल ?

कुसुम— एक तो चीनीके बरतनोका है ।

रामबाबू—चीनीके बरतनोका ?

ललिता— चीनीके बरतनोका नही, शीशेके बरतनोका । उसदिन शीशेका जग टूट गया था । [जरा दृढतासे] आपको याद तो होगा कैसे टूटा था ? उसके बदलेमे और लेने गई थी । वहाँ जाकर देखा केवल जग ही नही, उसके साथ ग्लास भी मिल रहे थे । मैंने सोचा शीशेके बरतन तो रोज ही टूटते रहते है । बराबर कौन लेने आयगा । अब पूरा सेट मिल रहा है तो ले ही चले ।

रामबाबू—बिल कहाँ है ?

कुसुम— [मेज पर प्लेटोके नीचे देखती है] यही तो था ।

ललिता— वहाँ तसवीरके पीछे रखा है ।

रामबाबू— मोहन, जरा लाओ तो ।

[मोहन बिल लाकर रामबाबूको देता है]

रामबाबू— [बिल देख कर] यह तो पैंतीस रुपये का है ।

ललिता— हाँ ।

रामबाबू— [क्रोधपूर्वक] एक पाँच छ रुपयेके जगके बदले पैंतीस रुपये बरबाद कर दिये ?

ललिता— माफ कीजिए, जग छ रुपयेका नही, दस रुपये का था ।

रामबाबू— और जो लाये हो—वह ?

ललिता— वह तो पूरा सेट पैंतीस का है ।

रामबाबू— जग कितने का है ?

ललिता— तेरह रुपये का। [यकायक उठ कर बैठ जाती है, जैसे कोई नई बात सूझी हो। हाथ बढ़ा कर] लाइए मेरे तीन रुपये।

रामबाबू— [तेवर चढा कर[तीन रुपये कैसे ?

ललिता— [भौएँ चढ़ा कर] इतना सीधा हिसाब आपकी समझमे नही आता ? जो जग आपने तोडा था, उसकी कीमत थी दस रुपये, जो उसके वदले मे खरीदना पडा उसके दाम है तेरह रुपय—तीन आपको मेरे देने हुए या नही ? लाइए ! [हाथ पसारती है]।

[रामबाबू हिचकिचाते है]

ललिता— लाइए, लाइए, पहले मेरे तीन रुपये दीजिये, पीछे और बात कीजिएगा।

रामबाबू— रुपये मै नही दूँगा।

ललिता— देगे कैसे नही—एक तो चीज़ोका नुकसान करते है, दूसरे पैसे देने से भी इनकार ?

रामबाबू— इस विलके पैतीस रुपये जो भरने पडेगे।

ललिता— वह कोई मुझे थोडे ही मिलेगे ?

रामबाबू— तुम्हारा ही तो विल अदा करूँगा।

ललिता— यह सव मै नही जानती, मेरे तीन रुपये दीजिये।

रामबाबू— अच्छा, वाकी हिसाब भी कर लो—फिर इकट्ठे ले लेना।

ललिता— नही, पहले रुपये दीजिए, पीछे और हिसाब होगा।

[रामबाबू हार कर जेबसे तीन रुपये निकाल कर देते है]

ललिता— हाँ, अब कहिए ?

रामबाबू— ललिता, मै चाहता हूँ कि हमारे घरका हिसाब बिलकुल सीधा और साफ रहे, जिससे हम दोनो मे झगडा होने की कोई सभावना ही न हो, तभी मै रोज तुमसे कहता हूँ कि एक कापी बनाओ, जिसमे पांई-पाई का हिसाब लिखो।

ललिता— मैने तो एक और आसान तरीका सोचा है।

रामबाबू— वह क्या ?

ललिता— सब दुकानदारोके पास बडी-बडी मोटीमोटी कापियाँ होती हैं, जिनमे सबका लेनादेना लिखा रहता है । अगर हम भी कोई चीज़ नकद न ख़रीदे तो कैसा हो ?

रामबाबू— क्या मतलब ?

ललिता— मतलब यह कि एक तो नौकर लोग सौदा लेने जाते है तो पैसे खाते है । चीजे लाते हैं कम दाम पर, बताते है ज्यादाकी । इनका इस तरह से पैसे बटोरना तो बन्द हो जायगा ।

रामबाबू— यह तो तुमने अच्छी बात सोची ।

ललिता— **[मन-ही-मन प्रसन्न होकर]** दूसरा लाभ यह होगा कि आपके पास बिल आयँगे और उन्हे देखते ही आपको मालूम हो जायगा कि मैंने पैसे कहाँ-कहाँ खर्च किये ।

रामबाबू— **[गम्भीर होकर]** बिल तो मेरे पास वैसे ही बहुत आते हैं, ललिता।

ललिता— **[अनसुनी-सी करके]** तीसरा लाभ यह होगा कि हमारी हर वक्त की खटपट समाप्त हो जायगी । आपका बहुत-सा कीमती वक्त जो हिसाब लेने मे नष्ट होता है, बच जायगा और दिमाग पर बोझ भी हलका हो जायगा ।

रामबाबू— **[बड़े ध्यानसे सुनते हुए]** और ?

ललिता— एक बात और जो सबसे अधिक जँचती है—वह यह कि जब किसी चीजकी जरूरत हो आप बिना किसी गहरे सोच-विचार के उसे ख़रीद सकते हैं । पैसे जब चाहो, तब दो ।

रामबाबू— बात तो ठीक है, परन्तु ।

ललिता— परन्तु क्या ? कोई नकद पैसे तो देने नही है । चीज़ तो अच्छी तरह ठोकबजाकर देख लिया, दस दिन, बीस दिन, महीना भर इस्तेमाल करके भी देख सकते हैं । न पसन्द हो तो लौटा दी ।

[कुसुम जो अब तक बैठी पत्रिका पढ़ रही थी इस सुअवसरको पाते ही माँके कानमें कुछ कहती है । ललिता सुन नहीं पाती]

कुसुम— **[फिरसे दबी आवाजमें]** तब तो, माँ, कण्ठी ख़रीदी जा सकती है ।

रामबाबू---[तनकर] कैसी कण्ठी ?

कुसुम-- [डरते हुए] जैसी मालती मौसी ने खरीदी है आज, बडी सुन्दर है। आप देखेंगे तो मोहित हो जायँगे।

रामबाबू--- तुम मालतीका मुकाबला थोडे ही कर सकती हो---उसका पति व्यापारी आदमी ठहरा। हमारी तरह नौकरी थोडे ही करता है।

ललिता--- आप क्या सोचते है कि जरा-सी कण्ठीके लिए मै उससे यह कह देती कि आप उसके पतिसे कम कमाते है ? ऐसा अपमान मै कभी सह सकती हूँ, और फिर स्वय अपने मुँहसे ऐसी बात निकालूँ ? भगवान् ऐसे शब्द न लाय मेरी जबान पर।

रामबाबू--- मै तो इसमे अपमान नही समझता।

ललिता--- आपकी जो समझ मे आये करे, पर मेरी सब सखियोको मालूम है कि आप किसीसे कम नही है। आज भी मैने मालतीसे यही कहा।

रामबाबू--- क्या ?

ललिता--- यही कि बिलकुल ऐसी ही कण्ठी मैने बम्बई बनने के लिए दे रखी है।

रामबाबू--- झूठ क्यो बोला ?

ललिता--- झूठ कहाँ---मुझे विश्वास है कि आप ले देंगे।

कुसुम--- हॉ, हॉ, पापा, ले दीजिए न ? मै शीलाकी शादीमे पहनूँगी।

रामबाबू--- [डॉटते हुए] मालूम है कण्ठी कितने की आती है ? और तुम्हे तो अपनी पढाईवढाई की फिक्र होनी चाहिए, न कि गहनोकी।

[मोहन कोनेमें बैठा रेडियोकी सूई इधर-उधर घुमा रहा था, कुसुम पर डॉट पड़ती सुन कर मुँह फेर लेता है। पापाको खुश करनेके लिए उनके हॉ-में-हॉ मिलाता है]

मोहन--- हॉ, और क्या ! पापा, बिलकुल ठीक कहते है आप।

कुसुम— [कन्धे हिलाकर] हूँ ! स्वय तो सारे दिन हाकी-फुटबाल खेलता रहता है, मुझसे कहता है पढो ।

मोहन— और नही तो सारे दिन मधुबालाकी तसवीरे पास रखकर शीशेके सामने बैठी बाल सँवारा करो ।

कुसुम – चुप रहो ! मेरी बातोमे दखल देने का तुम्हे कोई हक नही ।

मोहन – हक क्यो नही, मै तुम्हारा बडा भाई हूँ ।

[कुसुम कुछ वाब देनेको होती है कि ललिता चुप करा देती है]

ललिता— यह लो, फिर झगडा शुरू हुआ ? कभी बात नही करने देते तुम लोग ।

रामबाबू— चाय पी चुके, अब तुम लोग जाओ अपना-अपना काम करो ।

मोहन— मुझे तो आपसे काम है ।

कुसुम— पैसे लेने होगे ।

रामबाबू— क्या हो गया है तुम सबको ? जिसको देखो, पैसे चाहिए, पैसे चाहिए, नही है मेरे पास पैसे-वैसे ।

[ठहरना व्यर्थ समझकर मोहन चुपकेसे उठ कर चला जाता है]

ललिता— आप व्यर्थ ही उस पर गुस्सा करते है । पढने-लिखने वाला लडका—दो सालमे आपके साथ कमाने लगेगा । ऐसे ही उठा कर डॉट दिया । पूछ तो लेते क्या काम था ?

रामबाबू— मुझे मालूम है तुम सबके काम !

[कुसुम भी भॉप लेती है कि आज दाल नही गलने की । इसलिए वह भी चल देती है । रंजीत लँगड़ाता हुआ आता ।]

रंजीत— [ललितासे] मॉ, यह नया जूता काटता है ।

रामबाबू— [उसके पैरो की ओर देख कर] नया जूता !

ललिता— हाँ । आज ही लेकर दिया है । एक दुकानका दिवाला पिट गया, उसकी सब चीजे कम दामो पर बिक रही थी । यह फुलबूट अच्छे मजबूत नजर आये । मैने ले दिये ।

रामबाबू— इनकी क्या जरूरत थी ?

ललिता---/मोटरमे साथ गया था। हर चीजको देख कर लेनेके लिए मचलता था। उन सवसे तो ये बूट ही अच्छे है—तीनचार महीने चलेगे तो सही।

रामबाबू---तुम बहुत फजूलखर्च हो, ललिता।

ललिता--- [व्यंग्यात्मक हँसीके साथ] लो, और सुनो—अठारह रुपयेके जूते ग्यारह रुपयेमे ले आई हूँ, और वह भी फुलबूट। इसीको आप फजूलखर्ची कहते है शायद! पूछो कुसुमसे इस बूटके साथ जो परची लगी थी उस पर अठारह काट कर ग्यारह किया हुआ था या नही?

रामबाबू---परचीसे क्या होता है? अठारह भी उन्होने ही लिखे थे, ग्यारह भी उन्होने ही कर दिये। होगा ज्यादा-से-ज्यादा छ· सातका।

ललिता--- इतना वडा वोर्ड लगा हुआ था "सेल" का

रामबाबू---वह बोर्ड भी तो वही लगाते है। और फिर उसको कोई लडाई पर तो जाना नही जो फुलबूट चाहिए।

[रंजीत मॉ-बापको बहस करते देख सहमा हुआ सा खडा रहता है]

ललिता--- क्यो, फुलबूट केवल लडाई पर जाने वालोके लिए होते है? तो फिर इतने छोटे वच्चेके लिए बनाये ही क्यो?

रामबाबू---बननेको तो दुनियामे बहुत-सी चीजे बनती है, पर हर एक वही खरीदता है जो उसके कामकी हो।

ललिता--- तो यह रजीतके कामका क्यो नही है?

रामबाबू---गरमियॉ आ रही है, फुलबूट

ललिता--- [बात काटते हुए] गरमियोके लिए ही तो है। छोटे वाले चटसे उतार फेकता है। अब न उतार सकेगा, न नगे पैर फिरेगा। फिर, देखो तो, मजबूत कितने है और दाम कितने

रामबाबू---इस हिसाबसे तो यदि तुम्हे कोई एक लाख रुपयेका हाथी पचहत्तर हजारमे दे तो तुम खरीद लो।

ललिता— ऐसी बुद्धू नही हूँ कि इतने रुपये वेकारमे खर्च कर डालूँ ।

रामवावू—और यह वेकार नही तो क्या

ललिता— वेकार कैसे, उसने पहने तो है ।

रामवावू—लेकिन काटते जो है ।

ललिता— तो बच्चूको दे दूँगी । उसके पास कोई जूता नही है ।

रामवावू—जमादारिनके लडकेको ? **[माथा पीट कर]** वलिहारी हूँ तुम्हारी समझ पर ! इसीलिए तो कई वार कह चुका हूँ कि जव कुछ चीज खरीदो तो दुकानदारसे वादा करा लो कि यदि पसन्द न आई तो वह वापस ले लेगा ।

ललिता— वापस ही करनी हो, तो खरीदनेकी क्या जरूरत है।

रामवावू—मेरा मतलव यह नही ।

ललिता— मै नही सुनती । जैसे मेरी अपनी कोई समझ ही नही।

रामवावू—मै यह तो नही कहता, ललिता । मै तो केवल यह कहता हूँ कि पैसे व्यर्थ नही लुटाने चाहिएँ ।

ललिता— **[रोनी-सी आवाजमें]** सारा दिन आपके घर तथा वालवच्चो की देखभाल करती इधरसे उधर भागती फिरती हूँ । कभी नौकरोको डाँटो, कभी वच्चोको नहलाओ धुलाओ तथा तैयार करके स्कल भेजो, कभी कमीजोमे वटन टाँको, फटी जुरावे रफू करो, कभी घण्टो दुकानोके सामने खडी रह कर राशन का कपडा लाओ । ऊपरमे आप कहते है कि पाईपाईका हिसाव लिखो । और कही जरा भूल हुई नही कि डॉट पिला दी । **[आँखोमें आँसू डवडवा आते है]** ।

[पत्नीकी आँखोमें आँसू देख रामवावू पसीज जाते है। उसे मनानेके लिए रंजीतको, जो अव तक ललचाई हुई नजरोसे मिठाई वाली मेजके पास खडा हे, अपने पास वुलाते है]

रामवावू—कहाँ काटता है जूता ?

रजीत— [पैर को हाथ लगा कर] यहाँ !

रामबाबू--- [मुसकरा कर] रसगुल्ला खानेसे ठीक हो जायगा ?
रंजीत--- [शरमा कर हँसता हुआ] हाँ ।

[रामबाबू रसगुल्ला देते हैं। रंजीत एकदम सारा-का-सारा मुँहमें रख लेता है]

रामबाबू---अच्छा, बेटा, वह कविता तो सुनाओ जो मास्टरजी कल तुम्हे सिखा रहे थे ।
रंजीत--- मेरी प्यारी अम्मा, मेरी अच्छी अम्मा ।

[रामबाबू बारी-बारी माँ बेटेकी ओर देखते हैं। ललिताके आँसू गायब हो जाते हैं]

रामबाबू---शाबाश ! तुम्हे तो बहुत अच्छी तरह याद है। यह लो इनाम । [एक रसगुल्ला और देते हैं] ।
रंजीत--- [मुँहमें रसगुल्ला रख कर] एक बार फिर सुनाऊँ ?
ललिता--- [उसकी बाँह पकड़के अपने पास खीचती हुई] नही, बेटा, बहुत लालच नही करते ।

[रंजीत पहले माँकी ओर देखता है, फिर बापकी ओर। फिर एक रसगुल्ला और उठाता है और झटसे मुँहमें रख कर भाग जाता है]

ललिता--- [स्नेह भरी दृष्टिसे बच्चेकी ओर देखती हुई] शैतान कही का ! [कैलाश आता है] ये बरतन उठा ले जाओ ।

[कैलाश बरतन उठाता है। रामबाबू अखबार देखने लगते हैं। ललिता खिड़की के बाहर देखती है। बरतन उठाकर ले जाते हुए अचानक कैलाश चौखटसे ठोकर खा जाता है। बरतन गिर कर टूट जाते हैं]

ललिता--- [क्रोधसे] गधा कहीका ! तुम्हे चलना भी नही आता !
रामबाबू--- [गुस्सेमें उबलते हुए] इस घरका कोई भी काम ठीक नही होता। किसीको किसी चीजकी रत्ती भर भी परवा नही। [दरवाजेके पास पहुँच कर] कुछ बचा भी कि नही ? और यह पारसल कैसे है ? [घूर कर ललिताकी ओर देखते हैं, जैसे जवाब माँग रहे हो]

ललिता— यही घरकी कुछ चीजे है ।
रामबाबू—किस तरह की ?
ललिता— यो ही कुछ खाना पकानेकी ।
रामबाबू—देखें तो । [पारसल उठा लाता हैं] ।
ललिता— [बडे विनीत भावसे] एक तो कुकर है । मै इन नौकरोसे बहुत तग आ गई हूँ । नित्य नई चीज तोड देते है, और फजूलखर्ची, सो अलग । मैंने तो ठान लिया है कि इन सबको छुट्टी दे दूँगी ।
रामबाबू—और रोटी ?
ललिता— मै बनाऊँगी ।
रामबाबू—[सन्देहसे] तुम ?
ललिता— हाँ । क्यो नही ? कुकरमे रोटी बनाना कोई कठिन थोडे ही है । सब चीजे अलग-अलग काटके उनमे मसाला डाल कर अलग-अलग डिब्बेमे भर देनी है । नीचे अगीठीमे कोयले सुलगा देने है । सारा खाना दो घण्टेमे तैयार हो जायगा । और केवल पाव भर कोयले लगेगे । जरा सोचो तो कितनी बचत है !

[रामबाबू बचतके विचारसे नम्र पड़ जाते है, पर सन्देह फिर भी नहीं जाता]

रामबाबू—तुम खाना बनाओगी ?
ललिता— और नही तो क्या ! तुम तो मुझे न मालूम क्यो इतना नालायक समझते हो ।
रामबाबू—पहले आइस बॉक्स जो लाई थी, वह कितने दिन बरता ?
ललिता— वह तो, खैर, और बात थी, उसमे झझट कितना था ! बरफ मँगाओ, पानीकी बोतले भरो—इसीलिए तो रैफ्रिजरेटर खरीद लिया था ।

रामबाबू—— [व्यंग्यसे] कैसी कमालकी वचत है ! अब झझटसे वचनेका क्या उपाय सोचा है ?

ललिता—— कुकरका झझट कैसा ? यही न कि डिब्बेमेंसे निकाल कर रोटी प्लेटमे रखो तो ठढी हो जायगी ?

रामबाबू——हूँ ।

ललिता—— उसकी भी व्यवस्था कर ली है मैंने । एक हाटकेस लाई हूँ ।

रामबाबू—— [चौक कर] ऐ ?

ललिता—— क्यो, चौक क्यो गये ? आपने क्या सोचा था कि मुझे रोटी वना कर उसे गरम रखनेका तरीका भी न आयगा ?

[रामबाबू हतबुद्धिसे देखते रहते है। ललिता कुकर खोलकर दिखाती है]

ललिता—— यह देखिए——ये डिब्बे, यह नीचे कोयले रखनेकी छलनी । सबसे नीचेके डिब्बेमे चने रखना चाहिए, क्योकि वह देरसे पकते है । सबसे ऊपर वाला डिब्बा चावल उवालनेके लिए है । जैसे ही खाना तैयार हुआ, उसे प्लेटोमे परसा और हाट केस [खोल कर दिखाती है] मे रख दिया । फिर जिस वक्त चाहिए, अलमारी खोलिए, गरमागरम खाना परसा-परसाया मिल जायगा ।

रामबाबू——यह है कितने का ? कुछ कीमतका भी तो अदाजा हो ।

ललिता—— कुकर तो है सत्तर रुपयेका और हाटकेस पचास रुपयेका ।

रामबाबू——एक चूल्हेके कामके लिए एक सौ बीस रुपये !

ललिता—— बहुत तो नही हैं ।

रामबाबू——तुम्हारे पास इतने रुपये आये कहाँसे ?

ललिता—— कहाँ है मेरे पास रुपये ?

रामबाबू——तो ये कहाँसे खरीदे ?

ललिता—— इनके पैसे तो हिसाबमें लिखवा दिये है ।

रामबाबू——कैसे हिसाबमे ?

ललिता— अभी तो फैसला किया था कि सब चीजे हिसावमे लिखवा दी जाएँ। फिर महीनेके बाद सारा बिल इकट्ठा ही दे दिया जायगा।

रामबाबू—तो एक दम वापस करो इन्हे। बुलाओ ड्राइवरको।

ललिता— क्यो, वापस क्यो ?

रामबाबू—नही, तुम खाना नही पकाओगी। मुझे नौकर रखना मजूर है।

ललिता— रखिए, मेरा क्या बिगडता है ? बरतन टूटेगे, फजूलखर्ची होगी।

रामबाबू—वही ठीक है। तुमने जितने पैसे बचत करनेके विचारमे ही खर्च कर दिये उतनेमे तो चार महीनेका खर्च निकलता।

ललिता— करने भी तो नही देते कुछ। अभी देखो, कुकर लौटानेको कहते हो। मै कहती हूँ हाटकेस लौटा दो, कुकर रख लो।

रामबाबू—कदापि नही। दोनो चीजे वापस करो। कहाँ है ड्राइवर ? बुलाओ उसको।

[कुसुम, जो बरतनोके टूटनेकी आवाज सुन कर अन्दर आई थी, मौका पा कर माँके कानोमें कुछ कहती है]

कुसुम— [चुपकेसे] माँ, यदि ये चीजे लौटानी है, तो मुझे वह साडी ले लेने दो। हाटकेस भी पचास रुपयेका है और साडी भी पचास की, कोई फालतू खर्च तो होगा नही।

ललिता— हाँ, मोटर तो जा रही है, तुम भी चली जाओ।

[कुसुम जल्दीसे दरवाजेकी ओर बढ़ती है]

रामबाबू—कहाँ जा रही हो ?

[कुसुम रुक कर माँके मुँहकी ओर देखती है]

ललिता— आप ही तो कह रहे है कि हाटकेस वापस करो।

रामबाबू—हाट केस ही नही, कुकर भी।

ललिता— कुकर भी ?

रामबाबू—हाँ। और ड्राइवर वापस कर आयगा। कुसुमके जानेकी कोई जरूरत नही।

ललिता— वह तो साडी लेने जा रही है।

रामबाबू—मेरे पास साडीके लिए फालतू पैसे नही है।

ललिता— आपसे माँगे कब है ?

रामबाबू—साडी लेनेमे पैसे खर्च होगे कि नही ?

ललिता— नही ।
रामबाबू— क्यो ?
ललिता— वह तो हाट केसके बदलेमे आयगी ।
रामबाबू— और हाट केसके पैसे ?
ललिता— उसके पैसे कैसे ? वह तो वापस भेज रहे हैं ।
रामबाबू— [भड़क कर] ललिता, इतनी छोटी सी बात तुम्हारी समझमे नही आती ?
ललिता— मेरी समझमे तो ठीक आगई । हाट केस लौटा दिया और साडी ले ली । वह भी पचास रुपयेका, यह भी पचास रुपयेकी—न लेना, न देना ।
रामबाबू— परन्तु वह दोनोमेसे एक चीजके पैसे तो अवश्य लेगा ।
ललिता— [एकदम] न, न ! कभी मत देना ! कही ऐसी भूल न कर बैठना !
रामबाबू— [सरको दोनो हाथोसे पकडते हुए] हे भगवन् ! [फिर जरा दम लेकर] जाओ, बाबा, जाओ । जो जीमे आये करो । जो चाहो खरीदो ।

[कुसुम डरती हुई खडी रहती है]

रामबाबू— जाओ, जाओ ! अब देखती क्या हो ? [कुसुम धीरे-धीरे वहाँसे चली जाती है] जाओ, मेरी जान छाडो। [फिर स्वयं गुस्सेसे भरे हुए उठते हैं और जमीन पर पैर पटकते हुए दरवाजा झटकेसे खोल बाहर हो जाते हैं । दरवाजा उतनी ही जोरसे बन्द हो जाता है] ।

[ललिता पहले तो हतबुद्धि-सी खडी रहती है । फिर सोफे पर बैठ कर अपने बटुएमेंसे एक छोटा-सा शीशा निकाल कानोके बुन्दोको वारबार देख कर खुशीसे मुसकराती हैं]

[परदा गिरता है]

जनता बेचारी

१५

जनता बेचारी

[मन्त्री महोदयका रेलवे मिनिस्टरके नाम पत्र ।

"प्रिय मिनिस्टरजी,

मेरा विचार है कि आगामी ११ तारीखको मैं अपने निर्वाचन-क्षेत्र तथा कुछ और स्थानोका दौरा करने निकलूँ । आपको कष्ट इसलिए दे रहा हूँ कि मैंने निश्चय किया है कि अपने सैलूनका प्रयोग न करके तीसरे दर्जेके डिब्बेमें ही जाऊँगा, क्योकि एक तो मुझे विश्वास है कि जनतासे सम्बन्ध बनाये रखनेका यही सबसे अच्छा और उचित उपाय है; दूसरी बात जो मुझे तीसरे दर्जेमें यात्रा करनेके लिए प्रेरित करती है, वह है अपने देशकी गरीबी । मैं समझता हूँ कि जहाँ दरिद्रताका इतना कोप है वहाँ हमारा प्रधान कर्त्तव्य यही होना चाहिए कि हम अपने उदाहरण-द्वारा जनता को सीधासादा जीवन व्यतीत करनेकी शिक्षा दें । अत. मैं आपको अपने पर्यटन कार्यक्रमकी एक प्रति भेज रहा हूँ । आशा है कि आप अपने रेलवे अधिकारियोसे कहकर मेरी यात्राकी उचित व्यवस्था करवा देंगे । इसके लिए मैं आपका आभारी रहूँगा ।

तारीख . १ अप्रैल, १९४९ ।"

जब यह पत्र रेलवे मिनिस्टरके पास पहुँचा वह अपने सचिव सहित किसी गम्भीर समस्याको सुलझानेमें व्यस्त थे । पत्रके ऊपर लगी 'आवश्यक'की मोहर देखकर जिज्ञासा-सी हुई । खोलकर पढनेलगे । जैसे-जैसे पढ़ते जाते माथेकी भृकुटियाँ चढती जाती । सचिवने, जो अपने मिनिस्टरके चेहरेके हर बल और त्योरीको अब खूब पहचानने लगे थे, पूछा : क्या कोई दुर्घटना हो गई ?]

मिनिस्टर—— लो, पढ कर देख लो ।

सचिव—— [पत्र पर जल्दीसे दृष्टि दौडाकर] तो क्या इसका प्रबन्ध करना होगा ?

मिनिस्टर—— अब कहते जो है तो कुछ करना ही पडेगा । किसीके दिमाग मे कोई धुन समा जाय तो फिर

[उसी शामको रेलवे मिनिस्टरके सचिवकी मत्री महोदयके सेक्रेटरीसे क्लबमें भेंट हुई ।]

रेलवेसचिव—हैलो ! कैसे हो !

सेक्रेटरी— मैं तो अच्छा हूँ । तुम सुनाओ ।

रेलवेसचिव—भई, तुम्हारा आजका पत्र तो बहुत रुचिकर था। मैं यह नही जानता था कि मिनिस्टरोमें भी पहली अप्रैलके मज़ाक चलते है ।

सेक्रेटरी— क्यो, क्या हुआ ?

रेलवेसचिव—तुम्हारे मन्त्री महोदयका कृपापत्र आया है आज। कहते है कि दौरा करने तीसरे दर्जेमें जायँगे, उसके लिए व्यवस्था करवा दीजिए ।

सेक्रेटरी— सच ? मुझे नही मालूम ।

रेलवेसचिव—पहली अप्रैलका लिखा हुआ पत्र है। मैंने तो समझा मजाक है ।

सेक्रेटरी— उनके अपने हस्ताक्षर है ?

रेलवेसचिव—बिलकुल ! क्या कहने है, भाई, इन लोगोके ! जैसे और मुसीबते काफी न थी ।

सेक्रेटरी— हूँ ! अब समझा ! बताऊँ यह कैसे हुआ होगा ? तीन चार दिन हुए हम एक पार्टीमें गये थे । वहाँ कुछ लोग बडे ज़ोरशोरसे आलोचना कर रहे थे कि लोग वोट लेनेके लिए तो बहुत प्रेमसे मिलने आते है, बढ-बढ कर बाते करते है, परन्तु मिनिस्टर बननेकी देर है कि उनके कोशसे जनताका शब्द ही लोप हो जाता है। शानदार बँगलोमे रहते है जहाँ सर्वसाधारणको प्रवेश करनेकी आज्ञा ही नही। जब बाहर निकलते है तो मोटरोमें घूमते है या सैलून व हवाई जहाज़मे—जनतासे कोसो दूर । मालूम होता है मन्त्रीजीके मनमे यह बात चुभ गई है ।

रेलवेसचिव—दोस्त, इस बलाको टालो किसी तरह ।

सेक्रेटरी— इसका टालना मुश्किल ही है। जो धुन सवार हुई है उसे पूरा करके ही रहेगे । तुम्हारे गले पडा है यह ढोल—बजाओ जैसे-तैसे ।

रेलवेसचिव—तो फिर प्रबन्ध करना ही पडेगा। [व्यंग्यसे] अच्छा, तुम उसी डिब्बेमे जाओगे या सर्वेण्ट्स मे ? [मुसकराता है]

सेक्रेटरी— पहले तो सर्वेण्ट्सका डिब्बा होता था। अब एक नये प्रकारके डिब्बे बनवाओ जिनका नाम हो पब्लिक सर्वेण्ट्स।

[दोनो खिलखिलाकर हँसते है]

[रेलवे सचिवका पत्र स्टेशन सुपरिण्टेण्डेण्टके नाम

"महोदय,

मैं इस पत्रके साथ मन्त्री महोदयके पहली अप्रैलके पत्रकी कापी आपको भेज रहा हूँ। इससे सारी स्थिति आपकी समझमें आ जायगी। कृपाकर के आप अपने स्टेशन पर ११ अप्रैलके लिए उचित प्रबन्ध करवा दीजिए और उस लाइन पर स्थित अन्य स्टेशनोको भी सूचित कर दीजिए। रेलवे पुलिसको विशेष तौर पर आदेश कर दें कि जहाँ-जहाँ गाडी ठहरती हो उन सब स्टेशनो पर मन्त्रीजीकी सुरक्षाकी व्यवस्था की जाय।

जैसे मैंने आपको टेलीफोन पर समझाया था तीसरे दर्जेके एक नयेसे डिब्बेमें पखे फिट करवा दें—पुराने किस्मके डिब्बेमें नही।

छ तारीख तक सारा प्रबन्ध ठीक हो जाना चाहिए। सब तैयारी हो जाय तो हमें सूचित कीजिए।"

सात अप्रैल संध्या समय प्लेटफार्म पर दिल्लीके असिस्टेंट स्टेशन मास्टर और एक टिकट कलेक्टरको यह बातें करते सुना गया :]

टिकट कले—आज आप इस समय यहाँ कैसे ? आपकी ड्यूटी तो पाँच बजे समाप्त हो जाती है।

अ स्टे मा—हाँ, नामको तो पाँच ही बजे समाप्त हो जाती है, परन्तु वह हमारी सरकारके मालिक जो आये दिन दुमदार तारे छोडते रहते हैं।

टिकट कले—यह नई बला क्या है ?

अ स्टे मा—मन्त्री महोदय कहते है कि तीसरे दर्जेमे जायँगे, सैलूनमे नही।

टिकट कले—तो उसमे कठिनाई क्या है ? तीसरे हीमे भेज दीजिए।

अ स्टे मा—कठिनाई ? पहले तो एक अच्छा नया सा तीसरे दर्जेका डिब्बा ढूँढा गया है। उसमे पखे लगा रहे है। नये सिरेसे

पेट पालिश हो रहा है। अच्छेभले पाँच सैलून यार्डमे खडे हैं—कीलकाँटेसे लैस। आज्ञा होती तो दस मिनिटके नोटिस पर भी लगा सकते थे। किन्तु यह तो बेकार काम बढाते हैं। पहले ही काम इतना है कि मरे जाते हैं और ऊपरसे यह

टिकट कले—कामका तो नाम ही न लो—दिन पर दिन बढता ही चला जाता है।

अ स्टे मा—[धीरेसे] एक बात बताऊँ ?

टिकट कले—क्या है ?

अ स्टे मा—किसीसे कहना नही।

टिकट कले—यह आप कैसी बात करते है !

अ स्टे मा—सुरक्षाकी व्यवस्थाके सम्बन्धमे पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टने स्टेशन सुपरिण्टेण्डेण्टसे साफ साफ कह दिया कि या तो साथ वाले डिब्बेमे वरदी पहने पुलिसमैन जायँगे या आसपासके तीन चार डिब्बोमे साधारण वस्त्र पहने हुए सी आई डी के आदमी। नही तो वह सुरक्षाका उत्तरदायित्व लेनेको तैयार नही। फैसला यही हुआ कि सी आई डी वाले ही जायँ।

टिकट कले—[हँसता है] क्या कहने है अपने लोकप्रिय मन्त्रियोके !

अ स्टे मा—ऊपरसे तो सब तीसरे दर्जेके यात्री ही दिखाई देगे—वही गठरियाँ, लाठियाँ, हुक्के, और वैसा ही शोर मचायँगे—केवल जरा आदरके साथ।

टिकट कले—उन्हे टिकट यादसे दिलवा देना, क्योकि यदि मैंने किसीको बिना टिकटके पाया तो छोडनेका नही।

[अगले दिन टिकट कलेक्टरकी पत्नी अपनी पडोसिनसे बोली]

टि क की पत्नी—बहन, एक बात बताऊँ ? किसीसे कहना नही।

पड़ोसिन— नही, कभी नही। पहले कभी तुम्हारी बात कही किसीसे ?

टि क की पत्नी—पक्की बात ?

पडोसिन— पक्की—किन्तु कुछ बताओ भी तो।

टि क की पत्नी—[धीरेसे] अपनी सरकारके एक मन्त्री दौरे पर जा रहे है। तिलकके पिताजीने बताया है कि वह तीसरे दर्जेमे बैठ कर जायँगे।

पडोसिन— ऐसी भी क्या मुसीबत पडी है उन्हे ?

टिक की पत्नी—यह दिखानेके लिए कि वह कितने भी वडे हो जायँ, दिल उनका जनताके साथ है। परन्तु एक बात और भी है—न तो जनता उनके डिब्बेमे रहेगी और भई, किसीसे कहना मत न ही साथ वाले डिब्बोमे। वहाँ तो उनकी सुरक्षाके लिए सी आई डी के आदमी होगे।

पडोसिन— [हँसती है] और मन्त्रीजी समझेगे कि वह सर्वसाधारणके साथ यात्रा कर रहे है। यदि उन्हे पता चल जाय कि पुलिसवाले यह सब कुछ कर रहे है तो क्या हो ?

टि०क०की पत्नी—पुलिस कोई ऐसी अनाडी तो नही। यह पुलिस और रेलवे कर्मचारी और दूसरे सरकारी अफसर ऐसा पक्का प्रबन्ध करेगे कि मन्त्री तो क्या, किसी औरको भी कोई सन्देह न होगा।

[आठ अप्रैलको भेजा गया डायरेक्टर पब्लिसिटीका असिस्टेण्ट डायरेक्टर पब्लिसिटीके नाम नोट

"मन्त्री महोदयके पर्यटनके कार्यक्रमके सिलसिलेमें जो आदेश पहले दिये गये है उनके अतिरिक्त एक फोटोग्राफर और एक प्रेस रिपोर्टरको साथ भेजनेका भी प्रबन्ध किया जाय। रिपोर्टरको चाहिए कि प्रत्येक बडे स्टेशन से टेलीफोन व तार द्वारा सारा वृत्तान्त यहाँ भेजे और फोटोग्राफरको यह समझा दिया जाय कि तसवीरें ऐसी हो जिनमें मन्त्री महोदय तीसरे दर्जेके अन्य यात्रियोसे बातचीत तथा मेलमिलाप बढाते दिखाई दें, विशेषकर छोटे स्टेशनो पर इस बातको खास तौरसे ध्यानमें रखा जाये।"

दिल्लीके रेलवे स्टेशन पर ११ अप्रैलकी सुबहके कोई आठ वजेके लगभग।

प्लैटफार्म साफसुथरा है। छिडकाव किया गया है। तीसरे दर्जेके एक डिब्बेके सामने एक पुलिसमैन खडा है। एक साधारण यात्री, बेचारा भूलाभटका, अनजान, अपना बोरिया-बँधना उठाये, हाथमें हुक्का पकडे तीसरे दर्जेके डिब्बेके सामनेसे गुजरता है, और उसे खाली पड़ा देख लपक कर अन्दर जानेको बढता है। किन्तु पुलिसमैन उसे दरवाजे पर ही रोक देता है।

पुलिसमैन— [कडक कर] देखते नही, इस डिब्बेमे तुम नही वैठ सकते। चलो, चलो आगे! यह तुम्हारे लिए नही है। चलो!

यात्री— मेरे लिए क्यो नही, भाई ? मेरे पास भी टिकट है। [जेबमें हाथ डालता है।]

पुलिसमैन— तुमको कहा—जाओ ! क्या धक्के खाकर ही हिलोगे ? जाओ !

यात्री— कुछ पता भी तो चले कि आखिर क्यो ?

पुलिसमैन— इसमें मिनिस्टर साहब जा रहे है।

यात्री— क्यो ? उनकी अपनी सफेद गाडी जो है—उसमे क्यो नही जाते ? क्या वह पचर हो गई है ?

पुलिसमैन— तेरे साथ बहस करनेको समय नही है मेरे पास। चलो, आगे बढो ! मान जाओ मेरी बात और चलते बनो ! कही बैठनेको जगह न मिले तो मुझे बताना,मैं दिलवा दूँगा।

यात्री— [व्यग्यसे] इसमें बैठने नही देते जो खाली पडा है और दूसरे डिब्बेमें जगह दिलवा देनेको कहते हो जहाँ इतनी भीड है !

पुलिसमैन— तुमको भीडसे क्या मतलब ? तुम्हे तो बैठनेको जगह चाहिए।

यात्री— सन्तरीजी महाराज, हम तो गँवार लोग ठहरे, हमे आपकी बातोकी बारीकियाँ नही समझमे आती। पर हमारी मोटी अक्ल तो यही कहती है कि मन्त्रीजी अपनी सफेद गाडीमे जाते तो अच्छा था। वह भी आरामसे जाते और इस डिब्बे मे पच्चीस तीस आदमियोको बैठनेको जगह मिलती। किन्तु आप तो बडे लोग ठहरे—हमारा और आपका क्या मुकाबला ! आप सरकार हुए, आपसे कैसे टक्कर ले ! आप ही की लाठी आप ही की भैंस। [गठरी उठाकर हुक्का हाथमें थामते हुए] चल रे, मना !

[धीरे-धीरे चल देता है। पुलिसमैन अपनी ड्यूटी पर अटल खडा रहता है।]

●